सुवर्ण नामावली



स्तम्भ

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के प्रधान मन्त्री मुनि श्री १००८ श्री आनन्द ऋषिजी महाराज

संरक्षक—श्री नेमीचन्दजी सरदारमलजी पुंगलिया, इतवारी नागपुर

आजीवन सदस्य (LIFE MEMBERS)-

१ श्री हीराचन्दजी नानुलालजी पारख, सदर बाजार, नागपुर।

२ श्री माणकचन्दजी सेरमलजी सुराणा, सदर बाजार, नागपुर।

३ श्री केशरीमलजी रिखबचन्दजी, धामक।

आश्रयदाता—

१ श्री नन्दरामजी चाँदमलजी बोहरा, पीपला।

२ ,, लालचन्दजी रतनचन्दजी भटेवड़ा, राहू।

३ ,, फतेहराजजी धनराजजी संघवी, सिंधी।

४ ,, हीरालालजी ताराचन्दजी गुगलिया, बाबुलगांव।

५ ,, सकल जैन संघ, बनोसा (दर्यापुर)।

६ ,, जैन संघ, चाँदूर बाजार, जि० उमरावती।

७ ,, हीराचन्दजी फूलचन्दजी पारख सदर बाजार, नागपुर।

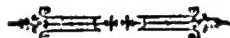
८ ,, ओंकारलालजी मिश्रीलालजी बाफणा, मन्दसौर।

॥ श्री अमृत काव्य संग्रह ॥



रचयिता:—

शास्त्रविशारद प्रौढ कवि पं० मुनि श्री अमीऋषिजी म.



सम्पादक:—

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के प्रधान मन्त्री

पण्डित रत्न मुनिश्री आनन्द ऋषिजी म. सा.

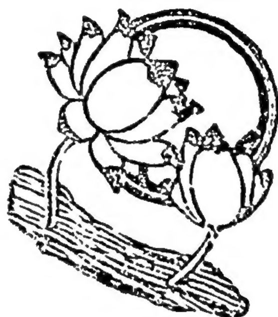
प्रथमावृत्ति २०००

अमूल्य

[redacted]

वीर सं. २४८२
ई. सन् १९५६
वि. सं. २०१२

प्रकाशकः—
श्री रत्न जैन पुस्तकालय, पाथर्डी (अहमदनगर)



मुद्रकः—
श्री जैनोदय प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम.

धन्यवाद

प्रिय वाचकवृन्द !

आपके कर कमलों में श्रीरत्न जैन ग्रन्थमाला का "अमृत काव्य संग्रह" नामक पुष्प समर्पण करते हुए हमें प्रमोद होता है ।

इस पुस्तक में बोधप्रद, वैराग्यवर्धक, शान्तिदायक एवं चित्ताकर्षक काव्यों का संग्रह किया गया है अतः काव्य रसिक तथा साहित्य प्रेमी सज्जन इस काव्य से लाभ उठावेंगे ऐसी आशा है ।

इस पुस्तक की दो हजार प्रतियों के प्रकाशन में श्रमणसंघीय प्रधान मन्त्री पं. रत्न श्री १००८ श्रीआनन्दऋषिजी म० के संसार पक्षीय निम्न लिखित गुगलिया परिवार ने अपनी उदार भावना के फलस्वरूप सहायता प्रदान की है:—

(१) श्रीमान् वख्तावरमलजी लखमीचन्दजी गुगलिया राणावास
(२) श्रीमान् सेंसमलजी मिश्रीमलजी गुगलिया, घटावर
(३) श्रीमान् सेंसमलजी गणेशमलजी गुगलिया, घटावर
(४) श्रीमान् संसमलजी हस्तीमलजी गुगलिया, घटावर

एतदर्थ उपर्युक्त सभी दानी महाशय धन्यवाद के पात्र हैं ।

इस पुस्तक के प्रूफ संशोधनादि कार्य में श्री पं. बसन्तीलालजी नलवाया ने अपने परिश्रम का सहयोग दिया अतः वे भी धन्यवाद के पात्र हैं ।

मन्त्री, श्री रत्न जैन पुस्तकालय, पाथर्डी

सुप्रसिद्ध कविवर्य पं. रत्न मुनि श्रीअमीऋषिजी महाराज का

जीवन परिचय

आपके पिता श्रीभैरूलालजी दलोट (मालवा के निवासी थे। आपकी धर्मपत्नी श्रीप्यारांबाई की कूंख से वि सं. १९३० में आपका शुभ जन्म हुआ। तेरह वर्ष की उम्र में पं. र. श्रीसुखाऋषिजी म० से, मार्गशीर्ष कृष्णा ३, सं० १९४३ में आपने दीक्षा अंगीकार की। मगरदा (भोपाल) में दीक्षा की विधि सम्पन्न हुई। आपकी बुद्धि बड़ी ही तीक्ष्ण थी और धारणा शक्ति भी गज़ब की थी। इन दोनों अनुकूल निमित्तों के साथ अध्येता की रुचि और श्रम का सम्मिश्रण हो जाय तो विद्या का विकास आश्चर्यजनक हो जाता है। सौभाग्य से आपको यह सब चीजें प्राप्त थीं। अतएव आप जैनागमों में तो प्रवीण हुए ही, साथ ही प्रत्येक प्रचलित मत के मन्तव्यों के भी अच्छे ज्ञाता हो गए। इतिहास की ओर आपकी गहरी रुचि थी। शास्त्रीय एवं दार्शनिक चर्चा में भी आप अत्यन्त विचक्षण थे। इस विषय में आपने बड़ी ख्याति प्राप्त की थी। कई स्थानों पर मूर्त्तिपूजक सन्तों के साथ शास्त्रार्थ करके आपने विजय प्राप्त की थी। एक वार दिगम्बरों से शास्त्रार्थ करने के लिए आप वागड़ प्रान्त में पधारे थे। वहाँ आहार-पानी का सुयोग न मिलने के कारण आपको घोर परीषह सहन करने पड़े। लगातार आठ आठ दिन तक छाछ में आटा घोल कर पिया और उसी के आधार पर रहे। वही आपका भोजन और वही पानी था। इस परिस्थिति में आप शान्त, संतुष्ट और प्रसन्न थे। ऐसे विकट और प्रतिकूल प्रसंगों पर आपका धैर्य देखने योग्य होता था। कितना और कैसा भी संकट क्यों न आ जाय, आप

कभी पल भर के लिए भी विचलित न होते और अपने निश्चित लक्ष्य की ओर अग्रसर ही होते जाते थे। आपने जैन धर्म के जिस स्वरूप को वास्तविक रूपसे समझा था, उसी को समझाना और जन साधारण के जीवन को उच्च स्तर पर ले जाना और इसी मार्ग से अपनी आत्मा का कल्याण करना आपका लक्ष्य था। यही लक्ष्य सदा आपके समक्ष रहता था।

कई लोगों की धारणा है कि दार्शनिक कवि और कवि दार्शनिक नहीं हो सकता। कवि कमनीय कल्पना का उपासक होता है और दार्शनिक वास्तविकता का मीमांसक। दोनों की दो विरोधी दिशाएँ हैं। मगर पं० मुनिश्री अमीऋषिजी महाराज ने उक्त धारणा को अपने ही उदाहरण से भ्रान्त सिद्ध कर दिया था। मानो उन्होंने अपने जीवन से ही अनेकान्त का प्रतिपादन और समर्थन कर दिया हो! वे उच्च कोटि के कवि भी थे और श्रेष्ठ दार्शनिक भी थे। पं० मुनिश्री द्वारा रचित निम्नलिखित ग्रन्थ आज भी सन्तों और सतियों के पास उपलब्ध हैं:—

(१) स्थानक निर्णय
(२) मुखवस्त्रिका निर्णय
(३) मुखवस्त्रिका चर्चा
(४) श्री महावीरप्रभु के छव्वीस भव
(५) श्री प्रद्युम्न चरित
(६) श्री पार्श्वनाथ चरित
(७) श्री सीता चरित
(८) सम्यक्त्व महिमा
(९) सम्यक्त्व निर्णय
(१०) श्री भावनासार
(११) प्रश्नोत्तरमाला
(१२) समाज स्थिति दिग्दर्शन
(१३) कषाय कुटुम्बछहढालिया
(१४) जिनसुन्दरी चरित
(१५) श्रीमती सती चरित
(१६) अभयकुमारजी की नवरंगी लावणी
(१७) भरत–वाहुवलीचौढालिया
(१८) अयवंता कुमार मुनि–छह ढालिया

(१९) विविध बावनी
(२०) शिक्षा बावनी
(२१) सुबोध शतक
(२२) मुनिराजों की ८४ उपमाएँ
(२३) अम्बड संन्यासी चौढालिया
(२४) कीर्त्तिध्वज राजा चौढालिया
(२५) सत्य घोष चरित
(२६) अरणक चरित
(२७) मेघरथ राजा का चरित
(२८) धारदेव चरित

साहित्यिक दृष्टि से आपने खड्गबंध, कपाटबंध, कदलीबंध, मेरुबंध, कमलबंध, चमरबंध, एकाक्षर त्रिपदीबंध, चटाईबंध, गोमूत्रिकाबंध, छत्रबंध, वृत्ताकारबंध, धनुर्बंध, नागपाशबंध, कटारबंध, चौपटबंध, चौकीबंध, स्वस्तिकबंध, आदि-आदि बहुत-से चित्रकाव्यों की रचना की है। इनमें से कुछ काव्य श्रीअमोल जैन ज्ञानालय, धूलिया से प्रकाशित भी हो चुके हैं। आपने काव्यमय 'जयकुंजर' की बड़ी ही सुन्दर कृति रची है, जो अवलोकनीय है और आपकी कवित्व प्रतिभा का परिचय देती है।

आपश्री का उदयपुर, सीतामऊ, उन्हेल आदि ऐसे क्षेत्रों में भी पदार्पण हुआ था, जहाँ कवि-मण्डली थी। उन कवियों ने आपको जो समस्याएँ दीं, उनकी आपने अत्यन्त भावपूर्ण, हृदयस्पर्शी, अनुभूतिमय और साथ ही शिक्षाप्रद पूर्त्ति की है। इन सब काव्यों को देख कर निस्संकोच कहा जा सकता है कि आप श्रेष्ठ प्रतिभाशाली कवि थे। सन्त-साहित्य में आपकी रचनाएँ महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। आपकी कविता की भाषा सरल, सुबोध और प्रसाद गुण युक्त है। आपने छन्दः शास्त्र पर भी बराबर ध्यान रक्खा है और अपनी रचनाओं को छन्दोभंग के दोष से पूरी तरह बचाया है। इन सब दृष्टियों से पंडित मुनिश्री अमीऋषिजी महाराज स्थानकवासी परम्परा के सर्वोत्तम कवि हैं। आपकी तुलना में ठहरने योग्य कवि इस परम्परा में विरले ही मिल सकते हैं।

आपश्री को सुलेखन कला के प्रति भी बड़ा अनुराग था। आपके अक्षर अत्यन्त सुन्दर थे। आपने शास्त्रीय लिपि में, अपने स्वाध्याय के लिए स्वयं ही श्रीबृहत्कल्प, प्रश्नव्याकरण, सूत्रकृतांग, अनुयोग द्वार आ[illegible] लिखे हैं। [illegible]

आपश्री को सुलेखन कला के प्रति भी बड़ा अनुराग था। आपके अक्षर अत्यन्त सुन्दर थे। आपने शास्त्रीय लिपि में, अपने स्वाध्याय के लिए स्वयं ही श्रीवृहत्कल्प, प्रश्नव्याकरण, सूत्रकृतांग, अनुयोग द्वार आदि शास्त्र लिखे हैं। तेरह आगम आपको कंठस्थ याद थे।

सं० १९४९ में गुरुवर्य श्रीसुखाऋषिजी म० ने बम्बई में चातुर्मास किया था, तब आप भी साथ थे। सूरत-सम्मिलन के अवसर पर आप मौजूद थे।

आपश्री के शिष्य श्रीओंकारऋषिजी तथा श्रीदयाऋषिजी म. संसारपक्ष के बन्धु थे। श्रीदया-ऋषिजी म. की प्रज्ञा अत्यन्त निर्मल थी। कोई भी श्लोक या गाथा दो तीन बार देख लेने से ही उन्हें कण्ठस्थ हो जाती थी। उनमें भी कवित्व शक्ति का अच्छा विकास हुआ था।

मालवा, मेवाड़, मेरवाड़ा, मारवाड़, गुजरात, काठियावाड़, देहली तथा महाराष्ट्र आदि प्रांतों को आपने विहार करके पावन किया और जिनशासन का उद्योत किया।

सं० १९८२ में दक्षिण महाराष्ट्र में पदार्पण करके आपने ऋषि-सम्प्रदाय के संगठन के लिए बहुत प्रयत्न किया। अहमदनगर में विराजित सन्तों और सतियों ने आपको ही पूज्य पदवी प्रदान करने का विचार किया, किन्तु उस समय काललब्धि न आने से प्रयत्न सफल न हो सका। आप दक्षिण से मालवा की ओर पधारे और अनेक क्षेत्रों में विचरते तथा धर्म प्रभावना करते रहे। ४५ वर्ष तक संयम पर्याय में व्यतीत करके, मिती वैशाख शुक्ला १४, सं० १९८८ को सुजालपुर (मालवा) में स्वर्गवासी हो गए। उस समय आपकी आयु ५८ वर्ष की थी।

पं० रत्न मुनिश्री अमीऋषिजी म० एक वरिष्ठ विभूति थे। आपने अपने जीवन में चतुर्विध

श्रीसंघ का और संसार का महान् उपकार किया। जिनशासन की शोभा बढ़ाई। आपके सदृश शास्त्र-वेत्ता, सुलेखक, सुकवि और धर्मोपदेशक उत्पन्न होकर जगत् के जीवों का कल्याण करें, यही मनोकामना है।

लेखकः—
श्री वर्द्ध० स्था० जैन श्रमण संघ के पं. रत्न प्रधान मन्त्री
श्री आनन्दऋषिजी म० के शिष्य पं. मुनिश्री मोतीऋषिजी म०

श्री अमृत काव्य संग्रह पर
मरुधर केसरी मन्त्री मुनि श्रीमिश्रीमलजी म० का
अभिप्राय

पावनता चित में उमगे मन मानस में थिरता पनपावत।
अघ ढोहन चीज अनोखी बनी सबही जड़ भाव को शीघ्र जरावत॥
काज बखान सुजानन के सुनते सुनते कबहु न अघावत।
पीयूष पान करो "मिसरी" भान अध्यातम को जु प्रकासत॥

—जालिया (ब्यावर)

ता० २-१-५६]

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

अमृत काव्य संग्रह

शिक्षा-बावनी



॥ दोहा ॥ प्रणमूँ श्री चौवीस जिन, गौतमादि गुणधार ॥
सरस्वती माय मया करी, कर बुद्धि विस्तार । १ ॥
असिआउसा नमूँ, पंच परम पद सार ॥
सद्गुरु उपकारी महा, ज्ञान दान दातार ॥ २ ॥
स्वपर चित्त हित कारणे, रचूँ बावनी सार ॥
श्रोता श्रोतेंद्रिय भणी, सुखद महा हितकार ॥ ३ ॥

॥ घनाक्षरी छन्द ॥

।ॐ.। ॐ नमो सिद्ध नाम लेत काम होय सिद्ध, ऋद्धि वृद्धि २ दाता, दुरित निवारणं।
नरेंद्र सुरेंद्र वृन्द वंदत सकल जग, तिहुँ लोक स्वामी धामो, मोक्ष सुखकारणं ॥
अजर अमर नित्य, अलख अगम प्रभु, करी अरि दूर सो, अनंत रिद्ध धारणं।
अमीरिख कहे वंदो, प्राणी चित्त ठाम आणी, पावे सुखसंपत्ति, अशुभ अघवारणं ॥

।न.। नमो सत्य गुरु उर वसे हे सुमतपूर, देइ ज्ञानदान सब कुमति मिटाई है।
भ्रमत अनंत काल, अंधके समान ज्ञान अंजन को आंज, शिव राह को बताई है ॥
गुरुके समान उपकारी नहीं लोक मांही, सेवो इम जाणी प्राणी, सदा सुखदाई है।
अमीरिख कहे निर्यामक समान गुरु, तारे भव्य जीव दया नाव में बैठाई है ॥२॥

।म.। मनमें विचार नर, आउखो अलप तामें,करे अति आश न भरोसा पल दमका।
पलमें पलट जाय, इंदर धनुष्य जिम, सध्या का फुलाना कुमलाना ज्यों कुसुमका ॥
कोमल शरीर सुख ऐशमें लोभाय रह्यो, निकसत दम ढेर होयगा भसम का।
जम डर आनके सयाने अमीरिख कहे, धार ले शरण चित्त, प्रभु के कदम का ॥३

।सि.। सीख नहीं दीजे हठ ग्राही मूढ प्राणिनकू, सार नहीं होवे जैसे पानीके मथाएसे
खरको चंदन लेप मुकुट भूषण तन, होवत निकाम जैसे ओंस बिंदु वाये से।
मर्कटके गले हार सार शोभादार बहु, तोरीके देवत फेंक फंद जानी काये से ॥
अमीरिख कहे नहीं माने उपकार मन, होवत है वैरी बात हितकी बताये से ॥४॥

|द्वं.| धन्य जगमांही सुख दुःख आया धारे धीर, जाणे परपीर मन टारे जग फंदको ।
करत विचारी काम बोलत मधुर वेण, क्षमा दया चित्त धारे, वारे कर्म बंधको ॥
मन तन वचन सु करे उपकार नित्य, देव गुरु आण गहे, रोकत स्वच्छंद को ।
अमीरिख कहे बलिहारी वांकी वारवार, धन्य वांकी मातको सो जाए ऐसे नंदको ॥५

|अ.| अगर अगन पर धरत सुगंध होत, तपावत वारवार हेमद्युति दरसे ।
दूध को तपावे स्वाद, काटत चंदन वास, तिल तेल इक्षु को पीलत रस तरसे ॥
देवे पय सुरभि चरण को बंधन किये, देत फल अंब जो ये मारत पत्थर से ।
अमोरिख कहे तैसे संत कुलवंत मित, गिणे नहीं पीड उपकार तस कर से । ६॥

|आ.| आउखो अथिर जैसे, विद्युत उजाससम, राखे आस मोटी पड़े खबर न पलकी
तामे कूड कपट झपट कर ठगे लोक, राग द्वेष वश होय, करे बात छलकी ॥
तृष्णा की लाय लाग रही घट माहे अती, पातक की पोट सिर कैसे होय हलकी ।
अमोरिख कहे प्रोणी धारिये संतोष मन, करमों के बीज वाल्या मौज है अचलकी ॥

|इ.| इण मोह जालमाहो वोत्यो है अनंतकाल नाना जोनिमाही कष्ट सह्या है अपाररे
क्रोध मान माया लोभ रागद्वेष वश जीव, पायो दुःख अनंत न छोड़त गंवाररे ॥
आपाको विसार पर गुणमें मगन होय, बांधत करम नहीं करत विचार रे ।
अमीरिख कहे छोड़ सकल जंजाल भव्य, धार गुरु सीख वेगा जाग हो हुश्याररे ॥

|ई.| इक्षुरससे अधिक मीठो जिनवाणी ताकू मान भव्यप्राणी भवोदधि पार करणी
मोह अंधकार को मिटावन दिनंद सम, पातक मिथ्यात भव संशय को हरणी ॥
वचन विराध जगजाल में भम्या अनंत, आराधक भव्य केई मेटी भव फिरणी।
अमीरिख कहे जिनवाणी को आधार आज, सारे सब काज जैन आगममें वरणी ॥

|उ.| उद्यम करत नित्य लेवत है नींद कम, करत है अल्पाहार बोले कम वेण है।
पंडित पुरुष संग, करत विनय अति, वेयावच्च कर उपजावे सुख चैन है ॥
लोक को संठाण मन माहे तो विचारे सदा, बारंवार फेरत पूछत होय सेन है।
अमीरिख कहे चाले गुरु के मनोऽनुकूल, होय ज्ञानवृद्धि एती धारे हित केण है ॥

|ऊ.| उत्तमको संग, नित्य कीजे मन रंग, जले कुमत पतंग, ज्योति सुमति प्रकाशती।
परदेशी राय महाहिंसक नास्तिकमति, केशी गुरु संग किया, मिथ्यात की नासती ॥
अर्जुनमाली राय संजेतो संजम धारयो, श्रेणिक अनाथी संग, समकित आसती।
अमीरिख कहे प्राणी तिरया है अनंत इम, जाणी संग कीजे जासुं, मौज रहे शासती

|ऋ.| रीति दूर छोड़ भोल। धारत अनीति मन, धरमको छोड़के पातक धारे मनमें।
चिंतामणि छोड़कर, काच को संचय करे, कल्पतरु काट वावे बंबूल अंगन में ॥
धेनु छोड़ अजा ग्रहे, अमृत से धोवे पग, सुखसिज्जा छोड़कर सोवत अगन में।
अमीरिख कहे भरे कंचन के थाल भूल, दोनुं भव हार मूढ, धिक् तीनुं पन में ॥१२

।ऋ.। ऋद्धि नहीं पावे कोई सुकृत कमाई विन, छोड़ घर देश परदेश जाय दौड़े है।
नाना भांत करत व्यापार जीव घातनके, कीमिया के काज नेह कुगुरु से जोड़े है॥
चोरी करी सहे दंड, पड़त है कैद माही, सहे अति मार नहीं ममता को मोड़े है।
अमीरिख कहे धन अति काज देखे दुःख काल आये घेरयो तोउ तृष्णा न तोड़े है॥

लृ.। लियो नहीं सुजस, न गायो है जिनेशमुख छायो घट पाप नेड़ो आयो न धरमके
लूट्या है जीवां का प्राण, दया नहीं लायो मन, लुंकाइ थापण वेण बोल्यो है मरमके
कूडा तोला मापा कर ठग्या है जगत लोक, काम में विकल नहीं लायो है सरमके।
करके ममत मूढ सिधायो नरक माही, अमीरिख कहे वश होयगा करमके ॥१४॥

।लृ.। लोला माहे लीन भयो, लीनो न धरम धन दीनो परदुःख मन पोर न विचारी है
आश्रव प्रमाद मद कषाय विषय माही, भीनो रहे रातदिन, पाप अधिकारी है॥
चिंत्या नहीं देव अरिहंत निगरंथ गुरु, करुणा धरम चित्त, माही नहीं धारी है।
अमीरिख कहे यों, चल्यो हारके मनुष्य भव, चारु गति मांही मरमर हुवो ख्वारी है

।ए.। एक वार अशुभ करम वश नरकमें, पायो है अनेक कष्ट, सही जममार है।
एक वार तिर्यंच रु थावर निगोद माही, जनम मरण नहीं, वेदना अपार है॥
शुभ करमों के वश देवगति पायो जीव, विलस्या अनूप सुख, आनंद उदार है।
भटकत भटकत, पायो है मनुष्य भव, अमीरिख कहे सद्गुरु सीख धार है ॥१६

卐卐卐卐 रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म० 卐卐卐卐

|ऐ.| ऐसा अभिमानी एक माने नहीं हित वेण, होयके निडर नित पातक करत है।
करे हे प्रपंच भूठ वेण भूठ भाखत है, जीव घात कर पाप उपर लेवत है ॥
परतिय भोग माही राचत है निश दिन, धन माल पाय मन करत ममत है।
अमीरिख कहे बांध पातक की पोट सिर, सिधावे नरक कुंभी पाक में पचत है ॥

|ओ.| ओगुणको छोड भवि गुण को ग्रहण कर, जैसे हंस नीर तजी पीवत है दूधको
धेनुको ज्यों तृणाहार, आण मत मनमाहीं, धारे चित्तमाहीं तस पय गुण शुद्धको ॥
वंबुलको देख नहीं कांटेको ग्रहण कर, शीतल गंभीर छाय, धारो अविरुद्ध को।
अमीरिख कहे ऐसे ओगुण को छांडे दूर, गुणको धारत मन धन्य वाको बुद्धको ॥

|औ.| औपध करी ले सोही,जांसे भवरोग मिटे ऐसा कर भोजन मिटावे भूख प्यासको
ऐसा धन ढूंढ नहीं खूटत खरच किये, कबहू न पड़े ऐसा बांध ले आवास को ॥
सोही कर सज्जन बतावे शुद्ध मारगको, साचो सगो सोही जे तोडावे मोह फासको।
अमीरिख कहे सोही शरण मरत नहीं, ऐसो धर्मधार जासे, पोंचे शिव वास को ॥

अं.| अंग रंग चंग देख करे क्यों गुमान मन, पतंग को रंग लगे उड़ता न वार है।
डाभ की अनीपै जैसे रही है उदक कणो, कागद की नाव बनी, होय कैसे पार है ॥
चक्री चोथो सनतकुमार अभिमान कियो, देखत विनाश भयो, ऐसो यो असार है।
अमीरिख कहे भवि, तप जप व्रत सार, सुकृतको धार जांसु सुख सिरेकार है ॥२०

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

|अः.| अक्षर लिखित शुभाशुभ निज संचित को, ताही अनुसार जीव, सुखदुख पावे है
कोई नर सुखी कोई दुःखी कोई निर्धन, कोई नर धनवंत आदर बुलावे है ॥
कोई हाथी घोड़ा चढ चालत आनंद माही, कोई पुन हित ताके चाकर कहावे है।
कोई रंग महलमें पड़े कोई बंधन में, अमीरिख एते खेल करम करावे है ॥२१॥

|क.| करत जगत धंध अंधके समान सुख, ऐशमें भुलायो मन त्रास नहीं कालकी।
उंडी उंडी नींव देइ, चुणावे आवास जाली, झरोखा अटारो चित्र शोभा सुरसालकी
मात तात नारी सुत, मोहमें बंधाय रह्यो, तृष्णा अधिक चित्त करे धनमाल की।
अमीरिख कहे घट रोके जब मौत आय, जावे सब छोड़ बांध पोट पाप जालकी॥

|ख.| खर ज्यों जनम अण लेखे ते गमायो जीव, कियो नहीं सुकृत मनुष्य देह पायरे
गुणि जन संगत न संत को नमायो शीस, प्रभु नाम लियो नहीं निंदा मन्न भायरे ॥
धरम की सीख नहीं भावत करम वश नींद में गमाई रात, दिन काम मायरे।
अमीरिख कहे भारे भारो नव मास मात, आयो मुष्टि बांध के पसार हाथ जायरे॥

|ग.| गरभ में आयो तब पायो है अपार दुःख, जाणे निज चेतन के जाणे किरतार है
अशुचिमें वास रह्यो, सवा नव मास चित्त, देखरे विमास तिहां, सुख न लिगार है॥
नीचो सिर ऊँचा पाय, अंब ज्यूं रह्यो टेराय, निकस बाहिर दिये, दुःख को विसार है
अमीरिख कहे धरे गरब गुमान मन, पापके किये से फिर, वहीं ठौर त्यार है ॥२४

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

।घ.। घटहीमे तेरे धन भरयो है अखूट नर, ताकू नहीं खोजे मठ बाहिर फिरत है।
दहा दूर तजी भरी पानी को मथाए अति, होवे देह दुःख पण काज न सरत है॥
भोजनको थाल छोड़, मांगे भीख घर घर, ऐसो मूढ भूल भ्रम मनमें धरत है।
असोरिख कहे मृग नाभिमें सुवास होय, तांही न लखत वन दौड़के मरत है॥२५

।न.। नारी दुर्गति क्यारी सदा अपवित्र सब, देखरे विचार यामें कौन वस्तु सार है।
हाडको पिंजर नसा जाल मांस रक्त भरयो, महा अपावन तामे, वहे सब द्वार है॥
तामें तूं लोभाय रह्यो, निजगति भूल गयो, मान मेरो कह्यो अजु जान दुःखकार है।
अमीरिख कहे भवि, धाररे शीयल शुद्ध, करम कलंक टाल, होत जयकार है। २६

च.। चित्तमें विचार नहीं, वखत ये वारवार, जतन अपार कर फोगट न हाररे।
सकल असार है संसार आयु तण वार, बीज चमत्कार ज्ञान दृष्टिसे निहार रे॥
काल व्याल दुःखकार,फिरत है नित्य लार,चेत हो हुशियार प्रभु वेण चित्त धाररे।
समकित व्रतसार, पुद्गल संग टार, असीरिख प्रभु नामे होय भव पार रे। २७॥

।छ.। छक्यो मोहमदमें वक्यो है सुख कूड वेण,चख्यो न धरम रस,रुक्यो नहीं पापसे
लड़त हैं लोक से करत न भलाई कछु, धरत गुमान रोष राखे माय बाप से॥
संतजन देखकर करत है निंदा सुख, औगुण को ग्रहे नहीं, प्रभु जाप से।
अमीरिख कहे जव होयगा हिसाब तेरा, जम हाथ मार खूब खायेगा तूं धापसे॥

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

।ज.। जाना है जरूर घर दूर है चेतन तेरा, मौत फिर रही सिर पलमें गिरावेगा।
बाप दादा तेरो न कमायो चले दाम संग, आगे नहीं ज्ञाति देइ आदर बुलावेगा॥
चार कोस जाय तब, बांधत खुराक साथ, चित्त में विचार परलोक कहाँ खावेगा।
अमीरिख कहे लीजे, तप जप व्रत संग, अवसर चूके जीव पीछे पिछतावेगा॥२६॥

।झ.। झपटके जैसे बाज दाबत है तीतरको, जैसे वनराज आय मृग गृही लेत है।
मकड़ी ज्यों मक्षिकाको, आयके ग्रसत वेग, मेंढकको अहि ज्यों अचान दगो देत है॥
मूसाको मंझार जैसे, ताक कर गटकत, तैसे तोय काल आय लेगा गुरु केत है।
अमीरिख कहे तब खूटेगा उपाय सब, ऐसो न विचारे मन, सोचत अचेत है॥३०॥

।न.। नाना भांत तोय समझावे गुरु बारंबार, संसार असार सार मानके लुभाना है।
नानापन छोड़ नहीं दानापन धारे चित्त, मोहमें लुभाना अधिकाना पाप ठाना है॥
मानमें भुलाना गुरुदेव नहीं माना, शुद्ध देव न पिछाना कर्म किये छाना छाना है।
अमीरिख कहे स्याना अंतकाल हाथ जाना, कुंभीपाकमें पचाना तबे पछताना है॥

।ट.। टले नहीं काल लोपे करत उपाय क्रोड, मेरु शिर रहो भावे समुद्र मझार है।
बख्तर सजीने तन, धारत आयुध सब, पेसे सात कोटड़ी में, देइ दृढ़ द्वार है॥
रक्षक मनुष्य द्वार द्वारपै रहे असंख्य, होय हुशियार हाथ लेइ हथियार है।
अमीरिख कहे काल आयके लियो उठाय, जतन धरे ही रहे खड़े परिवार है॥३२

|ठ.| ठाठ देख फूल मत भूल मत निज गुण, पुद्गल खेल याकू थिर मत जाण रे।
वांध्या सो बिखर जाय फूल्या सोही कुमलाय, चुणोया पड़त उगा जाय आथवान रे
देखत ही तेरे विरलाय नहीं रहे नित्य, हरि हर चंद्र आदि गये हैं राजान रे।
अमीरिख कहे प्राणी, जगत से प्रीति तोड़, धारले आतम गुण, होय निरवाण रे॥

|ड.| डरत न पाप से करत मन हरसाय, जाने नहीं प्राणी विन भुगते न छूटसी।
दोड़त प्रदेशमाही, पाप करी जोडे धन, सज्जन सनेही मिल माल तेरो लूटसी॥
घेवर चुराया मोदी, खाया है कुटुम्ब मिल, मार पड़ी मोदी सिर, तैसे जम कूटसी।
अमीरिख कहे तेरो होय न सहाय कोई,नरकमें जम ले संडास चाम चूंटसी ॥३४॥

|ढ.| ढील नहीं कीजे गुरुदेवके वचन सुणी,छीजे छिन छिन आयु अंजलीके पानी ज्यूं
देह वलहीन होय, आई है जरा नजीक, नदी पूर वेग जैसे, बीते है जवानी ज्यूं॥
कालदूत आय तेरे, शीस पर छाय रह्यो, देहको ममत्व नहीं छोड़े अभिमानी ज्यूं।
अमीरिख कहे पाप बांधके सिधायो जब, जम हाथ नरकमें, पचे नाज धानी ज्यूं॥

|ण.| णमुँ निगरंथ गुरु, कीनी है कुमति दूर,संसार तजीने लियो भारग तरणको।
महाव्रत पाले शुद्ध, टालत कषाय चार, गुप्तेंद्रिया डर नहीं, वेदनी मरणको॥
तीनरत्न पूरण, करण जोग भाव सत्य, क्षमा ने वैराग्य धारे, करम हरण को।
महागुणधारी उपकारी है जहाज सम, अमीरिख कहे तस चाकर चरण को॥

।त.। तन है असार नर, कीजिये विचार मन, पिंजर है हाड तापे चाम जो मढाना है
दुरगंध खाना तू तो मानत है मेरा मेरा, अंत दगादार तन, जान दुःखदाना है ॥
मांगत है खाना नहीं देवे तो हैरान करे, जीमत अनेक चोज,तोहु न अघाना है ।
अमीरिख कहे तन काचा कुंभ जैसे जान,रंग चंग देख नर, भया क्यों दिवाना है ॥

।थ.। थिरना रहेगो यो गरुर ना रहेगो, मद पूर ना रहेगो देह धूरमें मिलायगो ।
धन ना रहेगो ना रहेगो तन निकाम पन यौवन ये तेरो छिन एकमें विलायगो ॥
करले भलाई भाई छोड़ी छल छंद मंद, सज्जन ये देह तेरी आग में मिलायगो ।
कहे:अमीऋषि चल्यो जायगो अकेलो, तब तेरो हितवारो कोऊ संग ना चलायगो ।

।द.। दया है धरम मूल जाणी अनुकूल प्राणी, धारो चित्त माही भव २ सुखकार है
समुद्रमें नाव भूला जनको मारग दाता,प्यासा को शीतल जल, भूखेको आहार है ॥
पक्षीको गगन जैसे,लाकड़ी है अंधलेको, तैसे भवि जीव ताको दया को आधार है ।
अमीरिख कहे भवि, कालो चित्त भाव आणी, दयासे अनंत जीव, पाम्या भवपार है

।ध.। धार शुद्ध भाव मन संसार तारणहार,भाव विन फीकी सब, तप जप करणी ।
भाव मरुदेवी नंद खटखंड पति भरतजी, केवल सुज्ञान पाय मेटी भव फिरणी ॥
कोटि भव संचित पातक जाय विरलाय, शिवसुख दाता दुरगति दुःखहरणी ।
अमीरिख कहे भव तारण जहाज सम, भावना प्रधान जैन आगममें वरणी ॥४०

|न.| नरभव पायके गमायो तेने फोगटमें, राच्यो नहीं निजगुण खोय रह्यो भूलमें
कान वश हिरण, पतंग नैन वश मरे, नासिका के वश मरे भ्रमर ज्यूं फूल में।
रसनासे मीन कायावश गजराज मरे जाणत है लाभ घाटो, खाय प्राण मूलमें ॥
अमीरिख कहे नर पड़े जो पांचोंही वश, जनम अमोल हार जाय मिल्यो धूलमें।

|प.| प्रभु नाम लिए सब विघन विलाय जाय, गरुड शब्द सुन त्रास होय व्यालको
महामोह तिमिर पुलाय ज्यों दिनेश उदे, मेघ बरसत दूर करत दुकाल को ॥
चिंतामणि होय जहाँ दारिद्र न रहे रंच, धनंतर आये मेटे, वेदन कराल को।
तैसे जिन नामसे करमको न रहे अंश, ऐसे प्रभु अमीरिख जपत त्रिकालको ॥४२

|फ.| फूल्यो फूल्यो फिरे कहाँ,काल शिर छाय रह्यो,छिनमें वेहाल करे काल बलवंत है
बालक जवान वृद्ध, दरिद्र दरबवंत, सुखी दुःखी नर नहीं, छोड़े ज्ञानी संत है ॥
देखो जिन चक्रवर्ती, बलदेव वासुदेव, इंद्र चंद्र देव पशु, ताको करे अन्त है।
अमीरिख कहे भोला, तेरो तो गिणत कहां, ऐसी न विचारे मूढ, सोवत निचिंत है

|ब.| बालवय खेलमाही,खोयके जवान भयो,काम क्रोध छायो घट,भूल्यो जिनराजने
वृद्धवय आयो तब, हुवो है निर्बल तन, घेर लियो सांस खांस, छोड़ी सब लाजने।
नैन मुख श्रवण थक्या है सब हाथ पग, कुटुम्ब दिखायो छेह, करे नहीं काजने।
अमीरिख कहे घेर लियो जब काल आय, चल्यो खाली हाथ नहीं लियो धर्म साजने

|भ.|भटकत मनरूप, अश्व महावेगवंत, रुक्यो नहीं रहे करे नानाविध रंग है।
कवहू वैराग्य कवु मन में धरत राग, कवहू धरम कवु राचे पाप संग है॥
चार गति माहे भटकावे नहीं पावे पार, गिणी नहीं जाय जैसे उदधि तरंग है।
अमीरिख कहे मुनि, ज्ञान रूप वाग करो, लावत है मनवश, आनंद अभंग है॥४५

|म.| मनुष्य जनम धुर, पायवो दुर्लभ क्षेत्र, आरज उत्तम कुल चिर आयु धाररे
पूरण इंद्रिय जोग, तनमें समाधि निरलोभी सद्गुरु जोग, दुर्लभ विचार रे॥
श्रवण आगम वेण, सरधा दुर्लभ अति, धरम उद्यम किया, होय भवपार रे।
अमीरिख कहे प्राणी, दश वोल जोग पाय, तजके प्रमाद धार, दया धर्म साररे॥

|य.| याद क्यों न करे जीव, सह्या जो नरक दुःख, निरंतर मारे मार, परम अधरमी।
अनंती है भूख प्यास रोग शोक खास ज्वर, परवश पणो है अनंतो शीत गरमी॥
अनंतो है भय कुंभी पाक वृक्ष सामलीको, अंग अंग छेद पार, सींचे तरे असरमी।
अमीरिख कहे नदी वेतरणी माहो न्हाक्यो,याद कर दुःख मत होवे दुष्ट करमी।४७

|र.| रात समे पंखी मिल, रहत है वृक्ष पर, उगत सूरज दिसो दिसमें उडाना है।
बाजीगर खेल मेला महोत्सव माहो नर, मिलत अनेक फिर जाय विरलाना है॥
धेनुपाल वनमाहो, करत है गाय मेरी, सांझ समे मंडले अकेला घर जाना है।
अमोरिख कहे तैसे, मिल्यो परिवार आय, विछुडत वार नहीं चेते न सयाना है॥४८

|ल.| लागरहो जगतमें, स्वारथ सगाई सब, स्वजन स्वारथ बिन, होय दुःखदाई है।
मात तात नारी भ्रात, देवे न आदर मान, देखो नृप भरतने बाहुबल भाई है॥
सिंहसेण कोणिक कनकरथ कंसराय, सूरिकंता चूलणी कुजस जग पाई है।
अमीरिख कहे जीव अनंत स्वारथ वश, हरया है सज्जन प्राण ज्ञानी फरमाई है॥४९

|व.| वचन मधुर लवे दिलमें कपट भाव तांसे कर प्रीत मन भेद न उचार रे।
बोलत कटुक मन, माही है सरल भाव, ताका सुण बोल मन, क्रोध मन धाररे॥
अंतर कपट और वचन कटुक होय, ऐसो जन होय तांको संगति निवार रे।
अमीरिख कहे मन सरल मधुर वेण, तांकी हित सीख भव भव सुखकार रे॥५०

|श.| संसार असार जैसे सपनको मायासम, छिनमें विरलाय जाय, छाय जो बादलकी
विषयभोग दुःखदाई, जानो भव भव मांही सिरि जिन उपमा बताई विष फलकी॥
रतन अमोल चिंतामणि सम नरभव विषय वश होय करे, कीमत क्यों हलको।
अमीरिख कहे प्राणी मोहमें लुभाय रह्यो, पलको खबर नहीं, आशा करे कलको॥

|प.| पट् खंड नायक पायक जीके देव रहे, चवदे रतन नव निध के भंडार है।
हाथी घोड़ा रथ जाके, चौरासी चौरासी लक्ष, सेंस छन्नु क्रोड पाये सुभट जुंझार है
त्रिया एक लक्ष और बाणव सहस्र सार छन्नु क्रोड गाम देश बत्तीस हजार है।
अमीरिख एती ऋद्धि त्यागते न वार करी, कहे तेरी केती ऋद्धि चेतन गंवार है॥

।स.। समकित बिन नहीं. पावे कोई शिव सुख समकित बिन सब करणी असार है।
छार पर लीपण टीपण सूका चूना पर. विलोवत नीर जैसे, फोगट विचार है ॥
उपरमें बीज और कूटवो. पराल पुंज, अंक बिन शून्य सार, होय न लगार है।
अमीरिख कहे होय जनम मरण दूर, सेवो समकित इम जाणी नरनार है ॥५३॥

।ह. हंस और बक दोई होवत है एक रंग, वाको मन सरल वो कपटकी खान है।
सोनो ने पीतल दोनों, होत है सरीखे रंग, रजत कथीर दोई होवे एक वान है ॥
कोकिल वायस दोनों, होवे है वरण एक, धेनु दूध थोहर को, रंग एक जान है।
रंग एक सम पिण. गुणमें फरक अति, अमीरिख धरम अधरम बखाण है ॥५४

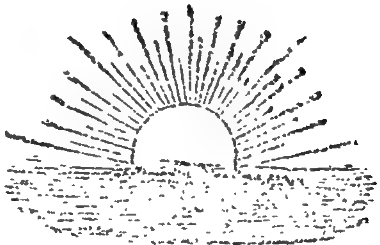
।च.। क्षमा सुखदाई फरमाई है धरम धुर, करत करम चूर, जिनवेण जंपती।
मुनि गजसुकुमार, खंधक उतारी खाल, मेतारज रिख ते कषाय रही कंपती ॥
पांचसे खंधक शिष्य, टाल्यो है करम विष, परदेशी क्षमाधारी त्रिया कंठ चंपती।
अमीरिख कहे क्रोध जीते सोही शूरवीर जनम मरण तज, पामे थिर संपति ॥५५॥

।त्र.। तृपणाकी लाय छाय रही घट मांही तेरे, जोड जोड माया उंडो, गाडके धरत है
धनमाहे पांती सात धरती अगन न्यात, देवता भूपाल पानी चोर भी हरत है।
खर्च्यो न खायो नहीं, लायो है संतोष मन, मरी दुरगति गयो, विपत भरत है।
अमीरिख कहे नहीं आवे माया संग तेरे, मोटा मोटा राय मेरी मेरो के मरत है ॥

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

।इ.। ज्ञानवंत सिरि सुखारिख गुरुराय मुझ, तास सुपसाय उपदेश दियो हितको ।
संवत एकुनवीस, एकावन साल वदि, फागुण के मास बुधवार चोथ तिथ को ॥
जिनआणा विरुद्ध जो मिच्छामिदुक्कडं तस,श्रोता चूकजाणो सोसुधारो आणो प्रीतको
धारे हित सीख होय जनम मरण दूर, अमीरिख सदाइ निसाण घूरे जीत को ॥५७

॥ इति शिक्षा बावनी सम्पूर्ण ॥



सुबोध शतक

॥ दोहा ॥

श्रीयुत शांति जिनाधिपति, शांति करण सुखदाय ॥
अशुभ अमंगल आदि सब, नाम लेत टल जाय ॥ १ ॥
श्रुत देवी वरदायिनी, समरो उर धरि हेत ॥
जासु कृपातें जडमति, बने सुबुद्धि निकेत ॥ २ ॥
चरण करण शिवपंथ पुनि, ज्ञानदान दातार ॥
लहि रजा य गुरुराय की, रचूं ग्रंथ हितकार ॥ ३ ॥
धरयो नाम गुण जानि के, सुबोध शतक ग्रंथ ॥
सुगुण सबे हिय धारिये, धर्म नीति को पंथ ॥ ४ ॥

शारदा नाम—

प्रथम भारती देवी, दूजो सरस्वती तीजो शारदा सुनाम वर चोथो हंसगामिनी ।
पंचमो विश्व विख्यात छट्ठो वागीश्वरी सुसप्तमो कौमारी अष्टमो है ब्रह्मचारिणी ॥
नवमो विदुषां देवी, दशमो सुब्रह्म सुता, ग्यारमो ब्रह्माणी बारमो है ब्रह्मवादिनी ।
प्रात उठी पठन करे जो वर नाम यह, होवे अमोरिख पै प्रसन्न श्रुतस्वामिनी ॥१॥

अरिहंत देव वर्णन—

परम प्रताप तिहुँ लोक में अखंड जाको, दरशन ज्ञान बल क्षायक अनंत है।
इन्द्र सुरवृन्द अहमिंद्र औ नरेंद्र आदि, जोरो कर पद-अरविंद को नमंत है॥
तत्त्व को उचारी निराधार नर नारिन को, दुःखतें निकारो सुखी कीने भगवंत है।
महिमा अपार जाके, गुणको न पारावार, कहे अमीरिख ऐसे देव अरिहन्त है॥२

सिद्ध वर्णन—

जाके वसु करम समस्त भये दग्ध तातें, आतमिक महागुण अष्ट प्रगटाना है।
जनम मरण जरा व्याधि रोग शोक भय, विपत्ति वियोग आदि दूर विरलाना है॥
लोक अग्र जायके विराजे निराकार होय, सदा अविचल पुनि भवमें न आना है।
कहे अमीरिख सब, कारज किये हैं सिद्ध, ऐसे भगवंत सिद्ध मोक्ष पुरी राना है॥३॥

आचार्य वर्णन—

भोगसे उदास होय, छोड़ी गृहवास सबे, आश्रव विनाशि के आचार पंच धारे है।
जानि जिन आगमके, भेद भव्य प्राणिन को, मधुर वचन प्रतिबोध देइ तारे हैं॥
गुण को न पार जामें छत्तीस प्रधान जाण, संपदा सहित जिनमत उजियारे हैं।
कहे अमीरिख समभावे जो आचार विधि, ऐसे आचारज भव भीतिको निवारे हैं॥४

उपाध्याय वर्णन—

जगसे विरत होय, धारे जिनमत व्रत, ज्ञान क्रिया युक्त जिन मारग दिपावे हैं।
श्रुतज्ञानसिंधु अवगाही भये पार आये, कृपा करी ओर भवि जीवको पढ़ावे है॥
संसय हरत गुण धरत पचीस वर, मिथ्यात्वीको मान भंग करिके हरावे है।
कहे अमोरिख ज्ञान भानु है प्रत्यक्ष जेह, ऐसे गुणधारी उपाध्यायजी कहावे है॥५॥

साधु वर्णन—

महाव्रत पंच आदि सप्तविंश गुण जामे, जानि दुःखमूल जग भोग भये त्यागी है।
निशदिन करत अभ्यास जिन आगमको, आतम स्वरूप साधवेको मति जागी है॥
पुद्गल चाह तजी, बाराविध धारे तप, परीषह दुक्कर सहत शिवरागी है।
कहे अमोरिख सबे करम कलंक मेटो, पामे मोक्षवास ऐसे साधु बड़ भागो है॥६॥

अष्ट प्रातिहार्य—

वृक्ष है अशोक फूल, फल दल शोभित सुसिंहासन रतन जडित मनुहारी है।
चामर अनूप शुभ्र, ढारत सुरेंद्र मिली, छत्रोपरि छत्र तीन, ताकी छब न्यारी है॥
देव बरसावे विन जीवके कुसुम पुंज, दुंदुभि बजत प्रभामंडल उजारो है।
देशना प्रकाशे जिन शोभे प्रतिहार आठ, कहे अमोरिख अरिहंत उपकारी हैं॥७॥

जिन जप महिमा—

विषय आताप दूर करिवेको शीतकर, मिथ्यातम नाशिवेको भानुके समान है।
सुमति सुबुद्धिके वढायवेको शारदा सो ज्ञान ध्यान पूरिवेको, कुबेर सुजान है॥
चिंता सब मेटिवेको चिंतामणि जाणो यह, इच्छा फल दाता कल्पतरु सो महान है।
कहे अमीरिख वर शिवपद देनवारो, सुखको निधान जिनराजजो को ध्यान है॥८॥
पुष्करावरत सुख वेलाके वढायवेको, कामित दातार काम कुंभ सुख धाम है।
भव व्याधि दूर करिवेको धनंतर सम, विष वृक्ष कापिवे कुठार अभिराम है॥
कष्टगिरि तोरिवेको, वज्रके समान पुनि गरुड करम अहि त्रासवेके काम है।
भवोदधि पार करिवेको है जहाज सम, अमीरिख ऐसो जिनराजजो को नाम है॥९

षट् प्रयोग—

अष्ट महाकर्म रिपु-मारन को मारन है, अनुभव मोहिवे को मोहन उचार है।
विषय कषाय आदि दोषको उच्चाटन है, आकरख करे निज रिद्धि सो अपार है॥
मनको कुमारगतें रोकिवेको स्तंभन है, शिववधू काज वशीकरण उदार है।
छहो है प्रयोग जिनराज नाम मंत्र हूँ के, कहे अमीरिख सबे मंत्रन को सार है॥१०

अनंत जिनगुण—

लब्धिके प्रभाव एक हूंते कोटि देह करे, देह देह प्रति कोटि शीश जो वनावे है।

शीश शीश कोटिमुख,प्रतिमुख कोटि जिव्हा त्योंही प्रतिजिव्हा कोटि भारती बसावे है,
सागर अनंत परयंत यों निरंतर ही, या विध अनंत भगवंत गुण गावे है।
कहे अमीरिख जिनराजके अपार गुण, काहूँ विध ताको नेक पार नहीं पावे है॥
कौन गिनी सके घन बुंद वन पत्रनको, सागर तरंग संख्या, कहिके बतावे कौन ?
कौन कर अंगुलतें माप पुहवीको करे, सुमेरु गिरिको तोल, करिके दिखावे कौन ?
कौन रतनागर भुजातें तिरी पावे पार, अंबर में उड़ी नभ अंतक सुनावे कौन ?।
कहे अमोरिख जिनराजके अनंत गुण, मंदमति नर पूरे गुण कथि गावे कौन ?१२

श्रोता के १४ गुण--

भक्तिवंत बोले मीठे वचन गरव त्यागी, सुणिवेको रुचि किते चित्त ना डुलावे है।
सुणे सो प्रगट कहे प्रश्न करो जाणे पुनि, सुणे घने सूत्र नींद आलस न आवे है॥
बुद्धिवंत दाता गुरु महिमा बढावे भूरि, प्रीतिवंत होय निंदा ओगुण न गावे है।
कहे अमोरिख दश चार गुणधारी ऐसो, सरल विवेकी नर श्रोता सो कहावे है॥

वक्ता के १४ गुण—

ज्ञाता बोल पोडश सिद्धांतके अरथ ठाने, औसरको जाने वाणी मधुर उच्चारे है।
संशय निवारे गीतारथ उपयोगी वर, सत्यवादी आगम संकोच विसतारे है॥
त्यागे अपशब्द मन सभाको रिझावे प्रश्न, अरथको ग्रहे पै न मान उर धारे हैं।
धरमी संतोपी दश चार गुण धारी कहे, अमीरिख वक्ता सोही, भवजल तारे है। १४

बल प्रमाण--

बारे नर वृषभ वृषभ दश अश्व एक, बारे अश्वहुको बल, महिष महानमें ।
पांचसे महिष गज एते गज सिंह एक, दोय सेंस सिंह अष्टापद बलवान में ॥
दश लाख बलि दूनो हरि दूनो चक्रवर्ती, क्रोड चक्री देव क्रोड देव सुरराज में ।
इंद्र जु अनंत मिलें, अंगुलि ना नमे जाकी, कहें अमीरिख एतो, बल भगवानमें ॥१५

समदृष्टि लक्षण—

जे ते जगमाही जगवासी देहधारी जीव, ते ते सब अनादि करमतें मलीन हैं ।
निजकृत सुखदुःख, उदे रस देही तबे, जाने सब शुभाशुभ, करम आधीन है ॥
लखे निज चेतन से भिन्न पुद्गल ऐसो, समदृष्टि निज गुण में प्रवीण है ।
कहे अमीरिख भलो, प्रगट्यो विवेक उर, संयोग वियोगमें न सुख नहीं दीन है ॥

मिथ्यादृष्टि लक्षण--

करम आधीन मूढ विकल अनादिहुसे, भयो न प्रकाश ज्ञान, आतम परम को ।
जो जो पुद्गलके संयोग दिशा चेतनकी, सोही निज मानत न मानत भरम को ॥
ज्ञानादिक गुण से जो होय के विमुख रहे, जाणे पुद्गल रूप आतम धरम को ।
ऐसो घट विभाव अज्ञान वसी रह्यो ताके, कहे अमीरिख वंश बढ़े है करम को ॥

मौन-गुण—

मौन करी रहे नाहीं आश्रव के वेण कहे, संवर के काज मृदु वचन उच्चारे है।
बोलत है प्रथम विचारी निज हिये मांही, जीव दया युत उपदेश विसतारे है॥
आगमके वेण ऐन, माने सुखदेन पेन, माने मिथ्या केन चित्त ऐसी विध धारे है।
कहे अमीरिख मुनि ऐसे मोनधारी होय, तारण तरण सोही सुगुरु हमारे हैं॥१८

सुगुरु-महिमा—

धन्य गुरु मोरे जग-भोग को असार लखी, त्यागी के ममत्व पाप-ग्रंथीको विछोरे है।
काम मोह डोरे केलतंतु जिम तोरे, प्रीति संयमतें जोरे जाके रहे भव थोरे हैं॥
चढे ज्ञान घोरे शिव साधवे को दोरे राग द्वेषादि अगोरे जानी ताके मन मोरे हैं।
अमीरिख वाहिर भीतर रंग घोरे ऐसे साधु गुण गोरे ताको हाथ हम जोरे हैं॥
संयम सुधारे पंच महाव्रत वारे सो निवारे सब पातक प्रचंड पुंज भारे को।
आश्रव विदारे सत्य संयम आचार वारे, तत्त्वको विचारे सींचे समताके क्यारेको॥
ज्ञानके उजारे रागद्वेप हूसे न्यारे, विपै वेल को उखारी पामे भवके किनारे को।
कहे अमीरिख अघ पुंजको विदारे जाणे, ऐसे गुण धारे सोही तारेगा हमारेको॥

चरण सित्तरी—

पंचमहाव्रत शुद्ध भाव से आराधे नित्य, क्षमादिक दशविध यति धर्मधारी है।
वैयावृत्य-भेद दश संयम सतरे विध, नववाड सहित विशुद्ध ब्रह्मचारी है॥

वारा विध तप पुनि दर्शन चारित्र ज्ञान, क्रोध मान माया लोभ चारों परिहारी है।
चरण-सित्तर मूल गुणको आराधे मुनि, कहे अमीरिख नित्य वंदना हमारी है॥

करण-सित्तरी—

समिति गुपति शुद्ध पडिमा द्वादश विध, भावना सुभावे मुनि द्वादश प्रकारी है।
पच्चीस प्रकार पडिलेहण करत नित्य, करे पंच इन्द्रिय स्ववश उपकारी हैं॥
निरदोष आहार स्थानक वस्त्र पात्र लेत, द्रव्य क्षेत्रकाल भाव अभिग्रह चारी है।
करण सित्तर इम धारत उत्तरगुण, कहे अमीरिख नित्य वंदना हमारी हैं॥२३॥

देवच्यवन समय १० चिन्ह—

देवता चवन समे दश चिन्ह होय यह, प्रथम कुसुम कंठ माला कुमलावे है।
लज्जा जाय तेज भांको दीसत शरीरहूँको, वस्त्र गंध होय अंग आलस समावे है॥
निद्रा को आगम पुनि, काम राग भग होय, उपजे शरीर कंप, दृष्टि फिर जावे है।
आरत उदासी होय कहे अमीरिख ऐसे, तीजा अंग मांही ज्ञानी देव फरमावे है॥

भरत क्षेत्र में १० बोल विच्छेद—

जम्बूस्वामी मोक्ष में विराज्या पीछे भरतमें, गये हैं विच्छेद दश बोल ये जहारी है।
परम अवधि मनःपर्यव केवलज्ञान, चारित्र सूक्ष्म संपराय गुणभारी हैं॥
यथाख्यात जंघा विद्या चारण लबधि मुनि, पडिमा द्वादशमी पुलाक अणगारी है
उपशम श्रेणि और क्षपक श्रेणि ये दोय, कहे अमीरिख जैन ग्रंथमें उच्चारी है॥२४॥

पंच परमेष्टि के १०८ गुण—

अरिहंत देव बारे गुण से विराजमान, अष्ट गुण सिद्ध कर्म रिपु किया छारो है ।
आचारज प्रभु गुण छत्तीस महान जान, उपाध्याय स्वामि गुण पचीस उचारो है ॥
गुण सत्तावीस धारी साधु महा उपकारी, एक शत आठ पंच पद गुण सारो है ।
मन वच काया शुद्ध, जपिये त्रिकाल नाम, कहे अमीरिख नित्य वंदना हमारी है ॥

ज्ञान क्रिया के बिना मुक्ति का अभाव—

केते सिर पैर लौं मुंडावे केश बारंबार केते पंच केशी नख जटाही बढावे है ।
केते व्हे दिगंबर वसन तजि फिरे केते, नाना रंग भेख केते भसमी रमावे है ॥
केते जोग आसन समाधि गही बैठे केते पंचाग्नि चौरासी मांही देहको तपावे है ।
अमीरिख करी क्योंना देखो कष्ट नाना भांत, जीव दया ज्ञान बिना मोक्ष नहीं पावे है

संतोष-धन महिमा—

पुण्य जोग पावे धन, रजत कनक खान, पोरस रसान वर रतन निधान है ।
हीरा नील विद्रुम गोमेध पुखराज पन्ना, माणिक लसन मोती, पारस पाषाण है ॥
भूमि गृह भूषण वसन यान भाजन आयुध सेना, त्रिया पशु गजादि महान है ।
कहे अमीरिख जब आवत संतोष धन, ताके ढिग सब धन, धूलके समान है ॥

आयु अस्थिर—

ऐरे मति मंद खूब्बी रह्यो क्यों जगत बीच, मौत तो सदा ही संग छाह जैसे रहे है
जांके वर भूत औ भुयंगको रहे है वास, सो तो काहूँ कालमें अचान दुःख सहे है ॥
सोचरे सयाने तेरो आयु दिन रात घटे, सरिता का पूरके समान नित बहे है ।
कहे अमोरिख क्यों नचिंत होय बैठो हिय,दया मूल परम धरम क्यों ना गहे है ॥

शिव साधनोपाय—

मानुप जनम शुभ पाय के भुलाय मत, औसर गमाय चित्त, फेर पछितावेगो ।
साधु जन संगत अनेक भांत धर तप, छोरिके कुपंथ एक ज्ञान पंथ आवेगो ॥
जीवदया सत्य गिरा अदत्त न लीजे कभौं, धारिके शीयल मोह ममत मिटावेगो ।
ठावेगो सुक्रिया एतो, मनमे विराग धार, कहे अमोरिख तबे मोक्षपद पावेगो ॥

रत्नत्रय साधनोपदेश—

दूपण रहित गुण भूपण विराजे शुभ, देवपद राजे तांही शीसको नमाय ले ।
आगमके ज्ञाता जगत्राता गुरुदाता सुख, सुनि उपदेश निज चित्तमें जमाय ले ॥
भरम विहीन शुभ परम धरम गही, जानिके मरम शिव, मारग समाय ले ।
जग हटवारे मांही, आय गुणवारे प्यारे, अमीरिख कहे यही रतन कमाय ले ॥

धर्मोपदेश--

जो लौं यह देह तेरो वृद्ध नाहीं होय तोलौं तप जप ध्यान सुक्रिया उर धरि ले।
जो लौं ना नाभांति रोग ग्रसे नाशरीर तेरो, तो लौं जिनराज यश, भावसे उच्चरिले।
जो लौं पंच इंद्रिय सुबल नहीं क्षीण होय, तोलौं नर सुकृत-रतन खेप भरि ले।
कहे अमोरिख जो लौं कालरिपु घेरे नाहीं, तो लौं तू धरमको कमाई खूब करि ले॥

भावनग परीक्षा करण शिक्षा—

संयम सुहीरा नील नियम विद्रुम व्रत, गौमेध विराग ज्ञान मानिक हरखि ले।
तप जप मोती ध्यान पन्ना नय लसनिया, अभय सुदान पुखराज ही निरखि ले॥
कहे अमोरिख दुःख दारिद्र पलाय ऐसो, समझि पदारथ अमोल पास रखि ले।
पूरण भरो है जिन धरम मंजूस यह, ऐरे जीव जौहरी; जवाहिर परखि ले॥३२॥

समय सफलता--

सुनहु सुजान प्यारे पायकेऽसमय सार, भूलि हूँ न ऐसो कहूँ औसर बिताइए।
परम पुनीत जिनमत सुखधाम लही, हरख सहित ज्ञान नद में नहाइए॥
सार जिनवाणी सुखदानी हितकारी मानो, जानी निजरूप पर संग बिसराइए।
तिरनेको दाव नाव सफरी समान यह, कहे अमीरिख परे पुण्य जोग पाइए॥३३

देह की अस्थिरता--

ऐरे हो सयाने प्रीति ठाने या शरीर साथ, जाने नहीं पथके बटाउ सम वासा है।
पातकमें राचिके गमावत वृथा हो यह, रतन अमोल जैसा एक एक स्वासा है॥
परम धरम यह तिरने के दाव शुभ, नीठ करो पायो ज्यों जुवारीका सा पासा है।
कहे अमीरिख नर देहको भरोसो कहां, पानीमें पतासा तैसा तन का तमासा है।

संसार की असारता--

आयु है अथिर जैसे अंजली के नीर सम, दौलत चपलता ज्यों दामिनि झलकमें।
यौवन पतंग रंग, काया है नीकाम अति,वार नहीं लागे ओस बिंदु की ढलकमें॥
सुपन समान यह, संपदा पिछान मन, सरिता को पूर ढल जाय ज्यों पलक में।
कहे अमीरिख जग सुख है असार धार, सुकृत सदीव यही सार है खलक में॥

अभिमान त्यजनोपदेश--

ऐ रे मूढ क्यों वखानत है बड़ाई बहु, जाहिर जहान जाने तेरो हाल सारो है।
मनमें विचार तूं वहो है तात शुक्र पुनि, माताको रुधिर दोउ ताते तन धारो है॥
रह्यो है उदर कह्यो, वह्यो मलमूत्र ही में, तांहीमें अमित भरयो, अनित भंगारो है।
कहे अमीरिख उतपत्ति ना विचारे नेक, देह की नीकाइ लखि, भयो मतवारो है॥३६

ऐरे मन मेरे तूं भयो मलिन मंदमति, अति मतवारो तोही, रंचहू न चेत है।
भयो है कलंकी अघचारी अनाचारी चौर, संचिके करम भयो पातक निकेत है॥
सीख या हमारी हितधारी सुखकारी मान, अमीरिख कहे तोही भारी सुख देत है।
त्यागी अभिमान सुधरम आगेवान होहु, रतन अमोल क्यों वृथा ही खोय देत है॥

नूर ना रहेगो यो गरूर ना रहेगो मदपूर ना रहेगो देह धूरमें मिलायगो।
धन ना रहेगो ना रहेगो तन नीकापन, जोबन ये तेरो छिन एकमें विलायगो।
करले भलाई भाई छोड़ी छल छंद मंद, जन मिल देह तेरो, आगमें जलायगो॥
कहे अमोरिख चल्यो जायगो अकेला तब, तेरे हितवारो कोउ संग ना चलायगो।

सुनरे सयाने तूं करत क्यों गरुर एतो, रहे के अभिमानी हित वेण नहीं धारे है।
नीकापन यह तेरो छ्रपमें विनशी जाय, थिर ना रहेगा साज बाज ये तिहारे है॥
देखतही तेरे केते धूर में मिले है जन, अजहूँ ना नेक अभिमान को उतारे है।
कहे अमोरिख धारिके विनय मूल होहु, छोड़ो दे गरूर गुरुदेव यों उचारे है॥३९॥

अंध क्यों भयो रे मतिमंद परपंच ही में, एरे अभिमानी तोही केतो समझायो है।
सद्‌गुरु तोही जिनवेण को सुनावे पिण, करमके भारी ना विवेक उर आयो है॥
धरम न भावत न गावत [...] गुण, दुष्कृत कमाय शिर पातक चढायो है।
औ नरको पाई अब करते भलाई भाई, [...]को अमीरिख उपदेश दरसायो है॥४०॥

खलकमें आय ललचायो है विषय सुख, फूलो फिरे काल भय चित्तसे विसारके।
बड़े बड़े राया घनछाया ज्यों विलाया ताको, लेइ गयो काल जरामृत्यु उखारके।
श्वास ही की आस फेर कौन विसवास करे, ले जावन माहा करे छार तन जारके।
अमीरिख कहे आय, वसे थे जगतमाहो, अंतको सिधाये महिमान दिन चारके॥

काम वश विष्णु —

कुञ्जके बिहारी हितकारी व्रज नारीन को, शोभा गुण रूपकी भीकाइये लुभाने हैं।
शुद्धि बुद्धि हारी रास क्रीडा विसतारो, कीनो नृत्य देइतारी चित्त नेक ना लजाने हैं।
कीनी भकभोरी घट फोरि के मरोरि बाह ठानी रस रीत रति प्रीत सरसाने हैं।
कहे अमीरिख समरत्थ मनमत्थ हत्थ, मन वच तन होय विवश विकाने है॥४२

काम-वश ब्रह्मा—

ब्रह्मा तप धारो फल फूलके आहारी बैठे आसन लगाय वण योग विधि टाने हैं।
रूप गुण रसी उरवसी उर वसो ताको, सुख मानि हारी सबे सुध विसराते हैं।
व्हेके विपरीत रति मानी प्रीत ठानी तिन, करी गुण हानि मोह पासमें बंधाते हैं।
कहे अमीरिख समरत्थ मनमत्थ हत्थ, मन वच तन होय विवश विकाने है। ४३

काम-वश महेश—

शंभु शिर जटा को बढाय तप ठाय तन, भसमी रमाय कामवश अधिकाने हैं।
निश दिन नसेमें बिहाल उनमत्त व्हेके, गिरिजा के भोगमें मगन सुख माने है॥

वसन विहीन नाच नाचिके रिझाय तिन्हें, सबे भांति ताके व्है अधिक उरझाने है।
कहे अमीरिख समरत्थ मनमत्थ हत्थ, मन वच तन होय विवश बिकाने है ॥४४॥

अंध के २३ प्रकार--

प्रथम लोचन अंध, क्रोध मान माया अंध लोभ अंध भय अंध, रागद्वेष अंध है।
मोह अंध धन अंध, जोबन के जोर अंध, मद अंध चिंता अंध, अंध मतिमंद है॥
भूख अंध प्यास अंध इज्जत करज अंध, विद्या के गद्दर अंध और जनमंध है।
रात अंध दिन अंध, कहे अमीरिख तामें, सबहूसे विषय विकार अंध फंद है ॥४५

पूर्ण श्रेष्ठ विद्या का २७ जने को अभाव--

कामी क्रोधी लोभी अरु दरिद्री प्रमादी मूढ, दुःखी पराधीन पक्षपाती अभिमानीको
मोह मदवंत व्यग्र चंचल कृपण पुनि, रहे सोच सकूची कुभंगी औ अज्ञानी को॥
अनाचारी आलसी अभागी अनचाही नर निंदक अनोसरी अधीर अकुलानीको।
अमीरिख चित्त सुविचारो या उच्चारो बात, पूरी वरविद्या नहीं आवे इन प्राणीको॥

१६ रत्नों के नाम--

गोमेध रतन अंक रतन फटिक वर, लोहिताक्ष मरकत, जानो सुविचार के।
मसारग रत्न भुज मोचक सुइंद्र नील चंदन गैरिक हंस गरभ उचार के॥
पुलक रतन नाम, सोगंधिक जानो पुनि चंद्रप्रभ वेडूरय, मौल जु अपार के।
जलकांत सोलमो, सुनाम कहे अमीरिख कहे जिन रतन ये षोडश प्रकार के ॥४७

आयुध के ३६ प्रकार--

चक्र शूल धनु वज्र, फरसु बान बान तुर्क गह छुरा औ कटार शैल धार ये।
खेटक संगह गदा, तोमर भृशुण्डी पास, जम्बू वाक खंजर अंकुश लट्ठ सार ये॥
जंत्र हल मुसल खडग वर बंदूक भाल जंजाल जरह गुप्ति गुरज उदार ये।
दाओ पिसतोल पटा नाम कहे अमीरिख, आयुध पिछानो खट तीस जो प्रकार ये॥

संसारी जीव अवस्था--

कवहुक जीव यह पायो गज देह स्थूल, कवहुक लघुतन, कंथवो कहायो है।
कवहुक राय होय, शीसपे धरायो छत्र, कवहुंक रंक होय भीख मांगी खायो है॥
कवहुक देव कभौ नरक निगोद भव कवहू विकल तन लेई दुःख पायो है।
कहे अमीरिख ऊँच नीच भव धारी जीव, कालही अनंत जग माही यों गमायो है॥

चिदानंद की अनभिज्ञता--

ऐ रे चिदानंद तू अनादितें अरूपी गुण, अनंत २ ऋद्धि सिद्ध के समाना है।
राच्यो जड संग सरवंग भौ आधीन सब, निज शुद्धि भूलि गयो, मूरख दिवाना है
मोह में विकल जग वस्तु ए हमारी सब, ममतमें बंध्यो ए सबे कत अयाना है।
कहे अमीरिख यह तेरा ही अग्यानपना, कभी तेने निज पर भेद ना पिछाना है॥

मध्यमंगल-गणधर प्रार्थना--

आगम प्रकाश कवि नाशक भरम तम, रिद्धि सिद्धि बुद्धि सदा हाजर खरी रहे।
लब्धि के निधान वेण अमृत समान तातें, कहे अमीरिख वेल करुणा हरी रहे॥
मोपै गणराज अब, एती कृपा कीजे तब. भक्ति मति मेरे चित्त हेममें जरी रहे।
टार मतिमंदता निवार दे विघन मोह, दीजे वरदान हिये सुमति भरी रहे॥५१॥

स्वार्थ-कथन—

मात तात त्रिया सुत, भ्रात मित्र न्याती सबे देखतही जात पे न होत को सहाई है
सदा ही कमायो ताको खायो सो भूलायो देखो,छोतही लगाते नेक लाजहू न आई है
एक छिन जाके बिन नेक ना सुहातो ताको, हाथसों जराय छार वार में वहाई है।
कहे अमीरिख सुविचार के निहार जग, देहकी सगाई नहीं, श्वास की सगाई है॥

कुकवि-निंदा--

मोह माही विकल भये हैं जग-जीव सबै, राग-वश होय शुद्धि लाज को विसारे है।
सीखे बिन सहज ही आवे अघ चाल पुनि, सेवन विषय सुघराई उर धारे है॥
तापर मलिनमति, रचे रस काव्य और, नायिकादि भेद अलंकार विसतारे है।
कहे अमीरिख काम अंध मद प्राणिनके, नेत्रमें बहोरी मूठी, धूल भरी डारे है॥

सत्य वस्तु-कथन--

सांचे सिद्ध सोही जो न उपजे संसार माही,सोही सांची रिद्धि कभौ खातहू न खूटे है
साचो है पंडित सोही, सभाको रिझावे मन, सांचो शूर करमों के सामो जाय जुटे है
अमीरिख साचो सोही कंचन कसौटी चढे, साचो वज्र सोही घन घावतें न फूटे है
साचो है धरम सोही होय जीव दया मूल, साची प्रीति सोही कांहू भांति नहीं तूटे है

धूर्त्त के लक्षण--

हियेमें कपट और मुखतें मधुर लवे, भूलिहू के ताको विसवास नहीं कीजिये।
जहरको कुंभ तापै अमृत ढांकन वर, अहि औ मयूर को दृष्टांत तसु दीजिये॥
वकवत् ध्यान राखे, मंजार समान दाव, एसो ढंग देखो चित्त, नेक ना पतीजिये।
अमीरिख कहे ऐसो कपटी धूरत होय, भूलिहू के ताको कभौ नाम नहीं लीजिये।

शुद्ध ज्ञान चर्चा के गुण—

सुगुणी से चरचा करत ज्ञानवृद्धि होय, दीपक से दीप मिल्या ज्योति बढ जात है।
भृगु विप्र नंदनसे, संजतीसे क्षत्रीराज टाल्यो केशी स्वामी परदेशी को मिथ्यात है
केशी मुनि गौतम की चर्चा भई है भली, मनका संदेह टल्या सुजस विख्यात है।
थावरचा पुत्रसे चरचा शुकदेव करी, कहे अमीरिख जैन आगम में बात है। ५६

बोली से गुण दोष--

बोली से आदर और जगमें सुजस होय, बोली से सकलजन, मित्र हो रहत है।
बोली से अनेक विध भोजन मधुर मिले, बोली से सुने है गाली मार भी सहत है
बोली से सुप्यार और बोली से पैजार त्यार, बोली से कलेश कारागृह भी लहत है
कहे अमीरिख नर बोलो है रतन सार, सुगुण विवेकी बोल तोल के कहत है ॥५७

पंचेंद्रिय-विषयासक्त को शिक्षा--

ऊँचे २ धाम नीके, चित्र अभिराम जाली झरोखा गवाक्ष माने सुख भरपूर है।
नाटक अनेक विध, अंतर फुलेल तेल, शुद्ध गंधोदक भले, भोजन मधूर है ॥
सेज सुख आसन आभूषण वसन वर, नवलो सुन्दर आय, उभी सो हजूर है।
अमीरिख एते सुख, पायके भुलाय मत, धाम नहीं कांधे आगे संकट जरूर है ॥

सार तत्व कथन

शिवसुख साधन प्रधान जिन वेण जान, करिके पिछान ऐ सुजान धारो चित्त।
तारक है देव सोही, जामें नहीं दोष कोई, सोही गुरु काम वाम धाम चाह त्यागे वित्त
सत्य सो धरम जहां, दया षट् काय हूकी, तत्त्व ये प्रधान की श्रद्धान मन धारो मित्त।
तजिके प्रमाद शिव साधन करीजे ऐसे अमीरिख सार उपदेश यो प्रकाश्यो हित ॥

चेतन को चेतावनी—

महा मोह नींदमें अनादिकाल चिदानंद, सूतो है निःशंक निज सुधि सबही विसार।
विषय कषाय रागद्वेष औ प्रमाद वश, करम कमाय भव संकट सहे अपार॥
घटमें अनंत रिद्ध राजे पै लुकाय रही परख न कीनी कभौ, ज्ञान नैन से निहार।
कहे अमीरिख जाग त्याग मोह नींद अब, देख निजरूपको निवारिके मिथ्यांधकार॥

संसार कारागृह—

कैदी ज्यों संसारी लोक, बंदीखानो जानो गृह, त्रिया पगबेड़ी दृढ मोह के किवार है
पैरायत परिवार जावा देवे नहीं बार. आलस प्रमाद नींद मिथ्या अंधकार है॥
मोह की दीवार गिरी लाधो शिवपंथ अब, भागो चलो कहे ज्ञानी वेण हितकार है
कहे अमीरिख अवसर नहीं वारंवार, मनुष्य जनम खुलो मोक्षपुरो द्वार है॥६१

काल समर्थता—

योगके अभ्यासी जप ध्यान औ समाधि साधी, निरुपाधि काल से भयो न कोई पंथमें
निज मुनि इंद्र सुरवृन्द धनवंत भूप, कोविद कुलीन नर, खूटे सब अंत में॥
यंत्र मंत्र औषध उपाय किये देहधारी, अमर भयो सो नाहीं सुन्यो को सिद्धांतमें।
कहे अमीरिख कहनायत खरो है जग, टूटी की न बूटी किते देखो सुनो ग्रंथमें॥

दानहु न दीनो ना शीयल चित्त भीनो तप विधिसु न कीनो नहीं सेवे गुरु ज्ञानीको ॥
कीनो नाहीं तत्त्व अनतत्त्वको विचार भूरि,भावना न रुचि चित्त नेक अभिमानीको ।
कहे अमोरिख यथा मालती अरण्य मध्य, त्योंही गयो अफल जन्म तिह प्राणीको ॥

नरदेह पायो पै कमायो ना धरम लाभ, कीनो ना उपाय भव सिन्धु के तरन को ।
सोयके गमाय निशि, काममें बितायो दिन, लागो उद्वेग हाय, उदर भरन को ॥
कहे अमीरिख क्रूर काजपे अकाज ठान, धारो ना धरम भव भीति के हरन को ।
परो मझधार अब कीजे का विचार नाथ, मोको तो भरोसो दृढ़ रावरे चरणको ॥

नारी निंदा-कथन—

जोवन की झलक चलक तन भूषण की, दरसाय चकित करत जे विचारे हैं ।
सुमति भूलाय के भूराय करि लेत वश, तन धन जस लूटी पराधीन पारे है ।
कहे अमीरिख निज समय निहारी सार, करत जुलम हिये करुणा न धारे है ।
हांसो-फांसी डारी नैन बाननते मारो ऐसो, नारी है ठगारी ठगी अधोगति डारे है

नारी दुरगत क्यारी सदा अपवित्र रहे, देखरे विचार यामें कौन वस्तु सार है ।
हाडको पिंजर नसा जाल मांस रक्त भरयो, अति अपावन तामें वहे सब द्वार है ॥
तामें तूं लुभाय रह्यो, निज गति भूलि गयो, मान कह्यो अजहुं तूं,जानी दुःखकार है ।
कहे अमीरिख भवि, धाररे शीयल शुद्ध, करम कलंक मेटो, होय भवपार है ॥६६॥

स्त्री-दुःख—

वीछिया झांझर और अनोठ मुंदडी वीटी, कंकण झूमर भुज-वंधही मंगायो है।
चंद्रहार तेडयो लाव, नथ चूंप दांतनकू. औगन्या करन फूल विंदली सुहायो है॥
शीशफूल टीकी लाव, रखडी जतन जडी. माथाकूं मेमद हीर, चीर मन भायो है।
कज्जल सुरमो मिस्सी, एतो तो मंगाय लीनो, फेरहु कहत पिय लंगर न लायो है॥७०॥
उखल मूसल लाव, हांडी कुंडी चाटु लाव, चलनी ने सूप थाली, बुहारी मंगाई है।
रालो परयंक लाव. सोड और सुई लाव, छोटे २ कटोरे, पंडेरी मन भाई है॥
रसोई करन वैठूं चून दाल घृत तैल लूण मिरी गोल खांड आछी लाव राई है।
एतो तो मंगायो कहे, हींग नहीं लाई पिय, अमीरिख कहे नारी ऐसी दुःखदाई है॥७१॥

काम-जय-गुण—

केते नर महाउनमत्त गज जोते पुनि, महाबलवंत गही केसरी विदारे हैं।
लाखन सुभट साथ, युद्ध करिवेको धीर केते महा ओट गढ कोट तोरो डारे हैं॥
केते लोह शृंखलादि तोरे गिरि ढाहे ऐसे, औरहू अनेक वीरताई प्रण धारे हैं।
कहे अमीरिख ऐसे शूरको हराये काम, ऐसे रिपुराज ताको साधु ही पछारे हैं॥७२॥

काम-रिपु-निर्दयता—

काम बलवंत लेई हाथ पंचवाण तोप, वश करि लीने शूरवीर सभी मारिके।

इंद्र देव खेचर नरेंद्र नर पशु आदि, सबहीको कीने निजदास मान पारिके ॥
लाज वल साहस गमाय के हराय गुण, शुद्धि बुद्धि छीनके आधीन किये नारीके।
कहे अमोरिख मुनिराज हो वचे हैं यातें, धारो है शोयल काम-वैरीको पछारिके ॥७२॥

स्त्री परीषह जीतन गुण—

रूप चतुराई से लुभाय लेत कामीमन, साज वस्त्र भूषण सुगंध सुख मानि धान।
हास औ विलास हाव भाव गीत गान आदि, करिके कटाक्ष मन, विंधे मारी नैन बाण॥
काम वश होय सुधी लाजको विहाय चली, आई छलिबेको जहां ठाडे मुनि धरी ध्यान
कहे अमीरिख मनके सहु चले न नेक, जाने मुनि निज पुत्री मात भगिनी समान ॥

एक राजू का मान--

तीन क्रोड मन लख एक्यासी सोले हजार, नवसे सित्तर मन ताको एक भार है।
ऐसो सेंस भार लोह, वज्रमयी गोलो करी, पेला देवलोक से गिरावे सुविचार है॥
मारगमें वेता पट मास दिन पेर घडी, पल माहो आवे मध्य खंड के मझार है।
पूगीफल आमला समान रहे शेष कहे, अमीरिख एक राज लोक को विचार है ॥

जिन-जननी के १४ स्वप्न--

देख्यो ऐरापति वर वृषभ शार्दूलसिंह, कमला कुसुम दाम पूरण सुचंद को।
सहस्र किरण भानु, ध्वजा सुकलश मान, सरोवर पद्म देख्यो खीर के समुद्रको ॥

देवको विमान नाना भांतिकी रतन राशि, पावक की झाल घृत सिंचित असंदको ।
जिनराज माय यह चवदे स्वप्न पाय, कहे अमीरिख पामी, चित्तमें आनन्दको ॥

संयम-व्रत दुष्करता--

सहज नहीं है असिधारा पै गमन पुनि, त्योंही ना सहज पावकमें तन दाहिवो ।
अंगुलिपै मेरु धरी राखवो सहज नाहीं, भुजानी ते स्वयंभुरमण सिंधु थाहिवो ॥
देह सुकुमार अति संयम कठिन जावजीव विसराम पै न दो दिनको चाहिवो ।
यातें अमीरिख सुविचार करो लीजे व्रत, सहज नहीं है मुनि मारग निवाहिवो ॥
चाववो कठिन मेंण दांत हूँ ते लोहजव, कठिन प्रवाह गंग सामे उर धाहिवो ।
कठिन पवन पोट वांधि के उचावो शीश, कठिन सुमेरु तौल करिके वताहिवो ॥
त्योंही है कठिन महाव्रत पद यौवनमे, परीसे सहन करो, चित्त ना चलाहिवो ।
यातें अमीरिख सुविचार करो लीजे व्रत, सहज नहीं है मुनि-मारग निवाहिवो ॥

द्यूत व्यसन निषेध--

जुवा का व्यसन जग कुजस करन सुख संपत्ति हरन शिर पातक चढावे है ।
कलह दारिद्रको निकेत दुःख हेत भय आपदा को खेत शुभ क्रिया को नसावे है ॥
स्वजन कुटुंब नहीं प्रीति औ प्रतीत करे, भीति ना करमकी अनीति हो सुहावे है ।
कहे अमीरिख भलो सीख या हमारी मान, तजिदे जूवाका खेल, जातें सुख पावे है॥

मांस-निषेध—

मांसहीके काज जीव, जंगम विनासे नीच, रस वश होय नेक दया न धरत है।
कृमि-कुल-राशि कृति नाम सपरस गंध परम अशुचि छिये शुद्धता हरत है॥
माखी भिनकारे उर देखतही आवे घिन, अंध अकुलीन नर ताको आचरत है।
कहे अमीरिख दुःखमूल लखी त्यागी देहु, आमिष आहारी मरी, नरक परत है। ८०।

मदिरा-निषेध—

वासित दुर्गंध रहे दहे कीट वृंद याते, परम अशुचि प्रिय लागत अजानको।
शुद्धि बुद्धि खोयके विकल भूमिपात करे, वसन विहिन व्हे तजे है कुल कानको॥
वहे मुख लाल माखी वृंदना वचन सुधी, माता बेन देखिके विसारी देत भानको।
कहे अमीरिख धिक् धिक् है जनम तासु, ऐसो दुःख जानिके तजोरे मद्यपानको॥८१॥

वेश्या-निषेध—

परधन ठगिवेको करत कला अनेक, हाव भाव दाखे मीठे वचन उचारे है।
पतंगके रंग सम, जनावे अनित्य प्रीति, तन मन धन लूटी करत असार है।
नित मुख लव नित, चाखत अभक्ष्य ऐसी, कुटिला कुपात्र महा अशुचि आगार है।
कहे अमीरिख सवै चातुरी भूले है करे, पातुरी को संग ताको, कोटिन धिक्कार है॥

शिकार-निषेध—

पीठ देइ भागत रहत मुख दीन सदा, दांत तृण लेत कभी होत ना गरम है।
डोले निराधार इत उत, छिपि राखे प्राण, गरीब अजाण सिर संकट परम है॥
ऐसे वनचारिनपै गजब गुजारिवो सु, कहे अमीरिख यह निंदित करम है।
मृतक समान वन फिरत अनाथ सदा, दीन पशु मारिवो न क्षत्रीको धरम है॥८३॥
वेद औ पुराण वाची, सुनिके विचार करे, ईश्वर रचो है सृष्टि पक्ष दृढ धारे है।
प्रभु के बनाये पशु पक्षी आदि जीव सब, ताको मारी डारे हिय न्याय ना विचारे है।
कुम्भकार पात्र कोउ फोरे तो दिरावे दंड, आप सजावार भये ताको ना निहारे है।
कहे अमीरिख कर्म न्यायतें विरुद्ध देखो क्षत्री पद पायके गरीब जीव मारे है॥

चोरी निषेध—

चोर चित्त चिंत चौक वसी ही रहत भीत परधन देखि के हरण चित्त चहे है।
मालधनी देखी होय कुपित पीटत ग्रही, मारे शस्त्र घाव वध, बंध दुःख लहे हैं॥
नृप कोप तोपसे आरोप के हरे है प्राण, मरिके सीधावे यम लोक दुःख सहे है।
कहे अमीरिख दुःखदाता है व्यसन यातें, समझि विवेको त्यागी ज्ञान उर गहे है॥

परस्त्री गमन निषेध—

परत्रिय संग किये हारे कुल कान दाम, नाम धाम धरम आचार दे विसार के।

लोकमें कुजस नहीं करे परतीत कोउ, प्रजापाल दंडे औ विटंबे मान पारि के ॥
पातक है भारो दुःखकारी भवहारो नर, कुगति सीधावे वश होय परनारि के ।
यातें अमीरिख धारे, शियल विशुद्ध चित्त, तजो कुव्यसन हित-साख उर धारिके ॥

एक २ व्यसनतें नष्ट भये —

जूवा खेली पांडवा गमायो राज साज सब, मांस भखो वक राय नरक सिधायो है
मदिरा प्रसंग सब जादव को नाश भयो, वेश्या संग धम्मिल्ल कुमार नेह गयो है ॥
आखेटतें ब्रह्मदत्त, सत्यघोष ले अदत्त, परदारा संग दशकंध दुःख पायो है ।
कहे अमीरिख घने कुगति परे हैं यातें, व्यसन तजन उपदेश दरसायो है ॥८७॥

अनित्य भावना—

मात पिता नारी सुत, भ्रात परिवार देह, सेना गढ़ कोट पूर, भूमिगत माया है ।
भरित घडित हेम, मानिक जडित पट, भूषण अनेक विधि, विधतें निपाया है ॥
जे जे दृष्ट कृत्रिम सो, अवश्य विनसि जाय अस्थिर अनित्य जिन-वेण दरसाया है
कहे अमीरिख यों विचार के भरत तजी, रिद्ध लहां केवल पद पाया है ॥८८॥

अशरण भावना—

अशुभ असाता उदे, आवे तब चेतनके, मित्र परिवार कोऊ, होत ना सहाई है ।
सब देहधारो वश कालके विहाल भये, तिहु लोक माही याको, फिरत दुहाई है ॥

शरण सहाई जिनराजको धरम एक, त्यागिके भरम उर धारो सुखदाई है।
कहे अमीरिख भाई भावना अनाथी तप संयम कमाई भव भ्रमण मिटाई है ॥८९॥

संसार-भावना —

चारु गति माहे जीव, भम्यो है अनादि काल, लही उंच नीच भव, नाना रूप धारे हैं।
करम आधीन दीन संकट सहे हैं त्योंही, जनम मरण जरा व्याधि दुःख न्यारे हैं ॥
पुद्गल परिवरतन जूं अनंत किये, एक जिनमत भव वासतें निकारे हैं।
या विध विचार पाये शालिभद्र देवगति,अमीरिख धन्ना मुनि मोक्षमें पधारे हैं ॥९०॥

एकत्व-भावना—

आवे जीव एकलो सिधावे फिर एकलोही, भ्रमे जगमाही न सहाई कोउ और है।
संपदा के भागी परिवार जीव सहे आप, सुख दुःख शुभाशुभ संचितके जोर है।
दुष्कृत प्रताप आप कष्ट कुगतिके सहे, सुकृत कमाय करे ऊरध को दौर है।
कहे अमीरिख नमि,-राय यों विचारी चित्त, करम हटाय रिख पाये शिव ठोर है॥९१॥

अन्यत्व-भावना—

चिदानन्द भिन्न पुद्गलसे स्वरूप तेरो, अमल अमित-ज्योति भानु के समान है।
अनंत चतुष्टय विराजे घटमाही यातें, सिद्ध सम आतम अपार ऋद्धिवान है॥
भरमतें भूलिके स्वरूप जड संग राचो, करम कमाय सहे संकट समान है।
यातें मृगापुत्र निजरूप में मगन भये, कहे अमीरिख पद, पाये निरवाण है ॥९२॥

अशुचि-भावना--

परम अशुचि-गेह देह है अनित्य सदा, मल मूत्र व्याधि निंद्य भरित विकार है।
पूतिगंध भर्स्यो कलेवर सप्त धातुमय, कृमि कीट राशि यामें, स्रवे सब द्वार है।।
अधिक असार नाम लेत उपजावे घिन, तप जप क्रिया शिव साधन ही सार है।
अमोरिख सनतकुमार यों स्वभाव लखी, त्यागी ऋद्धि धारी तप पामे भवपार है

आश्रव भावना--

शिवसुख घायक दायक भव भ्रमण को, संसार समुद्र में डुबावनकू घाट है।
आपद निशानी दुःखखाणी गुणहानि करे, कुगति को पथ शिव स्वर्गको कपाट है
याते हित जानो सार संवर पिछानो ज्ञानी, आश्रव को दाटी तब पामें शिवबाट है
कहे अमोरिख भाई भावना समुद्रपाल, करम कलंक मेटी, पाये सुखठाट है ॥९४

संवर भावना--

संवर को क्रिया परमोत्तम बखानो जिन, संवर मारग दुःख दोषको हरन है।
वारण करम दल, ठारन निजातम का, जारन विपद सुद मंगल करन है॥
भव जल तरण हरण अघ पुंज यही सरण सहाई उर सुबुद्धि भरन है।
कहे अमोरिख हरिकेशी ऋषिराय धन्य, संवर आराधी मेट्या जनम मरन है॥

निर्जरा भावना--

निजरा भावना--

निरजरा परम प्रधान जिनशासन में, शिवसुख दाता यही जिनजी वखानी है।
जनम मरण गद औपधी अनूप अघपंक नीर भव तरु छेदन कृपानी है ॥
करम हटावन कटावन जगत बंध, दुःख की घटावन आनन्द की निशानी है।
कहे अमीरिख अरजुनरिख धारी तप निरजरा करी आप भये निरवानी है ॥८६

लोकाकार भावना--

लोकाकार हिये में विचारो शिवचाहो जन, नीचे है नरक सात, दश भौनवासी है
मध्यलोक व्यंतर मनुष्य तिरयंच पुनि, ज्योतिषी असंख्य द्वीप सागर प्रकाशी है ॥
ऊरध कलप अहमिंद्र अनुत्तर देव, सिद्ध शिला उपे वसे, सिद्ध अविनाशी है।
कहे अमीरिख यों सेलकराय रिसि ध्याय, भये शिववासी सबकाटी भवफांसी है ॥

बोधि बीज भावना--

पामिवो सुलभ जग, पुद्गल जनित सुख, दुरलभ एक बोधिवीज समकित है।
याके विन क्रिया सव, अंक बिन शून्य सम, छार पर लींपन ज्यों जानिये अहित है
ये ही भव वासते निकासी शिव-वासी करे, हरे दुःख दोष भरे कोश निज वित्त है
भाई शुद्ध भावना यों, ऋषभजिनंद नंद, पाये अमीरिख शिव संपत्ति अमित है ॥

धर्म भावना--

जग में अनेक भांति, धरम वखाने जन, जाने ना धरम कौन, सत्यमत सार है।
जामें जीवदया मूल, सोही अनुकूल लखि, धारो निज हृदे, दृढ़ निरधार है॥
याके बिन भम्यो भव चक्र में अनादि जीव, यही शिवसुर सुख संपति दातार है।
कहे अमीरिख मरुदेवीजी धरमरुचि भावना आराधो शुद्ध पाये भवपार है॥९९

समुच्चय १२ भावना--

जग है अनित्य नहीं, शरण संसार माही, भ्रमत अकेलो जीव, जड दोउ भिन्न है।
परम अशुचि लखी, देह तजी आश्रवको, संवर निर्जरा हो तें, होय भव छिन्न है॥
चित्तमें विचारी लोकाकार बोधबीज सार, सम्यक् धरम उर, धारो निश दिन है।
कहे अमीरिख बारे भावना यों भाव उर, धारे जिनवेण एन, तांको धन धन है॥

तीन मनोरथ—

कब दुःख दाता यह आरत तजूंगो दूर, कब धन धामतेही ममत मिटाऊँगो।
कब विष तुल्य जानी, त्यागूंगो विषयराग, कब मैं कषाय जीती ज्ञान उर लाऊँगो
कबहो प्रमाद मद छोरिके करूंगो धर्म, स्थिर परिणाम करी, भावना सो भाऊंगो
कहे अमीरिख मनोरथ यों चितारे भवि, धन्य वह दिन घड़ी, सफल कहाऊंगो॥

कब दुःख-मोह त्यागी जगको सनेह उर, धारिके विराग जीतो सेना काम अरिकी
महाव्रत धारी पाप आश्रव विदारी कब, होय जितेंद्रिय रोकूं गति मन्न हरि की ॥
कबहो करूंगो तप सहूँ परीसह दल, अनुभो अभ्यासी मेटुं भीति भव दरी की ।
कहे अमोरिख कब संयमो बनूंगो शुद्ध, चिंते भवि धन्य बलिहारी वह घरी की ॥
कब यह देहको अपावन अनित्य लखी सब भांति यातें मोह ममत उतारूंगो ।
होयके निःशल्य चारों आहार तजूंगो उर, उज्वल समाधि साधी, पातक विदारूंगो
थिर परिणाम करी ध्याऊँगो स्वरूप निज, शत्रु मित्र दोउ एक, दृष्टितें निहारूंगो ।
कब वह दिन घरी आवेगी हमारो धन्य, कहे अमीरिख निज आतम सुधारूंगो ॥
मोक्ष अभिलाषो समदृष्टि जो विशुद्ध चित्त, चिंते मनोरथ मेटी मनकी मलिनता ।
शक्ति अनुसार करे क्रिया रोको आश्रवको, तजी दोष राखे निजगुणमें प्रवीणता ॥
पंकज समान जग भोगतें अलिप्त रहे, तबै महालाभ होय, धरम को वीनता ।
कहे अमीरिख आज ताके होय भवियामें, शिव-वास पामे सबै कर्म करी क्षीणता

गुरु-प्रशस्ति——

स्याद्वाद मत में प्रसिद्ध जैन चक्री सम, भये रिख लवजी सुमग प्रगटायो है
ताके शिष्य सोमजी ता शिष्य रिख कानजी के, नाम संप्रदायमें सुजस सरसायो है ॥
ताके अनुगामी घने कोविद भये हैं पूज्य, सुखारिख स्वामी मत पाखंड हटायो है ।
ताके पद कंजको मिलिंद अमीरिख आज, भव्य प्रतिबोधवेको ग्रंथ यो बनायो है ।

नय भुज ध्यान पक्ष, वर्द्धमान संवत्में(२४२७) मालव सौभाग्यपूर दीनो प्रतिबोधयो
आश्विन पूरण शशी, ग्रंथके उदय उर. शांतता प्रगट भयो पाप ताप रोव यो ।।
किंचित जिनाज्ञाके विरुद्ध पद चरणको,न्यूनाधिक जानो तांहीं गुणी लीजो शोधयो
कहे अमीरिख गुरुदेव की कृपातें आज, पूरण कियो है ग्रन्थ शतकसुबोध यो ।१०६

पद्धरी छन्द--

इक शत पद् मान कवित्त नेक, दोधक चतु पद्धरी छन्द एक।
इह वध सुबोध कीनो प्रकाश, पूरण पीयूप मन सकल आश ।।१०७।।

।। इति सुबोध शतक सम्पूर्ण ।।

।। शुभम् ।

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

विविध-बोध बावनी

॥ सोरठा ॥ शासनपति जिनवीर, धीर धार वंदो सदा ॥
मेट सकल भव-पीर, दीजे अविचल संपदा ॥ १ ॥
सकल पदारथ जान, तीन लोक त्रिकाल के ॥
अविचल केवल भान, उदय करम-तम टालिके ॥ २ ॥
प्रगट करी जगमाय, जिनवाणी मन भावना ॥
तिनको हृदय वसाय, कहूँ बोध हित बावनी ॥ ३ ॥
सुनो भविक हित वैन, नैन ज्ञानके खोलिके ॥
पावोगे चित्त चैन, बोल हृदय में तालि के ॥ ४ ॥
विविध बोध इह माय, समय पाय वर्णन करे ॥
अमृत सम सुखदाय, सुनत हो उर आनन्द भरे ॥ ५ ॥

॥ सवैया तेवीसा ॥

॥ ॐ ॥ ॐ शुभ अक्षर सार सुजाण, पिछान गुरुगम ज्ञान लही है।
पूरव आगम को यही सार सु दूसरो या सम मन्त्र नहीं है ॥
गर्भित है पद पंच अनुपम, सिद्ध त्रिलोक स्वरूप यही है।
अमृत कारज सिद्ध करे सब, या विध श्रीगुरुदेव कही है ॥ १ ॥

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

।न०॥ निशि वासर स्नेह धरी कर सेव, नहीं जगमें गुरुसा उपकारी।
सब भ्रम मिटाय हटाय अज्ञान, जिनागम वेण दिये हितकारी॥
उर काम कषाय को लाय बुझाय, दियो शिव मारग साधन भारी।
मत सत्य असत्य विवेक भयो, रिख अमृत वा गुरु की बलिहारी॥ २॥

॥म०॥ मन धार अनुपम शीख भवी, गुरुदेव दया करिके समझावे।
देव गुरु शुद्ध धर्म पिछान, सुनो जिन वैन सदा हित भावे॥
छोड़ कुपंथ प्रमाद विषय मद, ज्यों उभये भव सौख्य दिखावे।
इस समान ये सीख अमीरिख, मान भवा भव जाल मिटावे॥ ३॥

॥सि०॥ सिद्ध स्वरूप सुचेतन है पर पुद्गल संग मलिन भयो है।
कर्म कमाय भम्यो जगमें बहु देह धरी सुख दुःख लयो है॥
मात पिता सुत भ्रात लिया निज जानी ममत्वमें राचि रयो है।
या विध काल अनंत अमारिख ज्ञान विहीन ज्युं बीति गयो है॥ ४॥

॥ध०॥ धंध तजो सजि साज भलो भजिये भगवंत सदा सुखदाई।
जीवदया नित धार हिये सत वैन मनोहर बोल सदाई
धूलि समान गिनो पर माल लखो तिय वेन धिया अरु माई।
त्यागो ममत्व परिग्रह मोह अमोरिख धर्म प्रधान है भाई॥ ५॥

||अ०|| अपने सम जाण ज्युं जीव सभी सुख चाह करे दुःख से डरते।
जिम कंटक आय चुभे तनके अति व्याकुल हो दुःखको भरते॥
तिम मानि सुजान गरीब के प्राण प्रवीण अनीति नहीं करते।
करुणामय धर्म अमीरिख धारत सो भव सागर से तरते ॥ ६ ॥

||आ.|| आयु असार विचार हिए थिर अंजुलीको नहीं रेवत पानी।
देह उदारिक नाश हुवे निज मानि ममत्व करे अभिमानी॥
काल बली शिर छाय रह्यो थित पूरि भये लहि जावत तानी।
सुकृत साध आराध सुधर्म अमीरिख मर्म पिछान सुज्ञानी ॥ ७ ॥

||इ०|| इंद्र नरेंद्र नमे रवि चंद्र करे नरदेव सुसेव घने है।
केवल ज्ञान रु दर्शन तें सव लोक अलोक के भाव भने है॥
देत वताय सुमारगको अवलंबी भवी भव भीत हने है।
नाथ अनाथन के जिनदेव अमीरिख सेवत काज वने है॥ ८ ॥

||ई०|| इष्ट अनिष्ट को जोग वने तब हर्ष विषाद नहीं चित्त आने।
स्व-पर रूप को बोध जग्यो पंच द्रव्य से भिन्न निजातम जाने॥
धाय समान कुटुम्ब को पालत कर्म के बन्धन को डर माने।
सम्यक् दृष्टि करे शिव-साधन अमृत यों जिन वैन वखाने ॥ ९ ॥

॥उ०॥ उत्तम संग उसंग धरी सजिये सुप्रसंग अनंग निवारो।
ज्ञान वधे रु सधे जिन आग्न अज्ञान कुमति को मूल उखारो॥
शील संतोप क्षमा चित्त धीरज पातक से नित राखत न्यारे।
डारत दुःख भवो भव के रिख अमृत संगत उत्तम धारे॥१०॥

॥ऊ०॥ ऊषर मेह कुपात्र सनेह जुवारी को धन भयो न भयो ज्यों।
जारको सुख रु छारपै लोपन मूढ से गूढ कियो न कियो ज्यों॥
मूरख मीत लवार को सोख अनीति को राज रियो न रियो ज्यों।
सांच विचार अमीरिख धर्म बिना जुग कोटि जियो न जियो ज्यों॥११॥

॥ऋ०॥ ऋद्धि अपार भई घर सूमके जीव जरी सम जानि के पालो।
यत्न करो धरो भूमि के मांहो न खावन खर्च के काज निकालो॥
जन्म गया न लया टुक चैन जु मरण समै पिण संग न चालो।
सुकृत लाभ लिया न अमीरिख हाथ पसारिके जात है खालो॥१२॥

॥ॠ०॥ रीति तजी अनरीति करे जु हिताहित वेन नहीं चित्त धारे।
सत्य असत्य विज्ञान नहीं उर धर्म अधर्म समान विचारे॥
संत छली रु सती-कुलटा खल-पंडित एकही दृष्टि निहारे।
तत्व विवेक न जासु अमीरिख सोही पशु नरके उणिहारे॥१३॥

॥लृ०॥ लहिये शिवसुख अनंत भवी चित्त धारत शीख सदा गुरु की।
खटद्रव्य पदारथ भेद भला कहे राह सदा अमरापुर की॥
परमाद कषाय विकार तजो यह औषध सार मिथ्या ज्वर की।
भवि जीव अमीरिख होय तिन्हें यह लागत ज्ञान तणी मुरकी॥१४॥

॥लॄ०॥ लीन परिग्रह आरंभ माही जिनागमपै चित्त नाहीं दियो है।
कूड प्रपंच कषाय करी ठगि के पर द्रव्य को छीन लियो है॥
राग रु द्वेष प्रमाद में राचि विषय वश विकल होय रयो है।
मानव जन्म अमीरिख पायके सार पदारथ ख्वार कियो है॥१५॥

॥ए०॥ एकन के घर पुत्र भयो तहां आनन्द मंगल रंग वधाई।
रोग वियोग भयो घर एकके रोय विलाप करे मुरझाई॥
जां घर भानु उदे शुभ उत्सव सांझ समे तहां सोग सुनाई।
केत अमीरिख या जगको गति, जानिके भूल रह्यो किम भाई॥१६॥

॥ऐ०॥ ऐ मन मूढ लह्यो भव मानव नाहीं निजातम काज कियो अब।
रात्रि रह्यो अति पातक में भय मौतहुको न धरयो चित्त में कब॥
काल बली गहि लीन अचानक एक न दाव उपाव चल्यो तब।
कोउ न संग भयो जियके धन धान कुटुम्ब धरयो रहिग्यो सब॥१७।

||ओ०|| ओसर आनि बन्यो अति उत्तम, ता पर भी हित नाहीं विचारयो।
आनन्ददाय मनुभव पाय प्रमाद वशे खल व्यर्थ विगारयो।
कीध नहीं अपनातम काम अमीरिख चित्त विवेक न धारयो ॥
सांची भई कहनावत वा नर मूरख रत्न चिंतामणि हारयो ॥१८॥

||औ०|| औषध जास नहीं जगमें नहीं मंत्र उपाव न तंत्र जरी को।
सिद्ध रसायन पारद आदि न दानव देव न जोर हरी को ॥
देत चपेट कृतांत जवे तव चालत ना वश एक घरी को।
कोई उपाय नहीं रिख अमृत जासे मिटे डर काल अरी को ॥१९॥

||अं०|| अंत करे सवही जगको पै कृतांतपै तो किनकी न चली।
नर्क पशु सुर मानव वृन्द मरे तन धूलि में जाय मिली ॥
मन्त्र रसायन आदि उपाय किये नहीं काल की चोट टली।
केत अमीरिख सिद्ध विना सवके संग डोलत काल वली ॥२०॥

|| अः। अभ्र समूह में ज्यों रवि किरण लुकी किमही न परे पहिचान।
गर्भित पुद्गल पिंड में त्योंही अलक्ष अमूरति सिद्ध समान ॥
होय मिथ्यात प्रमाद में रक्त वसुविध वहु उपाय महान।
केत अमीरिख सहज फिरे भव चक्र में जीव अनादि अज्ञान ॥२१॥

|क०|| काम अज्ञान भयादिक दूषण जामें; न पावत मूल में कोई।
केवल दर्शन ज्ञान करी जिन द्रव्य स्वरूप रह्या सब जोई ॥
इन्द्र नरेन्द्र नमे सुरवृन्द जपे भवि सुख लहे अघ खोई।
अमृत देव घणे जगमें पण तारक देव कहावत सोई ॥२२॥

||ख०|| खट् कायके जीव न जानत है शिव साधन को; वहु कष्ट करे है।
धरि ऊर्ध्वबाहु अधोमुख झूलत ताप; हुताशन देह जरे है ॥
अनगालित नीर से स्नान करे, फल फूल सताय के पेट भरे है।
करुणा विन कष्ट अनेक करे रिख अमृत काज कछू न सरे है ॥२३॥

||ग०|| गिने वनितादिक बंधन से पुनि काम विकार लखे जिम नाग।
अनित्य अपावन देह लखे कबहू नहीं नेक धरे अनुराग ॥
गिने दुःखदायक सुख सभी धन धान ममत्व हरे करि त्याग।
रहे निर्लेप सरोज यथा नर जान अमीरिख सत्य विराग ।२४॥

||घ०|| घूमत देश विदेश वृथा धन काज अकाज करे विध नाना।
कष्ट सहे न लहे टुक चैन न खाय कमाय धरे लहि छाना ॥
पुण्य लसे विलसे धन अन्य पै तो संग नाहीं चले एक दाना।
धार संतोष तजी तिसना हित सीख अमीरिख मान सयाना ॥२५॥

||छ०|| नाचत यों भव मंडपमें जु अनादितें मोह-महीप अधीना।
चौगति लक्ष चौरासी भ्रम्यो करिके बहु भांतिके वेश नवीना॥
यों भुगते सुख दुःख घने अबलौं न थको टुक चैन न लीना।
केत अमीरिख चेत चिदानंद देख निजातम रूप प्रवीना॥२६॥

||च०|| चार विधे परखे जिम हेम निघर्षण-छेदन-तापन तीजे।
ताडन चौथे लखे विबुध तिम धर्म परीक्षणमें चित्त दीजे॥
ज्ञान आचार तथा तपस्या गुण जीव दया रसमें चित्त भीजे।
केत अमीरिख राख विवेक तजी अघटेक सदा सुख लीजे॥२७॥

||छ०|| छांड परिग्रह आरम्भ को गुरु सीख सदा चित्त लागत प्यारी।
पंच महाव्रत शुद्ध धरे समिति गुपति दृढ है ब्रह्मचारी॥
आगम 'वेण तणे अनुसार नित्य उद्यम चाह निवारी।
काम-विकार तजे रिख अमृत जान सदा तिणकी बलिहारी॥२८॥

||ज०|| जे जिनधर्म सुराग धरे कर जीवदया मुख झूठ न बोले।
जे तृण मात्र न लेहि अदत्तको देखि त्रिया न कछु चित्त डोले॥
बाह्य अभ्यंतर त्याग परिग्रह जान अनंग विषै-विष तोले।
सुकृत दान क्षमा तप भाव अमीरिख धर्म यही अनमोले॥२९॥

॥झ०॥ झूठी सगाई संसार की चेतन स्वारथिये परिवार मिले हैं।
स्वारथ होय आधीन रहे सब प्रीति भरे कहे बेन भले हैं॥
जो नहीं स्वारथ सिद्ध हुवे वनजारेके बैल ज्यों छांडि चले हैं।
आतम कारज सार अमीरिख ज्यों भव के सब दुःख टले हैं ॥३०॥

॥ञ०॥ या जिन धर्म बिना गति जीवकी काहू भई नहीं जाय उचारी।
राचो रह्यो मन पुद्गलमें अति छाय रही घट भर्म अंधारी।
यद्यपि श्री गुरुके उपदेश-रवि किरणा न करे उजियारो।
तदपि सूझो करे न कभू शिव पंथ पीयूप कहे सुविचारी ॥३१॥

॥ट०॥ टेरत संत प्रवीण गुणी सब ग्रंथ सबे हितको उचरे हैं।
ये जग भोग असार लखी तजिके उर ज्ञान वैराग्य धरे है॥
शील संतोप क्षमा करुणा तप धीरज धार प्रमाद हरे हैं।
धारत धर्म अमीरिख याविध को शिव जात पल्लो पकरे है ? ॥३२॥

॥ठ०॥ ठग वेश विवेक बिना करि के शठ मूरख लोकन को भरमावे।
कोई यन्त्र दिखाय सिखावत मन्त्र स्वरोदे मिलाय के भाव बतावे॥
ज्योतिप औपध सिद्ध रसायन भूमि निधान कही ललचावे।
करि अमृत यों परपंच मृपा नर जन्म पदारथ व्यर्थ गमावे ॥३३॥

॥ड०॥ डोलत है चहुँधा मृग मूढ लखे न सुवास भरी निज पासे ।
त्यों जग सिद्ध मुनि तपसो विन तत्व लखे भटके जु उदासे ॥
आतम रिद्ध अनंत भरो घट ज्ञान जगे विन नेक न भासे ।
केत अमोरिख कर्म कुभर्म तजे ; तवही निजरूप प्रकासे ॥३४॥

॥ढ०॥ ढील करे मत तू छिन की कर ले झट सुकृत लाभ कमाई ।
बैठी एकान्त करी मन ठाम जपो जिनराज सुध्यान लगाई ॥
दान दया तप संजम मारग श्री गुरु सेव करो चित्त चाई ।
अमृत चित्त अलेप रखो नरदेह धरे को यही फल भाई ॥३५॥

॥न०॥ न्याय सिद्धान्त पढ्यो तर्कागम ज्योतिष काव्य वखानत टीका ।
पिंगल छन्द प्रवन्ध रचे श्रुति वेद पुरान को जानत नीका ॥
अमृत ; राग आलापि रिझाय करे व्रत नेम जति तपसो का ।
जीव छकाय के भेद न जानत औगुण एक सभी गुण फीका ॥३६॥

॥त०॥ त्यागी ममत्व सवे जग से वनिता धन धाम बुरे लखि रूठे ।
जाय वसे वन में गहि मौन करे तप योग विचित्र अनूठे ॥
शीत रु ताप वृथा तनु क्लेश सहे अति पै करनी ते अपूठे ।
नेक ; अमीरिख काज सरे नहीं ज्ञान विना सव ही कृत झूठे ॥३७॥

||थ०|| थावर जंगम जीवन को सुख वल्लभ दुःख अनिष्ट लगे है।
प्राण को घात महा दुःखदायक मूढ़ मति हित मानि पगे है॥
नर्क निगोद भमे मरि हिंसक तत्त्व विवेक हिये न जगे है।
धर्म के साधक जीव अमीरिख ऐसे अकाज से दूर भगे है॥३८॥

||द०|| देत है औरन को उपदेश न आप हिये कछु बोध जगे है।
हेतु दृष्टान्त अनेक मिलाय रिझाय के लोक अनीत पगे है॥
अर्थ मरोरी करे विपरीत खुशामदी द्रव्य के लोभ लगे हैं।
पोथी के बैंगन और है अमृत याविध मूरख लोग ठगे हैं॥३९॥

||ध०|| धन धान तजे गृह छोरि भजे जिनराज के नाम लग्यो मन है।
सुध सम्यग् ज्ञान विराग रु औ न करे परमाद इको छिन है॥
निश वासर दुक्कर धारत कष्ट अनित्य लखे मनखा तन हैं।
जिन आन अमीरिख शीस धरे धन है धन है धन है धन है॥४०॥

||न०|| नाद सुनी मृग प्राण गये लखि दीपशिखा शलभादि जरे है।
गंधतें लीन मिलिंद गम्यो तन व्हे रसनावश मीन मरे है॥
स्त्री स्पर्श विषे गज प्राण गये एक एक अधीन व्हे दुःख भरे हैं।
जो भये पंच विषय अनुरक्त अमीरिख तां गति को उचरे है॥४१॥

||प०|| पंचम काल में पाप उदे अवधि मनपरजव ज्ञान जु नांही।
केवल ज्ञानी प्रभु गणराज न पूरव ज्ञान धरा मुनिराई॥
वैक्रिय चारण लब्धि आहारक नाहि जु संशय देत मिटाई।
जास प्रसाद सधे शिवपंथ अमारिख ये जिन वैन सहाई ॥४२॥

||फ०|| फलयुक्त लखी तरु को खग ज्यों तिहां आयके मोद करे मनमानो।
तिम स्वारथ सिद्ध भये परिवार रहे अनुकूल लवे मृदु वानी॥
अफलो तरु जानि विहंग तजे बिन स्वारथ सेण न पावत पानी।
चित्त माहि विचार अमीरिख यों जग तेरो न कोउ सहायक प्रानी ॥४३॥

||ब०|| बालपणो शिशु के सग खेलत ज्ञान विना शठ वादि गमायो।
यौवन अंग अनंग छयो तियके वश व्हे धन लोभ वधायो॥
वृद्ध भयो गद आय अम्या न वदे सिर हाथ घणो पछतायो।
कंत अमीरिख औसर पायके हाथ में सुकृत नाही कमायो ॥४४॥

||भ०|| भ्रमतें गति चार संसार विषे तोही काल अनंत व्यतीत भया।
पुण्य-योग लही भव मानवको कुल उत्तम आरज क्षेत्र लिया॥
तन दीरघ आयु पंचेंद्रिय पूरण साधु-समागम धर्म क्रिया।
इह औसर कंत अमीरिख यों जिन वैन धरो चित्तमें भविया ॥४५॥

।म०॥ मोक्ष मिले नहीं गायन से शिव नाहीं मिले तन भस्म रमाये ।
छांडिके गेह वसे वनमें नहीं मोक्ष मिले बक-ध्यान लगाये ।
चारहु धाम भ्रमे न मिले शिव नाहीं मिले सुख मौन रहाये ।
कंद भखे न मिले शिव अमृत मोक्ष मिले मनको वश लाये ।४६।

॥य०॥ यह पाय दयामय धर्म सुजान अजान हुई पर प्राण हरे क्यों ? ।
नर देह से नेह करे निशवासर दौलत देख गुमान धरे क्यों ? ॥
मद मोह ममत्व कषाय विकार प्रमाद वशे अघ खान भरे क्यों ? ।
इम केत पीयूष पीयूष तजी धरि हूँस विषै विष पान करे क्यों ? ॥४७॥

।र०॥ राग रु द्वेष नहीं पक्षपात सभी जग जीवन को सुखदानी ।
युद्ध सिंगार न हास्य कथा विषयादिक को उपदेश ना जानो ॥
शान्त विराग दया रस पूरण नाहीं विरुद्ध परस्पर ठानी ।
आलख अमृत या जग में सब से अति उत्तम है जिनवानी ॥४८।

॥ल०॥ लाल खिरे मुख लाज गई चित्त लोभ बध्यो ललना विमुखी है ।
लीलरी देह पडे लहि लाकड़ी लोक हँसे लड़े होय दुःखी है ॥
स्वांस रु खांस ग्रस्यो तन धूजत चेत नहीं परिवार रुखो है ।
वृद्धपणे माही कष्ट घने रिख अमृत श्री जिनराज सुखी है ॥४९॥

||व०|| विषयादिक सौख्य बुरे दुःखदाय तथापि रुचि करि मानत नीके।
तिनके वश होय अकाज करे न धरे धर्म अनुकूल जी के।
वह मात पिता वनितादिक बांधव होत न कोउ सहाय किसी के।
इम केत अमीरिख चेत जिया तज दूर लखी जग के सुख फीके ॥५०॥

||श०|| शुभ बीति गई लरिकाई कछु शिशु संग अजान व्हे जानो नहीं।
तिम खोई जवानो कुसंगति में छिन एक सुसंग सुहानो नहीं ॥
जिन धर्म श्रद्धा तजि दिनमें मूढ विषै विष खाय अघानो नहीं।
नरजन्म अमीरिख व्यर्थ गयो पिण धर्म को लाभ कमानो नहीं ॥५१॥

||प०|| पोडश वर्ष लौं गोकुलमें नंद गोप गृहे रहे गुप्त मुरारी।
मंगल गीत ओछाव भयो नहीं धेनु चरात फिरे धनु धारी ॥
मरण भयो वनमें तित कोउ न शोक कियो हरि नाम पुकारी।
केत अमीरिख कर्म बली ढिग या जग कौन बच्यो अवतारी ॥५२॥

||स०|| सवे जग जाल संसार अनित्य विचारी सुजान तजे सुख सारे।
गहे शिवमार्ग विराग रहे जग-राग दहे अघ-दाग निवारे ॥
करे नहीं नेह कभौं तनतें तप संजम से निज काज सुधारे।
तजे वनिता धन धाम अमीरिख सत्य वही गुरुदेव हमारे ॥५३॥

||ह०|| हे मतिमंद अजान विचार मनु-भव पाय कहा करिवो।
सार असार पिछानि को मारग तत्त्व-विवेक हिये धरिवो॥
देव अदोषो गुरु निरलोभी दयामय धर्म सु आचरिवो।
दाव मिल्यो लिखेको अमोरिख नेक प्रमाद नहीं करिवो ॥५४॥

||क्ष०|| क्षत्रिय को मर्याद यही परजा-शरणागतको प्रतिपाले।
पीठ दे प्राण बचाय न भागत नारीके ऊपर घाव न घाले॥
कायर व्हे तृण ले मुखमें अरु दीन अनाथपै तेग न झाले।
उत्तम क्षत्रिय शूर सही रिख अमृत नीतिके मारग चाले।५५।

||त्र०|| तृषणा वश है जग जीव सभी हित काज अकाज कछु न विचारे।
धन सहस्र हुवे तो चहे लख कोटि असंख्य अनंत हि चाह प्रसारे।
जिम इंधन डारत वन्हि वढे तिमही तृषणा धन चाह वधारे।
चित्त धारत ज्ञान संतोष अमिरिख तो जियके सब काज सुधारे।

||ज्ञ०|| ज्ञान क्रिया विन मोक्ष मिले नहीं श्रीजिन आगम माही कही है।
एक ही चक्र से नाहीं चले रथ दो बिन कारज होत नहीं है।
ज्ञान है पांगुलो अंध क्रिया मिल दोनु कला करि राज ग्रही है।
कीजे विचार भली विध अमृत श्रीजिन धर्म को सार यही है ॥५७॥

॥श्री०॥ श्री जिन शासन है अघनाशन ज्ञान प्रकाश तले उर धार।
छोरि मिथ्यात्व कुघात अनादि निजातम रूप लखो सुविचार॥
आगम वैन पिछान गहो उर दर्शन ज्ञान चरित्र उदार।
बैठत धर्म जहाज अमीरिख होय सुखे भवसागर पार।५८।

॥ कलश गीता छन्द ॥

निधि पक्ष शिव पथ अयन संवत (२४२९) वर्द्धमान जिनेश के।
जावद रही पूरन किये यह छन्द हित उपदेश के।
पद वर्ण ओछो अधिक देखो, महिर आनि सुधारिवो।
मिच्छामि दुष्कृत होउ मुझ जिन वचन अनमिल जो कयो॥५९॥
समुदाय नायक पूज्यश्री रिख कान्हजी जस विस्तरयो।
श्री सुखारिखजी गुरु अति उपकार मुझ ऊपर करयो॥
तस चरण रज किंकर, अमीरिख ज्ञान-मति हुलसावनी।
भवि-जीव हित कारण रची, यह विविध-बोध सुबावनी॥६०॥

सोरठा

जय जय श्री अरिहन्त, सिद्ध साधु जिन धर्म यह॥
जिनवाणी जयवन्त, मंगल उत्तम शरण शुभ॥६१॥

॥ इति विविध–बोध बावनी संपूर्ण ॥

चौरासी उपमा युक्त मुनि गुण बत्तीसी

॥ दोहा ॥ श्री वर्द्धमान जिनेश्वरु, त्रिजग-तारण देव ॥
मन-वच-काये भावसु, ध्यान धरूं नितमेव ॥ १ ॥
अनुयोग द्वारसें, सामायिक चउभेद ॥
भाखी दीनदयालजी, सुणजो धरी उमेद ॥ २ ॥
समकित सामायिक प्रथम, दूजी श्रुत पहिचाण ।
देश व्रती तीजी कही, सर्वव्रती गुणखान ॥ ३ ॥

चार सामायिक-लक्षण—

सांचा देव गुरु धर्म तीन तत्त्व शुद्ध भाव, सद्दहणा रूप सामायिक समकित है ।
नव तत्त्वादिक ज्ञानरूप श्रुत समभाव, देशव्रती किंचित् सावद्यसे विरत है ॥
सरव सावद्य जोग त्यागके श्रमण भये, साही सर्व व्रती सर्वदासे भयभीत है ।
सर्वव्रतीको कही उपमा दुवादस जिन, अमोरिख कहे धारया होय जग जीत है ॥१॥

दोहा—

उपमा दोय प्रकार है, देश सर्व परकार । देशथकी इहां वर्णवूं, सांभलजो चित्त धार ॥

समुच्चय उपमा—

प्रथम सरप[1] गिरि[2] अगन[3] समुद्र[4] जाण. पंचमी आकाशको[5], उपमा पहिचाणिये ।
तरुवर[6] भ्रमर[7] ने मृगको[8] अष्टमी कही, पृथिवी[9] कमल[10] रवि[11], एकादश ठानिये ॥
पवनको[12] उपमा सो, वारमो प्रकाशी जिन, एक एक भेद सात सात सुवखानिये ।
कहे अमोरिख सव उपमा चौरासी होय, तांही सुण सुगुण विवेक मन आनिये ॥२॥

सर्प[1] की उपमा—

जैसे अहि अन्यकृत स्थानकमें वास करे, तैसे मुनि निरवद्य ठाममे रहत है ।
अगंधन अहि जिम, संग्रहे न वम्यो विप तैसे भोग त्यागके, न ग्रहण करत है ॥
विल माहे नाग सम, पैसे तैसे तपाधन, मोक्षपंथ सरलसे, चरण धरत है ।
विलमें पन्नग ज्यों नीरस रस लूह तुच्छ, राग द्वेप तज आर शुद्ध आचरत है ॥३॥

कंचुक तजीने अहि भागत न देखे फिर, तैसे मुनि भोगादि संसार से डरत है ।
उरग ज्यों कंटकादि तज के चलत पंथ, तैसे यति इरजा सहित विचरत है ॥
विपधर देखो सहूँ होय भयभीत चित्त, तैसे ऋषिराय देख पाखंडी डरत है ।
अमीरिख कहे मुनि टालत करम विप, वन्दो भव्य प्राणी भव भय को हरत है ॥

२

पर्वत की उपमा—

जैसे गिरि नाना भांति औषध सहित होय, तैसे चीरासवादिक लब्धिधारी संत है।
डुंगर ज्यों वाय करो होवे न चलित कदा, तैसे आया परीसह अचल सहत है॥
जैसे नग जंतुको आधार भूत होय तैसे, संतजन खटकाया जीवन के मित है।
जैसे गिरिवर सेतो निकले नदी प्रवाह, तैसे नयादिक ज्ञान सरिता चलत है॥५॥
जैसे गिरि मेरु सब डुंगर से ऊँचो तैसे, मुनि वेष लोक मांही उत्तम वदंत है।
जैसे नगराज मणि रतन से भरयो तैसे, ज्ञानादिक रतन से भरे गुणवन्त है॥
जैसे परवत महासुन्दर शोभित होय, तैसे अणगार ज्ञान गुण से दीपन्त है।
अमोरिख कहे चित्त धार भव्य प्राणी सीख, ऐसे गुणवंत नम्या होय दुःख अंत है॥

३

अग्नि की उपमा—

अगनि ज्यों इंधन से होय न तृपत कदा, मुनि सूत्र भणतां न तृपत लगार है।
जैसे आग प्रज्वलित होय दीप्त तेजवन्त, संत तप गुणे करी दीपत अपार है॥
जैसे तेउ काष्ठादिक बालत है तैसे भिक्खु, तप आग कर्म काष्ठ बाली करे छार है।
जैसे आग उद्योत करत तैसे अनगार, धरम उद्योत करे टाले अंधकार है॥७॥
जैसे अग्नि धातुन के मैल को हरत तैसे, जग जीव घट मिथ्या मैल देत टार है।
जलण ज्यों धातु धूल दोउको करत भिन्न, तैसे भिन्न करे जीव कर्मको विकार है॥

आग काचा भाजनकु करत है पाका तैसे, जीव धर्म माडो करे पाका अनगार है।
अमीरिख कहे ऐसे संत जगमांही तांको, करे नित सेव सुखे होय भवपार है । ८।।

४
समुद्र की उपमा—

जैसे नदीपति जल गहेर गंभीर अति, तैसे सर्वव्रती गुण गंभीर पिछाणजी
जैसे रतनागर में रतन आगर होय, तैसे संत पास ज्ञान दिक रत्न खानजी ।
जैसे सिंधु तजे न मर्याद तैसे संत जन, आगम मर्याद नहीं तजे प्रभु आणजी ।
समुद्रमें जैसे आय मिले हैं नदी अनेक, तैसे संत पास नाना भांत बुद्धि जाणजी ।।
दधि जल करत किलोल न मलिन होय, तैसे न मलिन मति करे जो वखाणजी ।
सागर ज्यों कोई काल झलके न लेशमात्र, तैसे नहीं झलके करीने क्रोध मानजी ।
उदधिको जल जैसे नित्य निरमल रहे, तैसे यति-मति निरमल गुण नाणजी ।
अमीरिख कहे नित मन वच काय करी, कीजे संत सेव तासु होवे निरवाणजी ।।

५
आकाश की उपमा——

आकाश ज्यों निरमल होय तैसे संत चित्त, अंतरंग भाव सदा होवे निरमल है ।
आलंबन रहित अंबर जैसे जाणीयत, तैसे निरालंब संत रहत अचल है ।
धर्मास्तिकायादिक द्रव्य को भाजन नभ, तैसे पंच आचारादि पालत सकल है ।
जैसे व्योम ताप करी नहीं कुमलाय लेश, नहीं कुमलाय संत निंदा किया खल है

गगन ज्यों अति वरसात हुए भींजे नहीं, तैसे कोधा कीरति न भींजे चित्त अंस है।
अरूपी आकाश नहीं छेदन भेदन होय, तैसे निज ज्ञान को न होवत विध्वंस है॥
नभको न अंत तैसे संत के अनंत गुण, पावे नहीं पार करे सुगुरु प्रशंस है।
अमीरिख कहे प्राणी मन भाव शुद्ध आणो, कीजे तांको सेव दूर होय कर्म वंस है॥

६
वृक्ष की उपमा—

जैसे तरु शीततापसहे पर छांह करे, संत परीसह सहे करे अन्य छाय है।
जैसे वृक्ष सेवन से मिलत है फल सार, तैसे संत सेव किये ज्ञान फल पाय है॥
जैसे तरुवर बहु पक्षीको आधारभूत, तैसे जग जीव को आधार भूत थाय है।
छेदे कोई फरसी से वृक्ष नहीं रोष धरे, तैसे वध किये संत रोष नहीं लाय है॥१३
चंदनादि लेन किया तरु न संतुष्ट होय, तैसे किये लेपन संतुष्ट न कहाय है।
तरु फल देई नहीं मांगत है दाम कछु, संत ज्ञान देई लोभ नहीं चित्त चाय है॥
वेल से वीटाणो तरु सूखत न छांड़े नेह, तैसे धर्म प्रीति नहीं तजे प्राण जाय है।
अमीरिख कहे ऐसे संत गुणवन्त नित, कीजे तांकी सेव मिले मोक्ष सुखदाय है॥

७
भ्रमर की उपमा—

भ्रमर ज्यों पुष्प रस पीए नहीं देवे पीड, तैसे ग्रहे आर देवे खेद न दातार को।
जैसे अलि दे मकरंद न सनेह धरे, तैसे संत दातासु न धरे चित्त प्यार को॥

फूल फूल फिरे अलि करत गुंजार नाद, तैसे मुनि गाम २ करत विहार को।
अति रस मिले नहीं भ्रमर ग्रहण करे, मुनि न ग्रहण करे मिले अति ओर को ॥

जैसे मधुकर विन नोत्या आवे बागमांही, आवे अणगार विन नोत्या गृही द्वारको
जैसे अलि केतकी के संग अति नेह धरे, तैसे मुनि नेह धरे धरम विचार को ॥
षटपद काज नहीं करत है वाड़ी बाग, आहारादि किया नहीं योग अनगार को।
अमीरिख कहे मुनि करम कलंक दहे, संजम सेहरो बांध वरे शिव नार को ॥१६॥

मृग की उपमा —

जैसे मृग सिंह देख पावत अधिक त्रास, तैसे मुनि पावे त्रास देखी कर्म फंदसौं।
जैसे केहरीको लंघ्यो घास नहीं खाय मृग, तैसे सदोषो आहार ग्रहे न स्वछंदसौं ॥
जैसे मृग आणो भय रहे नहीं एक ठाम, तैसे मुनि रहे न डरत प्रतिबन्धसौं।
कुरंग ज्यों रोग आये करत न प्रतिकार, सावद्य दवा को तज रहत आनंदसौं ॥१७

रोग आये जैसे मृग वसत है वृक्ष मूल, तैसे आया रोग मुनि रहत एकांत है।
मृग रोग आया नहीं वंछे परिवार साज, तैसे साज स्वजन को चाहे न महंत है॥
रोगादिक गये तजे वृक्ष मूल जैसे मृग, तैसे मुनि रोग गये सुखे विचरन्त है।
अमीरिख कहे धन ऐसे संत शूर वीर, करम रिपुको तजी करे भव अंत है ॥१८॥

९
धरती की उपमा—

सहत फरस सब नरम कठिन भूमि, तैसे स्पर्श खेद सब सहे मुनिराज है ।
धन धान आदि करी पृथ्वी पूरण भरी, तैसे मुनि सम संवेगादि गुण साज है ॥
पृथ्वी ज्यों बीजादिक उत्पत्ति को कारण है, तैसे मुनि स्वर्ग मोक्ष सुखके समाज है
धरणी ज्यों शीत ताप सहत अनेक विध, तैसे मुनि परीसह सहे शिव काज है ॥
पृथ्वी को खोदत न काहूपै पुकारे जाय, मुनि को मारत नहीं बोले वेण, गाज है ।
उरवी कादव नीर सबको सोषत जैसे, संग शोष रागद्वेष लहे शिवराज है ॥
प्राण भूत जीवको आधार भूत होय धरा, संत है आधार सब जीव सिरताज है ।
अमोरिख कहे भवि ऐसे को शरण गहो, तरण तारण मुनि तारे ज्यों जहाज है ॥

१०
कमल की उपमा—

जल से कमल जैसे रहत अलिप्त सदा, तैसे मुनि लिप्त नहीं काम भोग नीर से ।
नीरज पवन करी पंथी को शीतल करे, भवि चित्त शांत जिन वचन समीर से ॥
मकरंद गुणयुक्त होवे जैसे शतपत्र, तैसे गुणयुक्त होवे क्षमा शील धीर से ।
रवि शशि देख कंज होवत विकास तैसे, गुरु मुख देखी होय प्रफुल्ल शरीर से ॥२१॥
सरोज हमेश जैसे रहत हरित अंग तैसे संत धरम में लीन हो रहत है ।
चन्द्र सूर सनमुख रहत है पद्म जैसे, तैसे जिनवेण सनमुख हो वहत है ॥

जलज उज्वल नित रहत है निरमल, मुनि धर्म-सुकलसु उज्वल कहत है।
अमीरिख कहे ऐसे संत को त्रिकाल धोक, ध्यानरूप आग कर्म वनको दहत है॥

११
सूर्य की उपमा—

जैसे रवि करत प्रकाश तैसे संतजन, जीवादिक भाव को प्रकाशे अवदात है।
दिनकर देख होय प्रफुल्ल कमल वन, तैसे मुनि देख भवि चित्त हरखात है॥
भानु के प्रकाश ग्रहादिक ज्योति मंद होय, मुनि भये प्रगट पाखंड दब जात है।
उदे भये सूरज करत अंधकार दूर, तैसे गुणवंत दूर टालत मिथ्यात है॥२३॥
दिवाकर तेज करी होवत जाज्वल्यमान, तैसे मुनि ज्ञान गुण तेजसु विख्यात है।
अगनि की ज्योति मंद होवत दिनंद उदे, मुनि आये मिथ्यामति मान जसघात है॥
अनुदिन किरणा करीने होय भानु तेज, तैसे मुनिराज ज्ञानादिक गुण सात है।
अमीरिख कहे मुनि टालत करम दल, निज गुण प्रगटाय होय जगत्रात है॥२४

१२
पवन की उपमा—

सर्व ठाम जावत पवन न स्खलित होय, मुनि सर्व ठाम जाय उगर विहारी है।
वायु ज्यों रहत निशदिन प्रतिवन्ध विना, तैसे मुनि तजे प्रतिवन्ध गुणधारी है॥
लघुभूत होय वाय तैसे गुणवंत संत, द्रव्य उपधि से भाव रागद्वेष वारी है।
वायु जैसे घर करी रहे नहीं एक ठाम, तैसे घर करी नहीं रहे अनगारी है॥२५

पुष्प की सुगन्ध तस वायु विसतार करे, मुनि चउ तीरथ के गुण विसतारी है।
राजादिक रोके नहीं रेवत समीर जैसे, तैसे मुनि रहे नहीं मर्यादा निवारी है॥
उष्णता को करत शीतल ज्यों पवन वेग, क्षमा रूप वायु से कषाय ताप टारो है।
जनम मरण तजी पावत अचल गति, अमीरिख कहे नित्य वंदना हमारी है ॥२६

२७
समुच्चय मुनि-गुण--

पाले पंच महाव्रत जीते पंच इंद्रियों को महा दुःखदाय चार कषाय निवारां है।
भाव जोग करण सत्य क्षमा ने वैरागवंत, मन-वच काय सम ज्ञान के भंडारी है॥
दर्शन चारित्र जाके संपूरण गुण होय, सहे सम वेदनी मरण दुःखभारी है।
अमीरिख कहे गुण सत्तावीस धारी संत, सदा ही त्रिकाल ताकूं वंदना हमारी है॥
असंजम बंध तज धारत रतन तीन, जोग शल्य दंड तीन गारव निवारां है।
विकथा अशुभ ध्यान टालत धारत शुभ, क्रिया-काम गुण छांड सुमति सुधारी है
खटकाय पाले तीन टालत अशुभ लेश्या, भय मद टाल नववाड ब्रह्मचारी है।
नव तत्त्व जाण नहीं करत निदान नव, अमीरिख कहे नित्य वंदना हमारी है॥
क्षमादिक दशविध धारत धरम शुद्ध, प्ररूपत श्रावक की पडिमा इग्यारी है।
पढत इग्यारे अंग भिखुकी पडिमा धार, बारे विध करे तप दुक्कर करारी है॥
तेरे किरिया कांठिया टाल पाले समूर्छिम, चउद पूरव ज्ञान भणे सुविचारी है।
परमाधामी से डर पालत जिनंद आण, अमीरिख कहे तांकु वंदना हमारी है॥

सोले कला पूरण टालत है कषाय भेद, संजम पालत स्थान अष्टादश टारो है।
पाप सब करे दूर न्याय कथा धारे उर, असमाधि सबल दोष परिहारो है॥
बावीस परीसा जीत विषय न आणे चित्त, भणे दूजो अंग जिनराज ध्यानधारो है।
भावना पचीस भावे बारत हैं क्रिया दूर, अमोरिख कहे तांकु वंदना हमारी है॥
दशाकल्प व्यवहार धारे गुणवंत संत, आचार कलप साध पाप बंध वारी है।
महामोहनीय स्थान तज गाव सिद्ध गुण, जोग संग्रहीत धारे विनय विचारी है।
पालत आचार वरजत दूर अनाचार, सेतालीस दोष टाल विशुद्ध आहारो है॥
अमोरिख कहे दूर तजत ममत मोह, सदाही त्रिकाल तांकु वंदना हमारो है।
ऐसे गुणधारी उपकारी टाले करमाकुं, तारे भवि जीव निज आतमको तारी है।
चौरासी उपमा कही अनुयोग द्वारमाही, ऐसे गुणवंत संत होय अविकारी है॥
ऐसे गुण हीन होय भारके वहणहार, द्रव्यलिंग सरे नहीं गरज लगारा है।
रसना है एक संत गुण हैं अनंत धार, अमोरिख कहे कैसे कहूँ मैं उचारो है॥३२

सवत एगुणवीस एकावन साल माही, महाविद दशमी सुवार है आदीत को।
पीपलोदा माही मुनि गुण के बखाण किये, होवे बहुलाभ भवि वंदो धार चित्तको
जिनाज्ञा विरुद्ध होय मिच्छामिदुक्कडं तस्स, श्रोता चूक होय तो सुधारो आणी हितको
गुरु सुखारिखजी पसाय कहे अमोरिख, गुणि गुण गावे सुणे लहे जग जीतको॥

॥ इति श्री चौरासी उपमा युक्त मुनि गुण बत्तीसी सम्पूर्ण ॥

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

एकल विहारी मुनि हितशिक्षा चालीसा

शार्दूल विक्रीडित—

वन्दों श्री जिन वीर धीर हितसे वाणी जिनों की सिरे ।
सारंभो सपरिग्रही गृहपती नेश्राय ताके फिरे ॥
पासत्था अनदर्शनी सम गिणो स्वच्छन्दचारी मुनी ।
तांके लच्छ प्रतच्छ स्वच्छ श्रुत से बोलूं गुरूसे सुनो ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

आचारांग के पांचमें, प्रथमोद्देशक धार ॥
वीर प्रकाशित भाव को, कहूं करिके विस्तार ॥ २ ॥

घनाक्षरी कवित्त—

त्याग घर नारी गुरुदेव से सिखा उपारी, अविनय कारी गुरु सीख नहीं धारी है।
महा अहंकारी क्रोध भारी मायाचारी ढोंगी लोभ अधिकारी पाप इष्ट दुराचारी है
दुष्ट परिणामी दुष्ट करमी हिंसक धूर्त, इच्छा मिच्छाकारो रस वश अविचारी है
अमृत उचारी नहीं संशय लगारो घणे, औगुण को धारी साध एकलविहारी है ॥३

॥ दोहा ॥

दीपक आतम धर्म हम मिथ्या कर वकवाद ॥
पाप छिपावे कपट करि, महा अज्ञान प्रमाद । ४ ॥

घनाक्षरी –

विपय भिखारी नारी जात बातकारी, महा अघी व्यभिचारी दुराचारी कलाधारी है
तंत्र मंत्र कारो ठगो परिग्रह धारी अघ ओघको अहारी छिप रेल को विहारी है ॥
लोक लाज सारी ही विसारी धर्मनीति न्यारी, दोऊ भवहारी कुगतिको अधिकारी है
महागुन्हेगारांपै डरत ना अनारी भारी प्रभु आण टारी भयो एकल विहारी है ॥५
वेपको लजावे गाम देशको लजावे ज्ञाति जाति को लजावे मात तातको लजावे है ।
गच्छको लजावे धर्म स्वच्छको लजावे गुरुदत्त को लजावे मत पक्षको लजावे है ॥
इष्ट को लजावे जनशिष्ट को लजावे जैन वैन ऐन कैन सैन सब को लजावे है ।
मिलतां लजावे तांसे अमृत सुनावे भ्रात, मनको मुंडाय गुरु पास क्यों न जावे है
छोड घर दारा धन सारा परिवारा लखि जगको असारा गुरु चर्ण शिरधारा है ।
संजम दुधारा विपै जीतन करारा खार द्वेप क्लेशधारा किया अलग विहारा है ।
मत्त मतवारा रति अघमें अपारा झूठ कपट भंडारा व्रत भंजन हुश्यारा है ॥
अमृत उचारा हय मत्त वेल गाम वारा एकल विहारा जिनशासनसे न्यारा है ॥७

रचयिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

॥ दोहा ॥

अपछंदा परिवार को, छोड़ अकेला होय ॥
कौन कौन अवगुण बढ़े, कहूँ सुनो सब कोय ॥ ८ ॥

घनाक्षरी--

एकल विहारी देखि तुरत ही पूछे लोग, क्रोध करी तांसे लड़े बोले वेण खारा है।
वंदना न करे बड़बड़े अहंकार भरयो, अधिक कपट जाल लोभ का पसारा है॥
आरंभमें लीन संचो करवा प्रवीन घणो, खान पान भोग रोग लंपट अपारा है,
मन परिणाम रहे मलिन अमृत सदा, एकल विहारो जिनशासन से न्यारा है॥
धूरत मिलापी मृदु मधुर प्रलापी वर रागको अलापी पेठ लोकमें जमावे है।
मैं तो तपधारी हूं आचारी गुरु साध सारे शिथिल आचारी भारी मोकोना सुहावे है
रखे कोई देखे मेरे अनाचार यों विचार, आजीविका काजे कछू डरसे लजावे हैं।
अज्ञान प्रमाद दोप पोप पुष्ट काया करे, एकलके औगुण यों प्रगट लखावे है ॥१०
चाले आप छांदे केइ भांत कर्म बांधे विनयादि नहीं सांधे खांधे आपणे नचीतजी
मोटो अविनीत पीत भागल निलज्ज चित्त, त्यागी धर्मनीत रीत धारी विपरीतजी
छांडी लोकलाज को अकाज करे नाहीं डरे, लोकसे लड़े है बड़े कड़े वाल मीतजी
आचारांग पंचमे अध्येनके उद्देशे पेले, अमृत जिनेंद्र वाणी धारो धरी प्रीतजी ॥११

ठाणा अंग माही कह्यो एकल विहारी तप, आठ गुणधारी होय लायक आचारी है
श्रद्धामें है सेठो नहीं देव भी डिगाय सके, सत्यवादी प्रज्ञावंत न्यायी सुविचारी है ॥
श्रुतवंत जाने पूर्व नवमाको तीजी वत्थु, शक्तिवंत तपस्वी कलह को प्रहारी है ।
धैर्यवंत वीर्यवंत प्रभुवेण गुरु केण, अमृत या ऐन सैण सोही अधिकारी है ॥१२

आचारांग पाचमें अव्यक्त व्यक्त सूत्र वय चौभंगी विचार चित्त धार साध वावरे
विचरत एकलेको घणी असमाधि होय, परीसे सहन दोरे जाने ना उपाव रे ॥
वीर कहे शिष्य उपदेश ये आशीस मेरी, लोजे मन मोड़ी गच्छ छोड़ी मतो जावरे
आगमकी वाणी हित मानीके सुज्ञानी साधु, अमृत विवेक धारी अप्पा समभावरे

आचारांग पाचमे के चउथे उद्देसे भाव, उपसर्ग पीडा होय दाखूं विसतार के ।
सास खास वात ज्वर उपजे अधिक रोग, वृद्धपणो आया रहे कैसे मन मारके ॥
होवे विचलित परिणाम केते संजम से पतित हो जाय डूब जाय भव हार के ।
अमृत जिनेंद्र कहे सूत्रमें प्रगट पाठ, और भी अनेक दोष एकलविहारी के ॥१४॥

ताव चढि आवे मुख बोल्यो नहीं जावे घणो जीव घबरावे दाह प्यास भी सतावे है
विमन हो जावे हाथ पाव सड़ जावे कभी, वायु भडकावे तब कौन काम आवे है
औषध को लावे कौन करावे निहार आर उठ्यो बेठ्यो जावे नहीं मन पछतावे है
अमी समभावे दुःखपावे क्यों सीदावे भ्रात,मनको मुंडाय गच्छमाही क्योंन जावे है

कर्म जोग आय कभी श्वान डस जाते नारू, जानू डमरूको रोग वाये अकडाते है।
दुःख ना खमाय तव कौन हो सहाय तन, साता उपजाय धर्म संजम पलाते है ॥
सागारी लजाते मन औषध खिलाते आर पाणी भी कराते साधपणो उठि जाते है
माठे ध्यान माही मरी कुगति सिधावे ताको, अमृत चेतावे,मन क्यों ना समभावे है

वामा वतलावे तासे वाते लग जावे और चाले चढ जावे सव लाज विसरावे है।
महाव्रत जावे महा विषय वधावे छिप वेश्या घर जावे ताको कौन हटकावे है॥
रोग लगि जावे पाप वात प्रगटावे पास वैठते लजावे लोक नाहीं वतलावे है।
माठे ध्यान माही मरी कुगति सिधावे ताको, अमृत चेतावे मन क्यों न समभावे है

कोई साधु साथ नहीं मिलावे स्वभाव नेक,कोई साधु साथ नहीं मनको मिलापी है।
पाले ना आचार करे कपट अपार देवे साधु शिर, आल असमंजस प्रलापी है ॥
क्रोध मान कपट प्रमाद मिथ्यावाद अंग, आलसी अपार अनगार वन्यो पापी है
गच्छ छोड़ गच्छे फिर एकलो स्वच्छंद मंद, अमृत विसार वीर आणाको उत्थापी है

करत विहार कोई पूछे नरनार सव छोड़ परिवार को क्यों आतम विगोई है।
कोई वोले सूधो कोई क्रोध में धमाय जाय, मुखको विगार तकरार करे कोई है ॥
कोई निज दोष ढांके औरमें वतावे चूक, लोक लखि लेत गुन्हेगार यार योही है।
अमृत विचारया विन न्यारा हो सिधारया तप संजमको हारया थे विगारया भव दोई है

पले न आचार पोते होते गच्छ बार लाज. समकित राखे दोष आपको सुनावे है।
कहे गुणवाद गच्छ गुरु साधु आछे सब, कोउको न काढे दोष रोष ना जनावे है॥
मोह उदे हुवा पीछे चलावे कपट झूठ, बोलके पलट जाय औगुन भी गावे है।
करम बंधावे मरी माठी गति जावे भव भ्रमण बधावे जीव घणो दुःख पावे है॥

कोउ साधु अविनीत गुरुपै लगे न चित्त चाले विपरीत लड़े बोलत कुवाचा है।
और पास जाय रहे सहे है अनेक बोल, गुरु पास क्यों न निभ्यो हमें आय जाचा है।
पीछा गुरु पास आया तोभी बोल सहे भाया, क्यों न ठेरा जो तूं गुणवंत संतसाचा है।
अमी हितवाचा मन काचा तो पले न व्रत, एकलके मुखे दोनों ओर से तमाचा है॥

साधु है अकेलो जानी वंदना न करे ज्ञानी, घर आया भावसे न वस्तु वहिरावे है।
ताके छल छिद्र साधु उत्तमकी निंदा करे शंका भरे नाहीं डरे भोलाने बेकावे है॥
दग्धबीज साथी नहीं लागे उपदेश लेश, संघ में कलेश करी द्वेष को वधावे है।
समकित दाता गुरु जाणी उपकारी भारी, अमृत विचारी गुरु पास क्यों न जावे है?

अच्छी कुलवान नारी बिगड़ी कुसंगधारी, चाहे सो विचारो कोई मिले साथवारी है।
करे मनधारी न डरात व्यभिचारो तैसे, एकल विहारी चाहे साथ साताकारी है॥
धृष्टता अपारी सब अक्कल विसारी फिरे, ढोर जो उजारी सहे मार कष्ट भारी है।
साधु मानी आदर दे वांदे तो मिथ्यात बधे, धर्ममें पड़े है फूट अमृत उचारी है॥

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

उत्तराध्ययन चौथे आठमी गाथामें देख, छांदो रोक्या विना नहीं मोक्ष मिले भ्रातजी
नटविट चोर व्यभिचारी ज्यों मिलापी तैसे, एकल भी आपणी वधारो चाहे न्यातजी
एकल से मिले एक देख हरखावे अति, गूंथे है अनेक जाल करे गुप्त वातजी ।
संगसे वैराग्य घटे श्रद्धा विपरीत होय, वंदना करत लागे अमृत मिथ्यातजी ॥
चोरी जारी खूनी तांको राजा अपराधी जाण, देशमे निकाले मिले चोरां साथजायके
चोर भी खुशी से राखे देशको विगाड़ करे, लूटे खावे माल धन प्रजा को सतायके ॥
परिचय करे चोर लार सोही गुन्हेगार, एकल को देखो उपनय यां लगाय के ।
प्रभु आण भागे मागे भ्रमत अनंतकाल, सहे घणो दुःख कहे अमृत सुनायके ॥२५

उपनय-यथा सवैया—

भूप प्रभु अपराधि कुसाधु कुकूर वजीर आचारज कीधो ।
पल्लोजु गच्छ-पती जिम पूज्य रजा विनही अपनो करि लीधो ॥
आर विहार करे परिचै जिन लोपत आण गुन्हो कहि दीधो ।
काल अनंत सजा भव कैद अमी समझो परमारथ सीधो ॥ २६ ॥

घनाक्षरी—

क्रोध करि लड्यो साधु निकल्यो खमाया विना, अन्यगण अंगीकरो रेवाको विचार है
कल्पे गणाधीशको सो पंच रात्रि छेद करो, कोमल वाणी से समझावे हिताचार है ॥

पीछा उसी गणमें पठावे गुरु पास खास, आवे ज्यों प्रतीत विसवास व्रतधार है।
राख्यासु अदत्त वृहत्कल्प के उद्देशे चौथे, पंचमी दफा में वीर कानून उदार है।

पासत्थो उसन्नो कुसीलियो संसत्तो नित्तियो, ममाइयो पासणियो काहियो प्रचंड है
नवमो संपसारियो वंदना करत यांको, प्रशंसा भी करे वीर नीति ये अखंड है ॥
आहार विहार पास बैठके सज्झाय करे, उपधि के लेते देते होय जगभंड है।
निशीथके तेरमे उद्देशमें प्रगट पाठ, आवे तिस साधुको चौमासो लघु दंड है ॥२८

दुष्ट मन वैरि शिर पुष्ट पाप आश्रव में, विषय कषाय घन दृढ लंबे केश जी।
क्रोध मान माया लोभ और पांचों इंद्रियों को, करके प्रयत्न रहे मूंडता हमेशजी
ताके साथ मूंडे सिर अमीरिख कहे तांको, होवे ना कलेश दुःख चिंता लवलेशजी
मनको अकेला कर चेला तो झमेला मिटे, रहो किसो भेला धारो वीर उपदेशजी

ग्रामको विगाड़े वारवार सती संत आवे, कुमाणस पेठे उसो घरको बिगाड़े है।
विगड़े लुगाई रसलंपट कुसंग मिले, भरत हताइ साधु धर्मको उजाड़े है ॥
सड्यो पान एक सारी चोलीको सडाय देत, खोटो साधु एक सारे गच्छको लजाडे है
सड्यो हाथ दूर किया होवत समाधि ऐसे, खोटे को अमृत सभी घरमें से काढ़े है
व्यवहार सूत्रके उद्देशे छट्ठे वांची देख, बोल दश चारमें खुलासा अधिकार है।
ग्रामादिक मांही धर्मशालादि मकान खुल्ला, निकलण प्रवेश पृथक घणे द्वार है ॥

नहीं कलपे है रेना एकले गीतारथको, जो है बहुस्सुया बहु आगम के धार है।
अप्पस्सुया अप्प आगमीका तो केनाही क्योंहै, अमृत विचारधार आणा श्रेयकार है

बोल तेरमेमें कह्यो पूर्वोक्त स्थान घणे, मिलके अगड सुया रेना मत भाखो है।
है कोई आचार कल्पधारी निशीथादि जाण, रहे तांके आश्रित जो मोक्ष अभिलापी है
है तो घणे साधु पण नहीं को आचार जाण, रह्या कल्प भांजे प्रभु याही रीत राखो है
जेता दिन रहे तेनो छेद प्रायश्चित्त पावे, अमृत समान वीर वाणी खुद साखी है ॥

बृहत्कल्प उद्देशे प्रथममें खुलासा पाठ, सात चालीसमो बोल तोल चित्त ठाणेजी
कल्पे नहीं एकले साधुको रात्रो वा वियाले, बाहिर सज्झाय परिठावे काज जाणोजी
कल्पे अप्प सूधादोय तीनत्योंही साधवी को आप सुधादोय तीनचार जाणो आणोजी
वीर वेण मान्या द्रव्य भाव से समाधि रहे, अमृत एकल झूठी टेक मति ताणोजी ॥

बत्तीस में उत्तराध्ययन प्रभु वैन एन, निपुण सहाय चाहे मिल्या करे चेलो है।
न मिले सहाय गुणाधिक वा गुणे समान, निज हित जान कह्यो विचरे अकेलो है॥
ऐसे कही थापे सो उत्थापे वीर आगमको, चेले बिन विचरे अकेलो गच्छ भेलो है
अमृत अरथ कोई पंडित से धार भाई, मनघड अरथ करे सो मोह गेलो है ॥३४

वैठ गुरु नैनमें सुऐन सेन केन मान, इंगित आकारी वरज्या को संग टार रे।
मान सहित आण मान स्थान गुरु पास सदा, उद्यमी विवेकी वनी कार्यको सुधाररे

रहो गुरु छान्दे अभिप्राय लखो जतना से, काम सब साधो अवग्रह को विचाररे ।
पंथ अविलोको जाते आते सर्वदा सदैव, अमृत समान गुरु आज्ञा शिर धाररे ॥३५

हरिगीतिका छन्द—

श्री वीर वचनाधार मैंने जो कहा है सफा सफा ।
एकल विहारी सुन कहीं होना नहीं मुझ पर खफा ॥
हित या अहित अपना तुम्ही दृग मूंदके सोचो जरा ।
फिर न्यायपूर्वक बोलियो अच्छा बुरा खोटा खरा ॥ ३६ ॥

यदि भूल अपनी भूलके करि विनय गुरुकुलमें रहो ।
कर लीजिये वश आतमा न बुरा किसी को भी कहो ॥
सुनके करोगे धृष्टता यदि वीर के कानून को ।
श्रद्धा गमा मत बैठियो पढ़लो इसी मजमून को ॥ ३७ ॥

सुण सोचके समभाव से हित सीख मानोगे भलो ।
निज भूल पर पछताय के आतमा करोगे निर्मलो ॥
श्रद्धा रहेगी तो कभी चारित्र भी आ जायगा ।
तप ज्ञान से कर निर्जरा शिव सुख कभी तो पायगा ॥३८॥

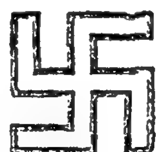
रचयिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

शिखरिणी छन्द —

लिखी है या मैंने कठिनतर शिक्षा हित भरी।
दवाई ज्यों खारी कटुक गुणकारी सुखकरो॥
खुशी से पी लोगे दरद मिट जावे भ्रमण के।
सुखी होवे आतमा निजगुण बढ़े ज्यों श्रमणके॥ ३९॥

नहीं हूं मैं द्वेषी बनकर हितैषी कुछ कहा।
तुम्हारे अच्छे को मनन करिये में हित महा॥
खमाता हूँ भ्राता दुकृत मम मिथ्या कथनका।
पुरी इन्द्रप्रस्थे रचित वर काव्ये वचनिका॥ ४०॥

॥ इति एकल विहारी-मुनि-हितशिक्षा चालीसा सम्पूर्ण ॥



श्री शारदा विनय

॥ दोहा ॥

श्री जिनवाणी शारदा, श्रुतदेवी सुखदाय ॥
जगरक्षक जगदीश्वरी, होजे वेगि सहाय ॥ १ ॥

॥ घनाक्षरी कवित्त ॥

प्रथम भारती देवी दूजो सरस्वती तीजो, शारदा सुनामवर चोथो हंसगामिनी ।
पंचमो विश्व विख्याता छट्ठो वागीश्वरो शुद्ध, सप्तमो कौमारी अष्टमो है ब्रह्मचारिणी
नवमो विदुपा देवी दशमो सुब्रह्मसुता, ग्यारमो ब्रह्माणी वारमो है ब्रह्मवादिनी ।
प्रात उठि पठन करे जो नर नाम एह, होवे अमीरिखपै प्रसन्न श्रुतस्वामिनी ॥२॥

आयो मैं शरण चलि शारदा तिहारे अब, छोड़के अभय ठौड़ औरकित जाऊँ मैं
सुनिके अरज कछू देर ना करीजे मोहि, लीजे अपनाय दास तेरोही कहाऊँ मैं ॥
तेरे बिन और दीन रक्षक नहीं है जग, और ढिग जाय कित दीनता सुनाऊँ मैं।
दया करी आज अमीरिखके सहाय होउ, जननि तिहारो अवलंब दृढ पाऊँ मैं ॥३

तेरी ही कृपातें मति-तिमिर विनसि जात, तेरो ही कृपातें ज्ञान-भानुको उजास होय ।
तेरीही कृपातें दूर कुमति पलाय वेगि, तेरीही कृपातें हित सुमति प्रकाश होय ॥

तेरीही कृपातें गण दोष टलि जाय सव, तेरीही कृपातें वर काव्य को अभ्यास होय
तेरीही कृपातें विद्या बुद्धिवल वाधे माय, अमीरिख सकल सफल उर आस होय ॥४

तेरी ही कृपातें घने जड़मति दत्त बने, तेरी ही कृपातें शुभ जग जस छायो है।
तेरो हो कृपातें श्रुतसागर को पावे पार, तेरी ही कृपातें गणराज पद पायो है॥
तेरी ही कृपातें सव आगम सुगम होय, आगममें तेरो ही अखंड बल गायो है।
सुमति वढ़ाय दे हटाय दे अज्ञान तम, अमीरिख जननी शरण तव आयो है ॥५

महिमा तिहारी भानु सम उजियारी, तिहुँ लोक में प्रचारी भारी दीन हितकारी है।
जिनजी उचारी सव जीव हितकारी गणराज शिवधारी कही शारदा पुकारी है॥
संशय निवारी उरधारी नरनारी भवविपदा विदारी निज आतम सुधारी है।
कहे अमोरिख मोद मंगल करनवारी ऐरी महतारी मोको शरण तिहारी है ॥६॥

मैं तो एक तेरो अवलंब दृढ़ धारयो मात, दया करो वेगि मति-तिमिर विनास दे।
तेरी ही कृपातें शुभ वनत सुखद काव्य, टले गनदोष बुद्धि विमल प्रकाश व्हे॥
होजे वरदायी अमीरिख की अरज सुनी, सफल करीजे सव धारी उर आस जे।
मेरी ओर हेर कृपा कोर यों निहारो नित्य, जानि निराधार हो सहाय निज दास के

एरी माय मेरी सुनि लेरी या अरज अव, हेरी मम ओर जानो चाकर चरनको।
मेरे उर आश विसवास है तिहारो गुण गाऊं मैं हमेश दुःख दोषके हरनको॥

विमल करीजे विद्या बुद्धि ओ हरीजे तम, विरद कहावे दीन पालन करन को।
और कित जाऊँ गाऊँ दीनता सुनाऊँ अंब, मोको तो भरोसो दृढ़ आपरे शरन को

तेरो ही सुजस सव आगम वखानत है, तूही शिवदाता गणराज यों उचारी है।
तूही सव जीवकी दयाल रक्षपाल मात, तू ही दुःखी दीन प्रतिपाल हितकारी है॥
तूही सव ठौर में सहाय होय दीनन के, तूही सवे भव्य जग जीव महतारी है।
दास अमीरिख की कुमति सव दूर कर, एरी महतारी मोको शरन तिहारी है ॥९॥

मैं तो हूँ अकेलो निराधार दुःखी दीन महा, सिमटी करम सव आन दियो घेरोरी।
वैरीको जुलम देखी चित्त अकुलानो तव रटकि के शारदा शरण लियो तेरोरी॥
दीखे नाहीं और तिहुँ लोकमें समर्थ कोउ, काहूँ भाँति यांको नेक करत निवेरोरी।
तूही दया धारिके अभय करसों को मात, अमीरिख तेरे पद पंकज को चेरोरी ॥१०

करम आधीन दुःखो दीन मैं भयोरी अंवे, भ्रमत फिरूं मैं भव नानारूप धारिके।
अव तो सह्यो न जाय, संकट अपार यह, सवे भांति होय मैं निवल रह्यो हारिके॥
जान्यो अरि जोर मन मेरो घवरानो सव सुधि विसरानो रहूँ कैसे मन मारिके।
करूं क्या उपाय वस चले ना हमारो यांते, अमीरिख आयो मैं शरन महतारिके

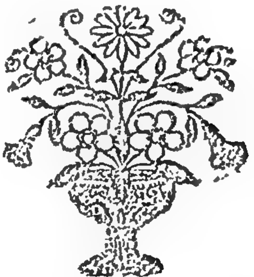
माता सातादानी जिनराजजी वखानी तोहि, परम प्रधानो गुणखानी सुखधामिनी।
दया रस सानी मति तिमिर को भानी मोहि, दीजे पद पंकजकी सेव शिवगामिनी

हरन अविद्या मति तिमिर विनासो मात, मिथ्यामति-भूधर विदारो वनितामिनी।
दया करी आज अमोरिख के सहाय होउ, पाहि पाहि पाहि जय जय श्रुतस्वामिनी

॥ कलश ॥ मालिनी छन्द ॥

सकल सुकृत खानी जग त्राता बखानी।
परम पद निसानी तत्वदा सार जानो ॥
कुमति तरु कृपानी भव्य के चित्त आनी।
विमल सुमति दानी जैति श्री जैनवानी ॥ १३ ॥

॥ इति श्री शारदा विनय सम्पूर्ण ॥



रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

तीर्थंकर परिचय

चौवीस तीर्थङ्करों की स्तुति ।

१ २ ३ ४ ५
प्रथम ऋषभदेव अजित संभव सेव, अभिनन्दन जिनंद सुमति मनाइये ।
६ ७ ८ ९ १० ११
पद्म सुपास ध्याय चंद्रप्रभ चित्तलाय, सुविधि शीतलजी श्रेयांस गुण गाइये ॥
१२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
वासुपूज्य विमल अनंत धर्म शांतिनाथ, कुन्थु अर मल्लि मुनिसुव्रतजी ध्याइये ।
२१ २२ २३ २४
नमि नेम पार्श्व महावीर वर्द्धमान नाथ, अमी जप ध्याय दुःख जाय सुख पाइये

चौवीस तीर्थङ्करों की माताएँ ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
मरुदेवा विजयाजी सेनाजी सिद्धारथाजी, मंगला सुसीमा पृथ्वी लक्षमणा वरणी
९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७
रामा नंदा विन्हा जया श्यामाजी सुजसा माय, सुव्रताजी अचिरा श्रीदेवी गुणधरणी

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

१८ १९ २० २१ २२ २३ २४
देवी माता प्रभावती पद्मावती वप्रा माय, शिवा वामादेवी त्रिशलाजी प्रियकारणी
धारणी रयणकूंख चौवीस जिनेंद्र माता, दीजे सुखसाता अमी संप हितकरणी २॥

चौवीस तीर्थङ्करों के पिताश्री ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
नाभि जितशत्रुजी जितारिजी संवर मेघ श्रीधर प्रतिष्ठसेन महासेन भूपति ।
९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
सुग्रीवजी दृढरथ विष्णु वासुपूज्य कृतवर्म सिंहसेन भानु विश्वसेनाधिपति ॥
१७ १८ १९ २० २१ २२ २३
शूरसेन सुदर्शन कुम्भजी सुमित्र विजेसेण ने समुद्रविजे अश्वसेन ही धृति ।
२४
सिद्धार्थ नरेंद्र ये है चौवीस जिनेंद्र तात, उदित उदित कुलवंश चढतो रति ॥३॥

चौवीस तीर्थङ्करों की आयु ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
पूरव चौरासी लाख बहोत्र साठ पचास, चालीस ने तीस बीस दश दोय एकजी
११ १२ १३ १४ १५ १६
वरस चौरासी लाख बहुत्तर साठ तीस, दश एक लक्ष शांतिनाथ आयु नेकजी ॥

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

१७ १८ १९ २० २१ २२
पंचाणु हजार ने चौरासी पंचावन तीस, दश एक सेंस नेमनाथ आयु लेखजो ।
२३ २४
एक सो वहोत्तर बरस महावीर नाथ, अमी भगवंत आयु धारो सुविवेकजी ॥४॥

चौवीस तीर्थङ्करों का देह मान ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
पांचसे धनुष्य साडो चारसे चारसे साडो तीनसे तीनसे अढो दोयसे प्रमान है ।
८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५
डेढ़से सुविध शत नेउ असो सत्तरको, साठ ने पचास पेंतालीस सुसंठान है ॥
१६ १७ १८ १९ २० २१ २२
शांतिनाथ चालीस पेंतीस तीस पंचवीस, वीस पंदरा ने दश धनुष्य वखान है ।
२३ २४
नव सात हाथ महावीर नाथ देहमान, अमृत समान जिन चौवीसको ध्यान है ॥

चौवीस तीर्थंकरों के प्रथम गणधर ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
पुंडरीक सिंह चारु वज्रनाभ चरमजी, प्रद्योत विदर्भ दीन वराहक जाणिये ।

१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९
नंद कच्छप सुभूम मंदिर जस अरिष्ठ, चक्रायुध शांब कुम्भ अभिजक मानिये ॥
२० २१ २२ २३ २४
मल्लि शुभ वरदत्त आर्यदिन्न इंद्रभूति, चौवीस जिनेंद्र शिष्य प्रथम वखानिये।
गणधर लब्धिवंत चउदे पूरवधार, अमो निशदिन वंदो भाव शुद्ध आनिये ॥

चौवीस तीर्थंकरों की प्रथम शिष्याएँ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
ब्राह्मीजी फल्गुनी श्यामा अजिता काश्यपी रती सोमा सुमना वारुणी सुजसा विचारी है
११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९
धारणी धरणी धरा पद्मा आर्य शिवा शुची, दामिनी रक्षिता वर बंधुमती भारी है
२० २१ २२ २३ २४
पुष्पवती अनिलाजी जक्षदिन्ना पुष्पचूला, चंदनबालिका सती शील अधिकारी है।
चौवीस जिनेंद्र पेली चेली गुणवंत सती, अमी भावयुत नित वंदना हमारी है ॥७

चौवीस तीर्थंकरों के भक्ति संपन्न भूपति।

१ २ ३ ४ ५ ६
भरतजी सगर अमितसेन मित्रवर्य शतवीर्यजी अजितसेनजी दयाल है।

७ ८ ९ १० ११ १२ १३
दानवीर्य मघवाजी बुद्धिवीर्य सीमंधर, त्रिपृष्ठ द्विपृष्ठजी स्वयंभु गुणमाल है ॥
१४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१
नरोत्तम नरसिंह कोणाल कुबेरजी सुभूम जीत विजे हरिसेणजी विशाल है।
२२ २३ २४
गोविंद प्रसेनजित श्रेणिक सुनीतिवंत, अमोजिनजी के भक्तिवंत ये नृपाल है ॥८॥

तीर्थंकर ध्यान विधान

रवि पद्मप्रभ शशि चंद मंगल वासुपूज्य जिनेश्वरा।
बुध विमल से अरनाथ तक नमि वीर वसु जिन हितकरा॥
गुरु आदि पंच सुपास शीतलजी श्रेयांस मनाइये।
जप शुक्र सुविधीनाथ मुनिसुव्रत शनी दिन ध्याइये ॥ ९ ॥

चौवीस तीर्थंकरों के चवन नक्षत्र।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
उत्तरापाढा रोहिणी मृगशिर पुनर्वसु, मघा चित्रा विशाखा सु अनुराधा जानिये।
९ १० ११ १२ १३ १४
मूल पूर्वापाढा ने श्रवण शतभिपा नाम, उत्तराभाद्रवपद रेवतो प्रमानिये ॥

१५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३
पुष्य भरनी कृतिका रेवती अश्विनी मल्लि, श्रवण अश्विनी चित्रा विशाखा वखानिये ।
२४
हस्तोत्तरा नक्षत्रसें वीरश्री च्यवन जाण, अमी या नक्षत्रे यथाशक्ति तप ठानिये ॥

चौवीस तीर्थंकरों की जन्मभूमि ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
इक्ष्वागभूमि अयोध्या सावत्थी अयोध्या जाण, कंचनपुर कोसंबी वाणारसी धाररे
८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५
चंद्रपुरी काकंदी भद्दिलपुर सिंहपुर, चंपा कंपिल अयोध्या रत्नपुरी साररे ॥
१६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३
हस्थिणा ने गज नाग मिथिला औ राजगृही, मथुरा सोरीपुरी वाणारसी विचाररे
२४
महावीर कुंडलपुरी में यो चौवीस जिनराजकी जनमभूमि अमी सुखकाररे ॥११॥

चौवीस तीर्थंङ्करों के लक्षण ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
वृषभ ऋषभ गज हय कपि भालंको, पद्म कंज स्वस्तिक मयंक चिन्ह गावे है ।

९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७
मकर श्रीवत्स गेंडा महिष वाराह जाण, सोचाणो सुवज्र मृग एलक सुहावे है ॥
१८ १९ २० २१ २२
नंद्यावर्त कलश कच्छप मुनिसुव्रत के, नीलोत्पल शंख नेमनाथजी को पावे है ।
२३ २४
पार्श्वनाथ सर्प महावीर सिंह लच्छन है, अमी प्रभु चरणो में शीसको नमावे है ॥

चौवीस तीर्थङ्करों का छद्मस्थ काल ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
सहस्र वरस वारा चउदा अठारा वीस मास छट नव चार तीन दोय मास है ।
११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
एक एक मास तीन दोय एक एक वर्ष एक मास नवम ल्लि एक पोर ग्यारे मास खास है
२१ २२ २३
नवमास चौपन दिवस नेमनाथ जान, त्रासी रात पार्श्वजी छद्मस्थ पदवास है ।
२४
साड़ो चारे वर्ष एक पक्ष वर्द्धमान प्रभु, शुक्ल ध्यान ध्याया अमी केवल प्रकास है

चौवीस तीर्थङ्करों के केवलज्ञान वृक्ष ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
वड़ सप्तवर्ण शालो राजादनो प्रियंगु ने, सप्ताह सरस नाग मल्लिका प्रधान है।
१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७
बिल्व तिंदुक पाडल जंबु सु अश्वत्थ वृक्ष, दधिपर्ण नंदी तरु भिल्लक सुस्थान है ॥
१८ १९ २० २१ २२ २३ २४
आम्र ने अशोक वर चंपक बकुल तरु, वेडस धातकी शाली वृक्ष वर्द्धमान है।
ध्यानशुक्ल ध्याया घनघाती कर्मघाया अमी लोकालोक प्रकाशक पाया दिव्यज्ञान है

चौवीस तीर्थङ्करों के गणधरों की संख्या ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
चौरासी पंचाणु एक शत दो एकसो ग्यारा, शत एक सोने सात पंचाणु विचारी है
९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७
त्राणु अठ्यासी बियासी सतोत्तर गुणंतर, सत्तावन पचास शत पेतालीस धारी है
१८ १९ २० २१ २२ २३ २४
तेतीसने अट्ठावीस अठारे सतरे ग्यारे, दश ग्यारे महावीर धीर गुणधारी है।
चउदेसे बावन चौवीस जिन गण ईश, अमी कर जोडी सदा वंदना हमारी है ॥

चौवीस तीर्थङ्करों की केवली संख्या।

सेस वोस बावीस पंद्रा चौदा तेरा बारा, ग्यारा दस सेस साड़ी सात गुणवंत है
सात साड़ी षट षट साड़ी पंच पंच साड़ी चार त्रेतालोससे बत्तीससे महंत है ॥
अठावोसे बावीससे अठारासे सोले शत, पंद्रासे पारस हजार सार सन्त है।
सातसे श्रीवीरजिन केवली मुनीश हुवे, करम खपाय अमी सादिया अनंत है ॥

चौवीस तीर्थंकरों की साधु संख्या।

सहस्र चौरासी एक लक्ष दोय तीन लक्ष, तीन लक्ष बीस सेस साधु गुणधारी है।
त्रिलक्ष हजार तीस लक्ष तीन अढो दोय, एकने चौरासी सेस बहोत्र अधिकारी है ॥
अड़सठ छासठ चौसठ ने बासठ साठ, पचास चालीस तीस बीस सेस जारी है।
अष्टादश सोला वीरनाथ के चौदा सहस्र, अमी भावयुक्त नित्य वंदना हमारी है ॥

चौवीस तीर्थंकरों के निर्वाण नक्षत्र।

अभिजित मृगसिर आर्द्रा पुष्य पुनर्वसु, चित्रा अनुराधा जेष्ठा मूल श्रेयकारी है।
पूर्वाषाढ़ा धनिष्ठा उत्तरा भाद्रपद जाण, रेवती रेवती पुष्य भरणी .... ॥
कृत्तिका रेवती भरणी श्रवण अश्विनी चित्रा, विशाखा ने स्वाति सुनक्षत्र साताकारी है
करम खपाय अमी पाया निर्वाण पद, चौवीस जिनेंद्र सदा वंदना हमारी है ॥१८

॥ इति श्री तीर्थंकर परिचय सम्पूर्ण ॥

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

श्री तिलोकाष्टक

उत्तम व्रत धारे दूर पातक हरन हारे, विपत्ति विदारे आप अमृत के क्यारे थे।
ज्ञान संयम मतवारे दान करुणा सतवारे, चित उज्वल हितवारे पंकदूपणतें न्यारे थे
तत्वमारग उचारे किये कुमतिसे किनारे, होन शिवके दुलारे सुमति के प्राणप्यारे थे
वचन अमृत उचारे अमर धामको पधारे, वे तिलोकरिख स्वामी जगजीव रखवारे थे
मोत नातुके नाने नहीं रहे जग छाने विश्वमाही प्रगटाने जास महिमा बखाने है।
सुधा-वच सुनकाने घने जीव हरखाने, दया भाव उर आने जैन तत्वको पिछाने है
क्रिया दान देत दाने मोक्ष मारग बताने, जिनराज गुण गाने नहीं नेक अरसाने है
आज अमृत गुण जाने वे तिलोकरिख दाने,हाय! छिनमें विलाने मेघइंद्र ज्यों छिपाने है
मनमें वैराग धार त्याग के संसार शिव मार्ग चित्त लाग सब पातकतें न्यारे थे।
उदे बड़ भागे जैनागम अनुरागे सागे, आपके प्रताप आगे मिथ्यामति हारे थे॥
बड़े बड़े पंडित के खंडित किये हैं मान, अमृत बखाने धर्म दीपक उजारे थे।
महा गुणवारे ज्ञान क्रिया-धनवारे वे तिलोकरिख स्वामो जगजीव रखवारे थे ॥२
सकल संसार मुख जानके अनित्य चित्त, त्याग भाव धारी हितकारी शुभ संत है।
आश्रव प्रमाद टार राग द्वेपादि विदार, विषय कषाय लाय ठारी उवसंत है॥
धारे जिनकेन मोक्ष पंथ मुख देन ऐन, देखत दीदार भव्य हिय हुलसंत है।
अमीरिख कहे पाल संजम विशुद्ध चित्त, स्वामीजी तिलोक सुरधाममें वसंत है॥

ल्हे गयो जगत जाल पातकतें दूर शूर, धर्म दया मूल भेद रसनातें के गयो।
के गयो अनेक मत आगम के भेद भार, अमृत जिनवेन चंद आननतें चे गयो॥
चे गयो अमर धाम आतम आराम काम, घने भव्य जीवनको ज्ञान दान दे गयो।
दे गयो सुमत चित्त अमृत अखंड सो तिलोकरिख स्वामी गुणनामी एक ल्हे गयो॥

गीता–छन्दः—कुमति-तिमिर-दल-दलन स्वामी धर्म-दीपक सम हुए।
शुद्ध जैन आगम भेद अमृत सार रसनातें चए॥
भवि जीव को दरसाय शिवमग जैनमत धारी किए।
उपकारी धन्य तिलोकरिख गुरु आप सुरवासी भए॥ ६॥

दयाके निधान भव्य जीवनके प्राण औ सुजान ज्ञान ध्यानमें विमग्न गुणधामी थे।
बाल ब्रह्मचारी महा दुक्कर आचारी सार काव्य कलाधारी हितकारी विसरामी थे॥
सुधा सम वाणी मृदु सज्जन के ज्ञाता दानी, देय उपदेश जीव तारवे के कामी थे।
अमृत रटत नाम लेतही कटत पाप, ऐसेही प्रतापी श्रीतिलोकरिख स्वामी थे॥७

तिलोक के नाथ की आन गहे उर, संजम ले चित्त होय विशोक।
विशोक हिये तप चारित पालत, टालत पाप अनत्थ विलोक॥
विलोक लिये जिनवेण भलीविध, वंदत भव्य सदा देइ धोक।
धोक "पियूष" दिए तिहुँ काल कृपाल कृपा कर स्वामि तिलोक॥ ८॥

॥ इति श्री तिलोकाष्टक सम्पूर्ण ॥ [श्री सूर्य मुनि महाराज से प्राप्त]

हिंसामति-हितशिक्षा ।

शासननायक सुखदाई सब जीवन को, निरवद्य वाणी उपदेश फरमायो है ।
छहों काय जीव निज आतम समान जान, दीजे न असाता यही भेद दरसायो है
जीव दया धरम यों सबही पुकारत है देखो जैन आगम में ठाम ठाम गायो है ।
अमीरिख कहे मति कुमति ने हती तेरी, हिंसा मत थापी तेरे हाथ कहा आयो है ॥
धारो जिन वैन जीवदया सुखदेन जाते पावे सुख चेन सबे कष्ट मिट जावेगो ।
हिंसामें धरम थाप बांधेगो करम आप, पाप के प्रताप से संताप दुःख पावेगो ॥
कीजिये विवेक नेक दीजे यह टेक छांड, एक दया धर्म तोहि मोक्ष पहुँचावेगो ।
आवेगो न सीधे राह पावेगो तू सीधे फल, अमीरिख कहे रोय रोय पछतावेगो
सुने नहीं वानो कुमतिके ग्रंथमानी निज शुद्धि विसरानो ताते उंधो मत धारयो है
सुन सुन टीका किया करुणाका भाव फीका,सम्यक्त्व अंकुर जड़ मूलते उखारयो है
हिंसा माही राचरह्यो झूठो मत सांच मानो काचके भरोसेसार चिंतामणि डारयो है
अमीरिख कहे भाई विना पहचाने धर्म, सुनरे सयाने नर जन्म क्यों बिगारयो है
चैत्य शब्द देखे तहां ठाने जिनमूरत को, मोह मद अंध फंद रचे ग्रंथ झूठे क्यों ?
अष्ट द्रव्य पूजा और सतरे प्रकार आदि,भाखत निःशंक शुद्ध-मारग से रूठे क्यों
धरममें हिंसा करे हरख प्रशंसा चित्त लावत न संसा शठ जानि विष घूटे क्यों ?
अमीरिख कहे निराधार दीन प्राणिनको,ऐरे हो अज्ञानी तूं निशंक होय लूटे क्यों

धन्य वीतराग दीने आश्रवको त्याग लाग कुगुरुके केने पाप दाग तू लगावे क्यों
ढोलत सचित्त नीर जिनजीके स्नान नाम, मुगट कुंडल तन अंगिया रचावे क्यों
मुद्रा कर ध्यान फेर होयके अजान आप, कोमल कुसुम चूंटी सिरपै चढावे क्यों
अमीरिख कहे भोला लेत अरिहंतनाम, जीवनके लूटी प्राण भवको बढावे क्यों ?

दया दया दया सब आगम पुकारी कहे, तापर भी हिंसामत तेरे घट व्यापे क्यों
करनो करानो अनुमोदन त्रियोग त्याग, कह्यो वीतराग ताके वचन उत्थापे क्यों?
हिंसा उपदेश देके बांधे सिर पाप पोट, मोक्षफल दातास मकित मूल कापे क्यों
अमीरिख कहे जैन वैन सुनि होय ज्ञानी, ऐरे अभिमानी भोला हिंसा-मत थापे क्यों

फूलके चढाय फल बोले उपवास स्वर्ग, हनिके अनंत जीव साता सुख मागे क्यों
शक्करके भावे लोन डारी पय पीवे कोई, विना वस्तु भाव होतो खारो पय लागे क्यों
मंदिर बंधाय ठाय प्रतिमा जो मोक्ष होय, चक्री जिनराजा एतो संपद्रिद्ध त्यागे क्यों
अमीरिख कहे भाव वस्तुके साथ जान, समझी अजान होय पापे अनुरागे क्यों

निरवद्य वाणी जानी सुधासम सातादानी, पाय धर्म जैन वैन हिंसा विष घोले क्यों
हिंसा सिद्ध करिवेको नानाविध युक्तिसाज, जाहिर आवाजसे निशंक होय बोले क्यों
कथी कथी झूठे पाठ भोले को भुलाय वाट, ले जा कुघाट वाट दुर्गतिको खोले क्यों
अमीरिख कहे भोला पायके अमूल्य धर्म, कर्मवश होय दया अमृत-रस ढोले क्यों

करम के सारे शिवमारग से न्यारे, दया मूल से उखारे छहों कायको संहारे हैं।
हारे हैं अमोल भव कुगुरुकी धारे केन, एन मग त्यागी धरे शीस अघ भारे हैं॥
आगम उचारे पै विचारे ना मरम चीत, राग काज हने जीव मोद मन धारे हैं।
अमोरिख कहे अंध मंद मतवारे बने, जैन मत बारे ऐसे बने मतवारे हैं॥६॥
सावद्य रु निरवद्य यों वाणी से परख परे, करताका हार्दिक भाव सो जनाये है।
सावद्य ना उपदेय यामें नहीं संशय तो, वीर अनुयायी कैसे सावद्य सुनाये है॥
देखो ज्ञान-नैनसे विचारो पक्षपात छोडो, आचारांग आदि जहां नंबर गिनाये है
यामें तो देखो प्रथम रहे ना अधूरो काम, अमृत सब ठौर वीर वचन मनाये है॥
मत भेद लुब्ध, तासे ग्रंथजाल ऐसी बढ़ी, कहूँ क्या बनाय बात कहे ते लजात हूँ।
प्राकृत संस्कृत आदि भाषामें अनेक ग्रंथ, कथिके प्रसारे जग जाहिर जनात हूँ॥
सावद्य आदेश उपदेश भरपूर ऐसे, निमित्त वेदांग नाम लेते सकुचात हूँ।
कोक जैसे निंद्य ग्रंथ करता श्रीजैनाचार्य, यातें क्रोड बातकी मैं एकही सुनात हूँ॥
काहेको बढ़ावे रागद्वेष क्लेश पक्षपात, होय कर्मबंध जो तू ज्ञाता तो पिछानी ले
होवेना निवेरो चिरकाल लग लड़वेसे, प्रथम सावद्य निरवद्य भेद जानि ले॥
ऐरे मतवारे प्यारे आतम को तारगो चाहे, एक मेरी सीख हितकारी हिय ठानि ले
पलिके आचारजके ग्रंथ भ्रम जाल तोरि, अमृत एकादशांग वीरवाणी मानि ले॥



रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

निश्चय-व्यवहार-चर्चा

सात नयमांही पेला चार व्यवहार धार, निश्चयको पावे व्यवहार उपकार है।
विद्याधन गमनादि क्रिया बिन उद्यमके होय ना कदापि निश्चे भाविके आधार है
वादल हुइ ने मेह वरसे यों व्यवहार. नियत प्रधान तो भी उद्यम के लार है।
स्याद्वाद नयसे विचार अमीसार धार, आगममें निश्चय से मोटो व्यवहार है॥

समकित ज्ञान तप संजम जो सांचे मन, उद्यम से निकाचित रस मंद भार है।
छिनमें निकाचित करम-दल टल जाय निश्चय क्षपक श्रेणि चढ़े नरनार है॥
कथंचित स्थानक प्रधानता विचारो जैन शासन चले है दोय नयके आधार है।
स्याद्वाद नयसे विचार अमीसार धार, आगम में निश्चय से मोटो व्यवहार है

कुंडरिक तप-फल हार्यो व्यवहार तज्या, नरक सिधायो ज्ञाता अंग अधिकार है
सात भांत आयु टूटे ठाणांग सूत्रकी साख, वीर व्यवहारे लियो औषध आहार है
मरुदेवी भावना विचार सोही व्यवहार, केवली भरत वेष संजम आचार है।
स्याद्वाद नयसे विचार अमीसार धार, आगममें निश्चय से मोटो व्यवहार है॥

भाग्यमें जो लक्ष्मी तो निश्चय मिलेगी आय, इत उत फिरत क्यों करत व्यापार है
वाहिर दे मेली धन थैली जो निश्चय दृढ, ताला कूंटा करत क्यों जड़त किवार है

निश्चे राखी छांडि व्यवहार तो न चले कार, मन राखी काढ़े ज्यों दीवालो साहूकार है।
स्याद्वाद नयसे विचार अमीसार धार, आगममें निश्चयसे मोटो व्यवहार है ॥४

केते व्यवहार केते निश्चय को ताणे पै न जाणे परमार्थ योंही लड़त गिंवार है।
दोय चक्र चाले रथ अंध पंगु नेत्र पद, माने समवाय न्याय सापेक्ष विचार है।
रवाई के नेत्रा सम दोनों हाथे राखे ग्रही, गौण-मुख्य कोधा मिले मक्खनको सार है।
स्याद्वाद नयसे विचार अमीसार धार, आगममें निश्चयसे मोटो व्यवहार है ॥५

सामने का ग्रास भी न जाय मुखमांहो विन उद्यमके काम सिद्ध होय ना लगार है।
अनेकांत माने तांको सम्यक बखाने प्राणी एक पक्ष ताणे सोही मिथ्यात्वी असार है।
वीतराग वाणी में एकांत की निशानी नांहो, सुगुणा विवेकी करे परख विचार है।
स्याद्वाद नयसे विचार अमीसार धार, आगममें निश्चय से मोटो व्यवहार है ॥६॥

प्रकीर्णक

निंदा त्यजनोपदेश ।

आप घर बंधे नहीं बंधे है पाताल नभ, पग तल लागे लाय तांको तो बुझावरे ।
कुंभजल छणे न निवाण छाणवेकी बणे, नभ न ढंकाय घर चूवे सो बचावरे ॥
मेदिनी मढाय नहीं कंटक विणाय कैसे, या हित सुजान तूं निहारी धर पांवरे ।
औगुण विराने कथी निंदा पाप बांधे मती, अमीरिख अपनी निवेड़ आप बावरे ॥

॥ दोहा ॥

तुझे पराई क्या पड़ी, तू अपनी हो निवेड़ ॥
तेरी नाव दरियाव में, चालि रही सो खेड़ ॥ १ ॥

पापीके पड़ोसी वसी क्यों तूं दिलगीर होय, तेरो ना बिगाड़ कछु करेगा सो भरेगा
परवांक काड़े तासे अपने क्या लाभ होय, आपेको तपास भैया तभो काज सरेगा
दूसरे की धूल मत डार सिर अपने तूं, चीकणा करम बांधो दुर्गति में परेगा ।
नाना भांत सांग कष्ट करिके सुखावे देह, अमीरिख होगा गुणग्राही तोज तिरेगा ॥

श्री वीर प्रभु के दश स्वप्न ।

आदि पिशाचसे युद्ध कियो प्रभु दो विध कोकिल पंखी सुहावे ।
रत्न की माल विशाल सुगोकुल पद्म सरोवर पंकज छाये ॥

पार भये सुजसे उदधि रवि मानुष उत्तर भांति विराये।
मेरुकी शीश विराजित वीर दशों स्वपने के प्रभु फल पाये॥ ३॥

दश स्वप्नों का फल।

मोह हन्यो वर उज्वल ध्यान विचित्र ही भावको जान लिये है।
दो विध धर्म थपे चउ तीरथ चौविध देव ही सेव किये है॥
पार संसार पमेलियो केवल त्रिजग में जसवाद छये है।
परिषद् माही दियो उपदेश अमीरिख यों फल वीर लिये है॥ ४॥
राम रेवाड़ी करे रघु सेवक राधे गोविंद को रास रचावे।
मोमिन ताजिया जैनी रचे रथ मांगि के भूषण वस्त्र पेनावे॥
न्हावत गावत वाजत नाचत वे हाय दोस्त के सौर मचावे।
गाम में फेरि अमीरिख तोरि विगारिके धर्म की हांसी करावे॥ ५॥
मंदिर मसजिद राम खुदा वर नाम धरे गुरु पंडित काजी।
वे उपवास वे रोजा रखे नित संध्या करे वे बने है नमाजी॥
जज्ममें आव गंगाजल लावत ये करे तीरथ वे बने हाजी।
पक्ष बंधे अपने अपने रिख अमृत सत्य से साहिब राजी॥ ६॥
वेश्या व्यभिचारिणी दृढावे शील पतिव्रत, वधिक अहिंसा सिद्धांतको वखाने है।
कृपण जचावे दान-पुण्य को उदारता को, कामी जन इंद्रिय-दमन मन ठाने है॥

प्रमादी सदुद्यम मूरख विद्या पढिवेको, व्यसनी त्यजावे खोट ताको सब जाने है।
अमीरिख ऐसे पर उपदेशको सुनावे पिण, आप बिन साध्ये नहीं बात कोई माने है

शोध मीमांसा

पानी हुको शोध कैसे कीजिये विवेकी आन,सूतक सुआवड़ सदा मेलही धुवावे है।
रेसमका सोला भाजा कीड़ेसे उपज होत, शंख कोडी मोर पींछी हड्डी संग आवे है
खरबूजे तबूजे के काछेमें क्या शोध पड़े, कांदे मूले लसुन के स्वाद को सरावे है।
अमीरिख पुद्गलके लक्षण न जाने शठ, शोध शोध गावे कछु भेद नहीं पावे है॥
मेवा दाख मधु गुंद खांड गोल लूण हींग, शर्बत मुरब्बा प्राय म्लेच्छही बनावे है।
डॉक्टरकी दवा खास बनत विलात माही, उत्तम कुलीन कोई पीवे कोई खावे है॥
चाय घृत खावे कीड़े थुक्क फल चावे, औ तमाखपत्र पीते खाते सूगहू न आवे है।
अमीरिख पुद्गलके लक्षण न जाने शठ,शोध शोध गावे कछु भेद नहीं पावे है॥८
भगीकी पातल चाट आन धसे पंगतमें, न्हाये बिन बिल्ली चौका माही धस जावे है
चूहे भरे मुख एंठी थाली चाट नोच घर, उंच घर आय दूध आदि अभड़ावे है॥
न्हाय धोय सोला पैन पंगतमें वाथ सरे, मांखी आय बैठे कैसे सोध गिना जावे है
अमीरिख पुद्गल के लक्षण न जाने शठ, शोध शोध गावे कछु भेद नहीं पावे है॥
त्यागिये अभक्ष्य वस्तु और भी अयोग्य सब,कोई भी जिनस बिन देखे नहीं खाइये।
आंबादिक मांही उपजे है त्रस जीव घने, जीव युक्त शाक फल फूल छिटकाइये॥

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

काठ पट पानी छान जीवाणी यतन करो, इंधन को देखे पूंजे बिना न जलाइये।
अर्मोरिख शोध शोध करे जो सकल काम, याको नाम शोध और भ्रमणा मिटाइये

प्रभु महावीर के परिवार की आयु।

सिद्धारथ राय आयु सत्यासी वरस सात, त्रिशला दे मात वर्ष पिच्यासी विचारियो
सुपार्श्वजी नेउ नंदीवर्द्धन अठ्याणु वर्ष, सुदर्शणा बेन वर्ष पिच्यासी उचारियो॥
यशोदाजी नेउ शत पूरण रिषभदत्त, देवानन्दा एक शत पंच सुखकारियो।
सती प्रियदर्शनाजी पिच्यासी वरस देखो, अमी महावीर परिवार आयु धारियो॥

शास्त्रार्थ (चर्चा) करने की कला।

स्थान मत छोड़ो क्षेत्र वक्तो पक्को देख लीजे, परिषदा दृढ पांच आपकी विचारिये।
पुस्तकको साज मुख्य प्रश्नको पकड़ दृढ, गहन रसीले पाठ आप ना उच्चारिये॥
क्रोध नहीं कीजे बीच बोलने न दीजे किसे, कठिन वचन अति हास परिहारिये।
पेली ना उठीजे क्षोभ धीरजसुं दीजे अर्थ पेला न पूछीजे कला चरचाकी धारिये॥
न्यायी धीर पंडित विवेकी हो मध्यस्थ तिहां, राजा हो सुलभ अविवेकी कौतुकी न हो
वादी प्रतिवादी क्षमावान तत्त्व खोजी होय, अरथ को साचो बारंबार मुखसे कहो
अमर विद्वान तोलो डोलो ना कदापि प्यारे, चरचा मे शब्दको पकड़ दृढता गहो
अमीरिख यादी भांत चरचा करीजे मित, वढ़े ना कलेश तांते मौन साधिके रहो

मध्यस्थ हो विद्वान् धीर अपक्षपाती क्षमी गुनो।
जनवाद काले एकही बोले मधुर प्रेमी बनो॥
जो होय असमंजस प्रलापी शिथिल आचारी जना।
बिन कहे बोले बीचमें उसको भी कर दीजे मना॥ १५॥

हो तत्त्वका निर्णय जहां पर पक्ष का क्या काम है।
अविरोधता से बोध हो चरचा उसी का नाम है॥
दोनों तरफ के वचन की रिपोर्ट भी लिख लीजिये।
होने न पावे क्लेश 'अमृत' वाद यों मिल कीजिये॥ १६॥

ढूंडाडी भाषा का काव्य।

चेतन विचार मन कोय नहीं थारो अठे, जैनधर्म सार एक गुरुजी जतावे छे।
कुटमरे काज भोरा अठी उठी दोड्यो फिरे, ठगाया करीने माल भेला करी लावे छे
कोडासु आयो भाया कोडाने सिधावसी तूं, मनमें विचार कर कंने तूं लुभावे छे
जम घेर लेगा जदे खाली हाथे चाल्यो जासी, करले धरम अमोरिख समझावे छे॥

रतलामी भाषा का काव्य।

अरज करां हां गुरु घणा दन वया तोवी, अइयाड़ी पधारवारी दया वी नी करी है।
माणाजसा आपरेतो श्रावक नरा हे पण, माणे तो हजूर आपरोज वात खरी है॥

अबे तो पधारी दीजो वेगदी दरस माने, माणी आतमा तो आखी पाप थीज भरी है
कांइ पण गुनो मांसे वयो वे तो कीजो माफ, कहे अमीरिख माणांमे तो भूल नरी है

अर्द्धमागधी भाषा का काव्य।

चउगइ भवरूवसंसार कंतारे जीवो, भमइ अणाइ काला सुहदुहे लहइ।
पुण्णजोग णरजन्म अज्जखित्त सुकुलं च, दीहाऊ अहीण पंचिंदिय कायं लहइ॥
सुसाहु संजोग सुत्तरुइ परम दुल्लहा, सद्धा संजम वीरियं जिणवायं वयइ।
मुक्खमग्गं लद्धं सारं गिण्हइ परसं धम्मं, अमीरिसि वय जम्म जरा कट्ठं दहइ॥

बारह मास श्लेष काव्य।

चेत भवि धार ज्ञान संजम वैसाख होय, जेष्ठ पद आपाढ़ समान सुविचारिये।
श्रवण आगम सुणी धार भद्र पद रोक मन अश्विन को कातो कपट को टारिये॥
मृगशिर सिंह जैसे काल गही लेगो ताते पोप षट्काय महामुनि पद धारिये।
फागुणमें फाग सखी सुमता के साथ खेल, अमीरिख ऐसे बारे मासको उचारिये॥

एकाग्र-चित्त-प्रशंसा।

नागरीको चित्त जैसे गागरीके माही रहे, सागरके संग ज्यों मराल मन धरयो है।
नटवी ज्यों नृत्य ध्यान अटवी सो करी प्रान, अलि मन पुष्प मकरंद संग अरयो है॥

गुरु-प्रार्थना ।

यह धर्म लता जो लगाई गुरु तिहीं सींच भले सरसाइयेजी ।
तहि औसर नेक पधार इते जिन वेन सुधारस पाइयेजी ॥
गुरुदेव पीयूष सुनो घरजी इतना न हमें तरसाइयेजी ।
इन आँखें हमारी कु मोदनिकु मुख इंदु गुनी दरसाइयेजी ॥ २४ ॥
दर्शन दीध दया करिके अहलाद भयो चित्त धर्म उछाव में ।
दान को लाभ दियो न हमें दिन वीत गये कितने चित चावमें ॥
का अपराध बन्यो हमरो यह ऐसो न चाहिये धर्म के भाव में ।
काहे पियूष इते हमको तरसावत हो रहो एक ही गाव में ॥ २५ ॥

जीव की स्थिति ।

या जिनधर्म बिना गति जीवकी काह भई नहीं जाय उचारी ।
राचि रह्यो मन पुद्गलमें अति छाय रही घट भर्म अंधारी ॥
यद्यपि श्रीगुरु के उपदेश रवि किरना न करे उजियारी ।
सूझि परे न कभू तदपि शिव पंथ पियूष कहे सुविचारी ॥ २६ ॥

मनुष्यों के नामों पर से आध्यात्मिक उपदेश ।

दागजीको संग पाय धारयो है गुमानचंद, फूलचंद होय दयाचन्द न मनाश्रो है ।

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

हठेसिंग मनधार जप्यो न केवलचन्द, रूपचन्द पाय दुलीचन्दजी कहायो है ॥
भूल्यो भगवानचन्द वण्यो सरदारसिंह, दानमल नेमचन्द चित्त न वसायो है ।
अमीरिख कहे सुखदेवकी जो आस होय, धारले धरमचन्द ज्ञानचन्द गायो है ॥
मनछाराम वश होय वांधत करमचन्द, मानसिंह साहदास तासे प्रेम ठायो है ।
धनराजजी की मन धारत उमेदचन्द, झगडूजी वश जसराजजी गमायो है ॥
सुखलाल माहे जीवो रह्यो है मगनमल, उदेचंद आयो घर तबे पछतायो है ।
अमीरिख कहे प्राणी कालूरामजी से डर, ज्ञानचन्द सीखधार खीमजी कहायो है ॥
हँसराज कर कर जोड़त कनकमल, मनमें हरखचन्द अधिक धरत है ।
फतेचन्द आस करे होवत फकीरचन्द, मानचन्द सेती प्यारचन्द तू करत है ॥
खूबचन्द देख देख भावे नहीं जोगराज, उत्तमचन्द की चाल छोड़के फिरत है ।
अमीरिख कहे नित भजले तिलोकचन्द, लाभचन्द संग लेके संसार तिरत है ॥
हीरालाल जैसो पाय करमों का रणछोड़, मोतीलाल सीस छायो तासे मन डररे ।
संतदास देख देख वण्यो है तू नंदराम, खीमाजी कू धार जगन्नाथ ध्यान धररे ॥
भूलेसिंग छोड़े तव होवत सोभागचन्द, मदनजी त्याग से आनन्दराम परेरे ।
अमीरिख कहे चेत चेत भाई जीवराज, दयाचन्द धारे सेती होवत अमररे ॥४०॥

चोखा और फोतरे का दृष्टान्त ।

एक दिन चोखो करी मान फोतरा से कहे, छोड़दे हमारो संग काइ काम आवेगा

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

गुरु-प्रार्थना ।

यह धर्म लता जो लगाई गुरु तिहीं सींच भले सरसाइयेजी ।
ताहि औसर नेक पधार इते जिन वेन सुधारस पाइयेजी ॥
गुरुदेव पीयूष सुनो अरजी इतना न हमें तरसाइयेजी ।
इन आँखें हमारी कु मोदनिकु मुख इंदु गुनी दरसाइयेजी ॥ ३४ ॥
दर्शन दीध दया करिके अहलाद भयो चित्त धर्म उछाव में ।
दान को लाभ दियो न हमे दिन वीत गये कितने चित चावमें ॥
का अपराध बन्यो हमरो यह ऐसो न चाहिये धर्म के भाव में ।
काहे पियूष इते हमको तरसावत हो रहो एक ही गाव में ॥ ३५ ॥

जीव की स्थिति ।

या जिनधर्म बिना गति जीवकी काह भई नहीं जाय उचारी ।
राचि रह्यो गन पुद्गलमें अति छाय रही घट भर्म अंधारी ॥
यद्यपि श्रीगुरु के उपदेश रवि किरना न करे उजयारी ।
सूझि परे न कभू तदपि शिव पंथ पियूष कहे सुविचारी ॥ ३६ ॥

मनुष्यों के नामों पर से आध्यात्मिक उपदेश ।

दागजीको संग पाय धार्यो है गुमानचंद, फूलचंद होय दयाचन्द न मनायो है ।

हटेसिंग मनधार जप्यो न केवलचन्द, रूपचन्द पाय दुलीचन्दजी कहायो है ॥
भूल्यो भगवानचन्द वर्ण्यो सरदारसिंह, दानमल नेमचन्द चित्त न वसायो है ।
अमीरिख कहे सुखदेवकी जो आस होय, धारले धरमचन्द ज्ञानचन्द गायो है ॥
मनछाराम वश होय बांधत करमचन्द, मानसिंह साइदास तासे प्रेम ठायो है ।
धनराजजी की मन धारत उमेदचन्द, झगडूजी वश जसराजजी गमायो है ॥
सुखलाल माहे जीवो रह्यो है मगनमल, उदेचंद आयो घर तबे पछतायो है ।
अमीरिख कहे प्राणी कालूरामजी से डर, ज्ञानचन्द सीखधार खीमजी कहायो है ॥
हँसराज कर कर जोड़त कनकमल, मनमें हरखचन्द अधिक धरत है ।
फतेचन्द आस करे होवत फकीरचन्द, मानचन्द सेती प्यारचन्द तू करत है ॥
खूबचन्द देख देख भावे नहीं जोगराज, उत्तमचन्द की चाल छोड़के फिरत है ।
अमीरिख कहे नित भजले तिलोकचन्द, लाभचन्द संग लेके संसार तिरत है ॥
हीरालाल जैसो पाय करमों का रणछोड़, मोतीलाल सीस छायो तासे गम डररे ।
संतदास देख देख वर्ण्यो है तू नंदराम, खीमाजी कू धार जगन्नाथ ध्यान धररे ॥
भूलसिंग छोड़े तब होवत सोभागचन्द, मदनजी त्याग से आनन्दराम धररे ।
अमीरिख कहे चेत चेत भाई जीवराज, दयाचन्द धारे सेती होवत अमररे ॥४०॥

चोखा और फोतरे का दृष्टान्त ।

एक दिन चोखो करी मान फोतरा से कहे, छोड़दे हमारो संग काइ काम आवेगा

थारो संग छूटा म्हारो सुकन लेवेगा लोक, वर राज साजनके सीसपै चढावेगा ॥
थालमें परूसी वीर वाला मित्र सामे धरे, परव दिवस आया मुझने मनावेगा ।
नाना भांत वस्तु लोक चाहसे करेगा सुणो, थाके गया म्हाको घणो आदर वधावेगा
फोतरा रीसाई कहे चोखाजी अरज सुणो,रक्षा करूँ थाकी नी तो घणो दुख पावोगा
धमाधम मूसला की मार जो पड़ेगा थाके, छूटे साथ म्हारो जद सूपमें रुलावोगा
पाणीमें डुबावे थाने रांधेगा चरुमें घाल, आगमें पचावे और घट्टीमें पिसावोगा।
कहे अमीरिख मति करो थे चोखाजी मान,म्हारो साथ छोड्या पोछे घणो पछतावोगा
रीस करी चोखा कहे फोकट विचार करे, फोतरा अभागी संग छोड़ी क्यों न जावे है।
जाणी अपमान चाल्या फोतरा सराप देई, निसंतान हो जो एम वचन सुनावे है।
एसही विचारो जन संप से बने है काज, आपस की फूटमें विपत दुख पावे है ॥
अमीरिख जुगत लगाई समझाई कहे, संप सुखमूल सभी साजन सुनावे है ॥४३॥

गौ का दृष्टान्त ।

एक माती गाय दूजी गायसु कुशल पूछे, कांए वाई एती तूं क्यों दुवली शरीरको।
बोली म्हारा मालिकके दया नहीं मनमाय, नाखत न पूरो घास रहूँ पीवी नीरको ॥
माती कहे वाई क्यों नी आवे तू हमारे संग, जव जारी माती करू मटूं भूख पीरको
कह्यो मान गई संग सुख घाल्यो खेत मांही, खावा लागा जब गाय आणी मन धीरको

एता माहीं घरधणी आयो है चलाय जहां, देखी मातो गाय वाड़ कूदी गई नास है।
सकी नहीं भाग दूजी खेत धणी मारी घणी, लाठी पथरासु मारी दीधी अति त्रास है।
वंधन से वांधी गाय पूछत पूछत घर, गाली मुख केतो गयो मालिक के पास है।
करी है लड़ाई अति लोक बहु मिल्या आय, गाय धणी छोड़ाई करीने अरदास है॥
समभीने गयो घर पाछेसु गायको धणी, डींगलो लेईने तस बांध्यो गलमाही है।
पगसाही वांध्यो काठ दीवो है वहुत मार, फिरत फिरत फेर मिली मातो गाई है॥
पूछत कुशल क्षेम गाई गेणो पेरयो केम, बोली खुदी गाय परताप थारो बाई है।
अमीरिख कहे भवि धारिये दृष्टांत चित्त, खोटी संगति कियासु ऐसा दुःख पाई है॥

जीव रूप द्रोण में पुण्य रूपी मिठाई।

एक सेठ दूने में सिठाई भरी लायो घर, जरी के रूमाल में लपेटी ऊँचो धरे है।
खायके मिठाई दूनो फेंकत वजार वीच, जूता से कुटायके अशुचि ठौर परे है॥
तैसे जीव दूना सम पुण्यकी सिठाई भरी, आदर वधारे लोग खमा खमा करे है।
पुण्य खिस जात तव भ्रमत कुगति मांही, अमीऋषि कहे नाना भांति दुख भरे है॥
एक सेठ कहे प्रिया लीजे एक भैंस मोल, बोली त्रिया वेगी करो विलंब लगावो क्यों?
पति दरसाई सब दूधकी मलाई मेरी, सा कहे अवेरु भैंस तरी तुम खावो क्यों?
राड मेटवेको एक नर फोड़े भाजनको, भैंसने उजाड्यो खेत गाली सो सुनावो क्यों
सेठ कहे कैसी कही भैंस है हमारी तव, कहे अमीऋषि यूं ही झगडो मचावो क्यों

एक जड़मति को सकल पुरवासी मिल, बोलत मूरख नाम ताम दुःख आएयो है।
गयो परदेश भयो तृपित आरत ध्यान, अंजुलि को मांडी जल पीवत अधान्यो है
धून्यो तिन शीस एक बाई कह्यो मूरख है, पूछत है तासो मोहि कैसे पहिचान्यो है।
ताम पणिहारी कहे प्रकट उचारी बात, कहे अमीरिख तोय लक्षण ते जाएयो है॥

एक नृप जीतवेको शत्रुदल लायो तामें, देखके अधिक गज राजा यों विचारे है।
सिंह देख भागे गज सोची पकराई श्वान, खाल पहेराई किये सिंह अनुहारे है॥
चढ्यो सजी सेना किये आगे जुटे सिंह रूप, हाथी देखी भूंसा श्वान राय दल हारे है
कहे अमीरिख चित्त माही सुविचार देख, गुण बिना वेप कछु काज नहीं सारे है।

एक सेठ भाड़ेकी दुकान ले व्यापार करे, लाभ जानी सार करे भाड़ो भी चुकावे है
करत व्यापार पन जाने नहीं लाभ कछु, तुरत ही छोड़के अनेरे ठाम जावे है॥
व्यापारी समान संत भाड़ेकी दुकान देह, लाभ जानी सार करे साता उपजावे है।
जाने नहीं लाभ तब देह वोसराय देत, अमीरिख लाभ धर्म मोक्षको कमावे है॥

एक सिंह काननमें श्वापद विनाशे तदा, मिलि सब जंतु बारी बांधी सुविचार के।
आयो वृद्ध श्याल वारो गयो है विलंब करी, कुपित हृदये पूछयो सिंह ललकारके॥
श्याल कहे स्वामी आज घेरयो अन्यसिंह मोय, सिंह कहे कित संग चाल्यो हित धारके
कहे अमीरिख कूप जलमें बतायो रूप, मरयो सिंह प्रतिबिंब निजको निहार के॥

सिंह भय एक मृग भाग्यो पड्यो पाश माही, युक्ति करी छूटो दूजी जालमें बंधानो है
करके प्रयास तोड़ी पलायन भयो तव, आगे दावानल देखी अति घबरानो है ॥
बची भागो नासे आगे छोड्यो है वंदी कमान, धायो अकुलान एक कूपमें गिरानो है
करी क्यों न रह्यो अमोरिख नाना भांत युक्ति,टले नहीं काल चोट निश्चै करी जान्यो है

पालकने श्याम दोय नंदसे गोविंद कहे, देऊँ अश्व पेला पद वंदे नेमि स्वामी के ।
पालक तुरत गयो वागमें दर्शन काज, गेर रही भावे तब वंदे सिर नामी के ॥
पूछे हरि नेम से प्रथम वंदे किन पाय, द्रव्य कहे पालकने भावे श्याम पामी के ।
श्याम अश्व पामी दरसायो भोलो भावही में कहे अमोरिख धारो वेण शिवगामीके

शिलावट एक दत्त उदर निमित्त जाय, डुंगरसे लायो अच्छो पत्थर निहारके ।
गाय सिंह मूरति यों तीनोंही वनाया रूप, धरे यथायोग्य स्थान सुविध सुधारके ॥
गाय दूध देवे और सिंह उठके मारे ये, दोनों सत्य होय तो ये मूरति दे तारके ।
दोय है असत्य तीजी सत्य कैसे होय ज्ञानी, कहे अमोरिख सोची हियेमें विचारके ॥

कपट करने का फल ।

श्याल कहे ऊँट मामा चालो ने चणाके खेत, कपट न जाण्यो ऊँट संगही सिधायो है
श्याल कहे आधा खेत वीचमें पधारो क्योंनी श्याल ऊँट दोनों आछे २ चूंट खावे है
जंवूक भरायो पेट खेत धणी आयो जाणी, वोल्यो मामा मोयतो भूकणवाय आवे है
ऊँटकी न मानी श्याल भूंकके गयो है भाग, लाठी पत्थरा की मार ऊँट मामाखावे है

ऊँट मामा दाव राखी भाणेजाको एक दिन, कहे गोठ कीजे एक खेत आछो पायो है
मानी मनवार चाल्या मारगमें आई नदी, कैसे पार पोचु जल अधिक भरायो है।
पीठपै बिठायो ऊँट आयो मझधार कहे, भाणेजाजी म्हाने तो लोटणवाय आयो है
कहे अमीरिख मझधार में बह्यो है श्याल, कपट कियासु जीव दुःख ऐसो पायो है॥

मधु-बिन्दु दृष्टान्त।

चउगति कानन में पंथी जीव काल गज, नरभव वट आयु शाखा लटकानो है।
कूप है निगोद अहि क्रोध मान दंभ लोभ, अजगर दोय रागद्वेष भीम जानो है॥
सूसे दिन रैन परिवार मधुमखी सम, विद्याधर संत उपदेश फरमानो है।
अमीरिख कहे त्रिपै सुख मधु बिंदु सम, सहे एते संकट में मूढ ललचानो है॥५८

अंध गज दृष्टान्त।

पंच जाति अंध गज देखनेको आये तहां, पेले गह्यो पांव थंभ जैसो दरसायो है।
दूजे गह्यो कान कहे सूप सम जानो गज, गही तीजे केल थंभ सम तिन गायो है
चौथे गही दंत कहे मुसल समान करी, पुच्छ गही पाचमें सो वांस के सुनायो है
अमीरिख कहे तिन्हें ठानी रार आपसमें, दृगवंत न्याय कहो झगडो मिटायो है॥
पेलो यों कहत कालही के वश जानो सब, त्योंही नर दूजे ने स्वभाव मन भाख्यो है
तीजे कह्यो भावी चौथे करम प्रधान कह्यो, पंचमे उद्यमवश मानी मत दाख्यो है॥

आपससें पांचों ही विवाद करे अंध सम, एक एक वात गृही पक्ष दृढ़ राख्यो है ।
सरवज्ञ दृगवंत दाख्यो सरवंग नय, सो ही स्याद्वाद से अमृत अभिलाख्यो है ॥

हँस-काक दृष्टान्त ।

हँस काक दोय आय वैठे एक वृक्ष पर, आपस में स्नेह तिण ठाण्यो सुप्रसंगसे ।
ताही समे भूप एक जानी शीत छाय वैठो, विट करी वायस लगी है नृप अंगसे ॥
कोपी एक मारयो वाण घायल व्हे परयो हँस, अहो श्वेतकाक भूप दाखत उमंगसे
अमीरिख कहे नहीं काक हँस हूँ नरेश, पायो मैं मरण नीच वायसके संगसे ॥६१

मूपक पन्नग दृष्टान्त ।

जो जो जिण औसरमें शुभाशुभ होनहार, तांही को मिटावे ऐसो नहीं कोई जगमें
काहू चूहे चुप धरी पन्नग पिटारो काट्यो, उद्यम करयो पै जाय पड्यो उवसग्गमें
कीनो नहीं उद्यम तथापि अहि पेट भरी, वंधन से छूट के सिधायो सोही मगमें ।
अमीरिख कहे ऐसे समझी सुजान जन, धारया जिनवेण सुख होय पग पगमें ॥

श्री नेमिनाथजी और राजीमतीजी के नौ भव ।

धनराय धनवंती पेले देवलोक देव, चित्रगति विद्याधर रत्नवती नारी है ।
चौथे कल्प अप्राजित राय प्रीतिमती राणी, ग्यारमे स्वरगे दोनु देव प्रीति धारी है
शंखराय जशोमती राणी दाख पाणी दियो, अनुत्र विमान चौथे देव अवतारी है
नेमिनाथ राजीमती मुक्तिमें पधारया दोई, कहे अमीरिख सदा वंदना हमारी है ॥

दीक्षा देने के लिए अयोग्य ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
क्रोधी मानी दंभी लोभी कौतुकी पापिष्ट धूर्त्त, हीनाचारी नपुंसक शिष्य नहीं कीजिये
१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९
वेश्यासुत अंधो बेरो गूंगो छिन्न अंग कुष्ठो जाति-कुल-बुद्धि-बल-हीन ना पतीजिये ।
२० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८
अणउलखित बाल वृद्ध अपराधी व्याधि, उनमत्त दास दुष्ट मोल नहीं लीजिये ।
२९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४
गर्भवती धाय रिणी निंदक मिथ्याती द्वेषी, अमीरिख यांको जैनदीक्षा नहीं दीजिये

संसार के सुख स्वप्नवत् हैं ।

एक महारंक नर भम्यो है नगरी माही, थक्यो तब सूतो आय तरुवर छांय है ।
नींद वश हुवो तब लाधो है सुपन तस, हुवो चक्रवर्त्ती छत्र चामर धराय है ॥
गज रथ तुरी देश देश के भूपाल जीते, कामिनी के संग करे केल मेल मांय है ।
जाग्यो तब वोही रंक तैसे ही संसार रीत, अमीरिख कहे कैसे रह्यो तुं लोभाय है
एक निरधन नर देख्यो है सुपन रेन, तामें एक धनको भंडार तिन पायो है ।
बांधी है हवेली सार देश देश गाम गाम, कीनी है दुकान अति वणज चलायो है
पुरमें आदर मान खमा खमा कहे सहूँ, चाकर अनेक नारी संगमें लुभायो है ।
जाग्यो तब निरधन मिलत न पूरो अन्न, अमीरिख कहे ऐसो संसार कहायो है ॥

एक महामूढ के स्वप्नवत् संसार।

एक महामूढ अविवेकवंत स्वपन में, हुवो अति चतुर पण्डित सरदार है।
सिद्धांत पुरान वेद न्याय तर्क ग्रंथ कोप, काव्य श्लोक व्याकरण छंदको उच्चार है।
बहोतर कला विद्या चउदे निपुण भयो, करी करी वाद जीत्या पंडित अपार है।
जाग्यो तव अत्तर न याद रह्यो एक तस, अमीरिख कहे तैसो जाणिये संसार है॥

एक वंध्या नारी के स्वप्नवत् संसार।

एक वंध्या नारी तिन स्वपनमें पूत जन्यो, जानत सफल दिन आनत उल्लास है।
सोहागणी आय केई गावत मंगल गीत, बटत बधाई सब पूगी मन आस है॥
वाजित्र अनेक वाजे सज्जन सकल मिल, ब्राह्मण भी आय कीनो नामको प्रकास है
नींद गई खुले नैन हुई हैं उदास मन अमीरिख कहे तैसे जगत् के विलास है॥६८

संसार में सार वस्तु।

स्वपन समान ये संसार है असार तामें, आपो तज भूल्यो फिरे मृग ज्यों अज्ञान है
दारा सुत आदि मोह पाश में बंधायो मूढ, करत मगत कूड कपट की खान है॥
अष्टादश पाप कर बांधत करम शठ, काल मुख जाय मन करे पछतान है।
अमीरिख कहे यांमे तप जप व्रतसार, धार शुद्ध भाव तासे होय निरवान है॥

प्रश्नोत्तर माला

॥ दोहा ॥

श्री गुरु पद पंकज नमूँ, समरी अमरी माय ॥
प्रश्नमाला रचना कहूं, भविजन ने सुखदाय ॥ १ ॥

सवैया २३ सा ।

कौन है बंध ? विषै अनुराग, सुमुक्ति ? विरक्त दशा चित्त आने ।
को भव छेदक ? श्री जिन आगम, मोक्ष-सुहेतु ? क्रिया अरु ज्ञाने ॥
नर्क का द्वार ? त्रिया चित्त जानहू, स्वर्ग प्रदायी ? अहिंसा प्रधाने ।
को अति आनन्द ? लालच त्याग, अमीरिख धार सुसोख सुजाने ॥ १ ॥
को सुख ? सेन करे समतायुत, जागृत कौन ? विवेक हिए ।
कौन ठगी ? इह इंद्रिय पाँच, सुमित्र कहो ? शिव राह दिए ॥
कौन दरिद्र ? करे अति लोभ, कहो धनवंत ? संतोष लिए ।
जीवत मृत्यु ? निरुद्यसवन्त, अमीरिख प्रश्न सुधा सुपिए ॥ २ ॥
कौन है फांसि ? ममत्व अहंपद, सो उभये भव दुख दिखावे ।
अंध से अंध है कौन-कहो गुरु, जो विषयातुर चित्त कहावे ॥

को दुःखमूल है ? कामिनी द्रव्य, कहो कहा मृत्यु ? कुयश बतावे ।
धार हिए हित सीख सुजान, अमीरिख भेद कही समझावे ॥ ३ ॥

को गुरु ? दे उपदेश भलो हित, कौन सुशिष्य ? सुभक्ति रचावे ।
को महारोग ? ये है जग जाल, कहा उपचार निजातम ध्यावे ॥
कौन आभूषण ? शील मनोहर, तीरथ को ? मन शुद्ध रहावे ।
धार हिए हित प्रश्न सुजान, अमीरिख उत्तर दे समझावे ॥ ४ ॥

त्याग के योग्य कहा जग में ? सुन, कंचन नारी कहे गुरु ज्ञानी ।
सेवन योग्य कहा जु भले ? गुरुदेव पदांबुज आगम वानी ॥
कौन सुसाधु ? नहीं जस चाह, कहो कुण मूढ ? विवेक न जानी ।
जीवन सोहि नहीं कछु दोष, अमीरिख सीख गहो भवि प्रानी ॥ ५ ॥

विद्या कहा कहो ? स्वर्ग की दायक, ज्ञान कहा ? अक्षय सुख देवे ।
लाभ कहा ? निज आतम जानत, शूर कहो ? जो विषै नहीं सेवे ॥
को जग जीत ? रहे वश में मन, विष कहा ? विषया रस लेवे ।
कौन दुःखी ? जिनके अनुराग, अमीरिख सार विचार के केवे ॥ ६ ॥

को नर प्राज्ञ सुधीर कहो ? त्रिय काम कटाक्ष से चित्त अडोले ।
है धन्य ? जो उपकार करे पर, को पूजनीय ? सुजान अमोले ॥

पातक मूल ? अविद्या कही, कहा धर्म को मूल ? विनय गुरु बोले ।
कौन पशु ? नहीं जासु विवेक, अमोरिख प्रश्न सुधा-रस तोले ॥ ७ ॥

कौन बड़े रिपु ? कर्म अरी दुःखमूल कहा ? ममता अभिमान ।
का मुख शोभ ? लवे मधुरापन, दान सिरे कहा ? है अभेदान ॥
कौन है तस्कर ? इन्द्रि विकार, सुसोभ सभा विच विद्या प्रधान ।
नित्य कहो किन से डरिये ? अपवाद अरु जग जाल तूफान ॥ ८ ॥

सवैया इकतीसा ।

किनतें रहीजे दूर ? पापी खल दुष्टनते, चित्तसे न भूलूँ कहा ? कामिनी चरित्तको ।
मोक्ष अभिलाषी तांकू शीघ्र कहा योग कान ? दया दान मन दम साधन पवित्तको ॥
कौन नर मूक ? जो न बोली सके समे युक्त ? बधिर को ? सुने नहीं हित अहितको ।
कौन न भरोसे योग ? अमोरिख कहे त्रिय, कौनसें अंतर तजूँ ? जान निज मित्तको ॥

सनत्कुमार चक्रवर्ती ।

सौधर्मी सभा मझार देवी देव परिवार, अवधि प्रयुञ्ज इन्द्र ऐसी कहे बात है ।
चक्रवर्ती सनत्कुमार महा गुणधारी, रूप है उदार सार निरुपम गात है ॥
नहीं ऐसो रूपवंत अन्य कोई देव नर, तीन लोक मांही जस महिमा विख्यात है ।
अमीरिख कहे एक देव नहीं मानी बात, देखण उमायो चाल्यो चित्त हरखात है ॥

वृद्ध विप्र रूप कियो हाथ पग डोले सिर, अंग सब धूजे नहीं सूझे पूरो नेणसो ।
पणही पोट सीस पर तोकके आयो चलाय, राजद्वारे आयो पोट डारत अनेणसो ॥
पेरायत पूछे आयो कहां से स्वरूप किसो, मारगमें एती जूती फाटी कहे वेणसो ।
अमी कहे भूप-रूप देखणे की चाह मुझ, देखूंगा दीदार तब पामू चित्त चेनसो ॥

रक्षक चलाय गयो भूप पास ततक्षण, सांड बात कहे सब अरज गुजारी है ।
भूप आज्ञा पाय आय देख रूप हरखाय, अहो रूप अहो रूप वाणीयों उचारी है
सुण्यो जैसो देख्यो आज आनन्द अपार भयो, राय कहे पूरो रूप नहीं इणवारी है
अमीरिख कहे करी स्नान अलंकारधार, बैठूं सभामांही तब देखो छबि मारी है ॥

गंधोदक स्नान करी धारया है अमोल वस्त्र, रतन जडित भलो मुकुट सो सीस है ।
कुंडल अनूप कंठ हार कड़ा पांचो कर, मुंदड़ी अंगुलि मांही पेरी अवनीस है ॥
रतन सिंहासन बिराजे सब साज सज बिप्रको बुलायो मन धारके जगीस है ।
अमीरिख कहे विप्र आयके सभा मझार, निरख डोलायो सीस देखे नर ईस है ॥

पूछे भूप विप्रसु डोलायो किण काज सिर, विप्र कहे राजा अब वैसो रूप नाइ है ।
अभिमान करत बिणास गई देह तेरी, थूंक क्यों न देखे भूप पीकदानी मांइ है ॥
कीड़ा कलबल देख हुवे भयभीत नृप, देवता प्रकासे अब चेते क्यों न भाई है ? ।
साड़ी सातसे वरस छायो रक्त पित्त तन, अमीरिख देव गयो गगन सिधाई है ॥५

ततखिण राजा सब संसार असार जाण, छोड़ राज्य ऋद्धि लियो संजमको भार है।
चौरासी चौरासी सेंस हाथी घाड़ा रथ छोड़, छन्नुकोड पाला देश बत्तीस हजार है।
चवदे रतन नव निधके भंडार त्यागे, लक्ष एक वाणु सेंस तजो जिणे नार है।
अमीरिख कहे मोह वश खट मास लग, संग संग फिरयो अंतउर परिवार है॥
झूरे परिवार सब देख आयो इंद्र तब, समझाया सबको धीरजपन धारी है।
मुनिको वंदन कर इन्द्र सुरलोक गयो, पालत आचार तब संजम करारी है॥
दुक्कर परीसा सह्या किर्वा नहीं काया सार, घनघाती घात कर केवल उजारो है।
अमीरिख कहे मुनि पाया है मुगतगढ़, सदाहो त्रिकाल ताकूं वंदना हमारी है॥७
चेत भवि प्राणी जाण काचा कुंभ जैसो काया, हाडको पिंजर छायो उपरसु चाम है।
महा अपवित्र दुर्गंधी नहीं सार कछु, करे क्यों गुमान मत मान थिर ठाम है॥
बादल की छाया जैसे इन्द्र के धनुष्य सम, पल में पलट जाय होवत निकाम है।
अमीरिख कहे यामें तप जप व्रत सार, धार प्रभु वेण जासूं मिले शिवधाम है॥

चार प्रकार के गोले।

सद्गुरु बारबार समझावे हित करी, चिंतामणि रतन सो नरभव पायो है।
भटकत चारुँ गति ऊँच नीच भव किया, शुभाशुभ कर्मवश सुख दुःख आयो है॥
मनुष्य जनम क्षेत्र आरज उत्तम कुल, पंचेंद्रिय पूरी आयु दीरघ कहायो है।
सुगुरु सिद्धांत वेण सुश्रद्धा प्रतीति सार, अमीरिख कहे कीजे उद्यम सवायो है॥

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

मुगत मारग नहीं पायो है करम वश, कुगुरु को संग पाय भ्रम में भुलायो है।
धारयो कुधरम और सेव्या है पाखंड देव, उजड़ मारग चाल नरक सिधायो है॥
फूटी नाव अंध निरजामक आरूढ होय, तिरवे की आशा करे मध्यमें डुबायो है।
मोह-नींद माही जीव सोयो है निचिंत नित्य, अमीरिख कहे यूं ही जनम गमायो है
एक समे शुभ करमों के जोग देव हुवो, रतन जडित पायो भुवन उदार है।
तिरयंच गति माही नाना योनि धारी जीव, जनम मरण सही वेदना अपार है॥
पायो है नरक भव दुःख है अनंत जिहां, वेतरणी कुंभीपाक जम देत मार है।
मनुष्य जनम जोग तिरवे को पाय भव्य, अमीरिख कहे अब हारे क्यों गमार है
सुणो उपदेश प्रतिबोध पाया चार जीव, करजोड़ विनै कर कहे ऐसे वेण है।
भ्रमत अज्ञान वश अंध के समान अब, ज्ञान अंजन को आंज खोले हिय नेण है
चार जीव चार गोला सम कह्या जिनराय. मिट्टी काष्ठ लाख और चोथो गोलो मेण है
अमीरिख कहे अधिकार चोथा ठाणा मांही, कहे विसतार उपकारी मुनि सेण है॥

मोम का गोला।

सुणी उपदेश एक निकल्यो बाहिर नर, देख धर्मद्वेषी करी हांस तिणवारी है।
धरमको धोरी हुवो बांध मुंडो बेठो जाय, देवे कोई गाल सुणा रह्यो मौनधारी है
देवलकी ध्वजा सम फिरया परिणाम तस, सुनके वचन दियो धरम विसारी है।
अमीरिख कहे थोड़ा तापसुं पिघल जाय, मेण गोला जैसे नर जाणजे असारी है

लाख का गोला ।

दूजो नर वाणी सुण चाल्यो है आवास निज, निंदक के वेण नहीं चित्तमें धरत हैं
तब कहे लोक भाई करिये धरम नित्य, आयो मात पास तब माता उचरत है ॥
भाल सल चढा कहे घर से निकल दुष्ट, निर्दयी पातकी होय धरमी फिरत है ।
लाख गोला सम सुण वचन विसारयो धर्म, अमोरिख कहे नहीं संसार तिरत हैं ॥

काष्ट का गोला ।

तीजो नर सुणके वखाण चल आयो घर, लोक और माता मिल बोली दुष्टवाणी है
रीझया हैं अचल जाण आयो निज नारी पास, क्रोधण कराल करी रीस कहे ताणी है
मरूं अपघात करी डरयो है वचन सुण, रखे विष खाय होय घर धूलधाणी है ।
आगन के जोग काष्ठ गोलो जलो राख हुवो, अमीरिख कहे सोही धरम अजाणी है ॥

मिट्टी का गोला ।

चोथो नर बात सुणो प्राणी चित्त ठाम राखी, आयो है बजारमांही लोक कहे बात है
धरमको धोरी हुवो बाबो होय बेठो जाय, सिंह जैसे गाजी बोल्यो वचन विख्यात है
धरम अजाण मूढ वांधे क्यों करम पोट, उत्तम की निंदा किया आवे कांइ हात है ।
कांइ मैं बिगाड्यो तुज देवो क्यों फोगट गाल, अमीरिख कहे ऐसा कह्या अवदात है ॥

माता करी रीस तव दीधो है जवाव तस, धरम करत मोकुं वरजे क्यों मात है ?।
साची माता सोहीं जो सिखावे धर्म नंदनको, वेरण है पूरी जो तूं करे झूठी बात है
तूं ही कर धरम संसार को असार जाण, परभव जाता संग जावे धर्म आथ है।
अमीरिख कहे सुण पुत्र का वचन वोली, कर पूत सुकृत धरम हरखात है॥

माता समझाय कर आयो है त्रिया के पास,देखी भरतार वोली वेण विकराल है।
रे भूंडा तू निशदिन लगो है साधु के संग, रही हूँ अकेली घर मारग निहार है॥
माथाको मुंडाय क्यों न मांगो भीख घर घर, कहां लग कहूं नहीं कामकी संभाल है
वारवार कहूं तोय लाज नहीं तिल भर, अमीरिख कहे भवि देखो जग जाल है॥

क्रोधण कंकाली करी तड़क फड़क वोली, पकड़ीने बांह आगे न्हाक्या नाना बाल है
यो ले थारो घर जाय पड़ूं कुवामें आज, कर जैसी आवे दाय देवे इम गाल है॥
सुनके वचन नहीं डरयो है लगार मन, कहे क्यों करत कोप खोटी जग-जाल है।
अमीरिख कहे नहीं छोड़ूं मैं धरमपंथ, मिट्टी गोलो पाक होय सहे आग झाल है

चार विध गोला सम पुरुष वखाण्या गह, तामें मिट्टी गोलो महा उत्तम विचार है
कष्ट मांहि रहे दृढ़ डगे न धरम सेती, शिवपंथ साधे होय आनन्द अपार है।
दुविध धरम शुद्ध भावसु आराधो भव्य, जनम मरण टाल होय निराकार है॥
गुरु सुखारिखजी प्रसाद अमीरिख कहे, धारो हित सीख नित रहे जै जैकार है॥१२

ॐकार का स्वरूप।

तीन सुवरन मिले बने ॐकार वर्ण, अकार उकार पुनि मकार सुधारिये।
अरध सुमात्रा ताके उपर जो बिंदु देहि, याहीको विचार हिय माही सुविचारिये॥
अधोलोक अकार उकार ते उरध लोक, मकारसे मध्यलोक कीजे निरधारिये।
अर्द्धमात्रा सिद्धशिला बिंदु सिद्ध रूप शुद्ध, अमीरिख कहे न्याय पक्ष से निहारिये।

श्री महावीर स्तुति।

जपो जिनराज सरे सब काज मिले सब साज हरे दुःख धंदा।
मिटे भयभीत लहे जगजीत प्रभुजी से प्रीत किया सुख कन्दा॥
करो नित्य जाप हटे सब पाप, वधे सुप्रताप टले सब फन्दा।
धरो हित सीख आनन्द प्रतीख, जपे अमीरिख सिद्धारथ नन्दा॥२॥

सर्व लघु वर्ण काव्य।

परम धरम सज ऋषभ ऋषभ भज, फलत सकल कज सरव भमन हर।
गहत धरम धज हटत अनघ गज, टरत भरम रज खलपण तजकर॥
करम करत लज कठ अठ कठ दज करण चरण भज धरम सरण वर।
अमरत वच अज रहत वरत मज, जनम मरण तज लहत अचल घर॥३॥

रचयिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

देव—वर्णन काव्य।

हिंसा झूठ चोरी सोग मत्सर न भय लेश, प्रेम न प्रसंग हास पास न वसाइये।
अमीरिख कहे गुण द्वादश विराजमान, ताको भव्य प्राणी नित्य शुद्ध भाव ध्याइये

गुरु-वर्णन।

गुरु पंच महाव्रत धारी पंचेन्द्रिय जीत, कषाय तजत चार जग दूर करिया।
जाने भाव कर्ण जोग-सत्य कह्या जिनराय, क्षमाने वैराग्यवंत सत्यशील दरिया॥
मन वच काया सम धारत वारत काम, दर्शन चारित्र ज्ञान-गुण शुद्ध भरिया।
जीवण की आश भय मरणको नहीं लेश, कहे अमीरिख जाके पद सीस धरिया॥

धर्म-वर्णन।

धरम परम सुखदायक जगतमाही, केवलि प्रणीत धार तिहुँ लोक नित्त को।
अहिंसा वचन सत्य अदत्ता न लीजे पर, धारिये शीयल व्रत दूर तज वित्त को॥
समिति गुपति शुद्ध दान शील तप भाव, क्रोधादिक छोड़ मान वेण चित्त हितको
अमीरिख कहे खंती आदि दश भेद धर्म धारी कर्म-रिपु टाल लहे जग जीतको॥

धनवंत देख सब आदर करत कहे, घर है तुमारो आप आगे पांव धारिये।
धन सेती माने राय पंचमें बड़ो कहाय, करत है चाह सब कीरत उचरिये ॥
देखके दौलत नहीं धारिये गुमान मन, पूरव सुकृत फल दिलमें विचारिये।
अमीरिख कहे धन बादलको छाय समं, धन को तो सार एक सुकृत वधारिये ॥७

मुखमें मिठास और अंतर कपट वसे, तांको भव्य भूल मत कर विसवासरे।
जहर को कुंभ और अमृत को ढांकण है, सरप ने मोर को दृष्टांत तस भासरे ॥
बक सम ध्यान धरे कपट कलुप भाव, चित्त‥ ‥‥ में विमास रे।
अमीरिख कहे तांके भूलहु न जाजे पास, कपट प्रताप मरी दुरगत वासरे ॥८॥

विवेकी पुरुष तोलकर बोलते हैं।

बोलीमें आदर और जग में सुजस होय, बोली से सकल जन मित्र हो रहत है।
बोली से अनेक विध भोजन मधुर मिले, बोली से खावत मार गालीभी सहत है
बोली से है खांड और बोली से पैजार त्यार, बोली से तो जाय मूढ कैद ही लहतहै
अमीरिख कहे भवि बोली है रतनसार, सुगुणी विवेकी बोल तोलके कहत है ॥९

संसार की अनित्यता।

झूठी काया माया जैसे बादल की छाया सम, पुण्य खिस जाय नहीं ठेरे पाय पलहै
दामिनी उजास जैसे संझाको प्रकाश जाण, ठेरे नहीं मूढ जैसे अंजुलिको जल है

डाभ अग्र विंदु जैसे इंद्र के धनुष्य सम, कुंजर को कान जैसे तरुवर दल है।
अमीरिख कहे चेत चेत हो हुसियार नर, गाफिल रहे ते आगे पड़े मुसकल है॥

प्रभु-प्रार्थना।

कृपानाथ कृपा करी दुष्ट बुद्धि नाश कर, काम क्रोध मोह लोभ चारों रिपु मारिये
होय दूर अहंकार रुचे चित्त उपकार, शांत चित्त क्लेश नाश कुबुद्धि को टारिये॥
मेरी लाज राखो नाथ मैं तो हूँ अनाथ दीन, कर्म रिपु टार मेरी बांहको संभारिये
अमीरिख कहे प्रभु तारन तिरन आप, दुःख रूप सागर के पार यों उतारिये॥

अभवी पहिचान।

वरसत मेघधार भेदे नहीं मगसूल, अभवि को चित्त नहीं भेदे जिनवाणीए।
जलत जवासो जैसे अति घन वरसत, खारको जमीपै नहीं बीज वृद्धि मानिये॥
तुपको पछारे नहीं मिलत तंदुल कन, निकसे न माखन मथावे कोई पानिये।
सन्निपात रोगी तांको दूध खांड जहर होय, अमोरिख कहे ऐसे अभवी पिछानिये

जीव दया महत्त्व।

जगत के जीव तांको आतम समान ज़ान, सुख अभिलापी सब दुःख से डरत हैं।
जाणी इम प्राणो पालो दया हित आणी यही मोक्षको निसाणी जिनवाणी उचरत हैं
मेघरथ राय मेघकुंवर धरमरुचि, निज प्राण त्याग पर जतन करत हैं।
जनम मरण मेट पामत अनंत सुख, अमोरिख कहे शिव सुन्दर वरत हैं॥१३॥

शिकार निषेध ।

ससल्या मृगादि केइ वनमें गरीब जीव, सभी निराधार ताको कौन आधार हैं ।
दोडत फिरत निज प्राण के बचायवेको, वैरी हैं अनेक कोइ न करत सार हैं ॥
लोक सब जाणे वाको कोई नहीं सार करे, अमीरिख कहे अणी बातने विचारिये
कायर अनाथ ऐसे जीवनको करे घात, ऐरे निर्दयो ताको दया नहीं आई हैं ॥
वेद औं पुराण वाची सुनिके विचार रखे, ईश्वर रचो हैं सृष्टि पक्ष दृढ धारे हैं ।
प्रभुके बनाये पशु पक्षी आदि जीव सब, तांको मारी डारे हिय न्याय न विचारे हैं
कुंभकार पात्र कोऊ फोड़े ता दिरावे दंड, आप सजावान भये ताको ना निहारे हैं
कहे अमीरिख कर्म न्यायके विरुद्ध देखो, 'क्षत्रीपद पायके गरीब जीव मारे हैं' ॥

जिनवाणी स्तुति ।

पाप हरे चित्त शुद्ध करे शिव वास बतावन को अगवानी ।
कर्म अहि विष गारुडी मंत्र अनंत अखूट निधि दरसानी ॥
तारक जहाज समान महोदधि रोग अज्ञान सुधा सम जानो ।
धर्म विवेक हिय प्रगटावन या जग में प्रगटी जिनवाणी ॥१६॥
ताप अज्ञान नसे हिय के मनु चंद्रकला सम है सुखदानी ।
चातक भव्य मिटावन प्यास मनु शुभ स्वांत सुधा सम जानी ॥

टालत जन्म जरादिक रोग कही हितकारन केवलज्ञानी ।
श्रीगणराज प्रकाश करी भवि तारण कारण ये जिनवाणी ।। १७ ।

केवलवंत महंत जिनेश प्रकाश करी सबको सुखदानी ।
या सुन होय मिथ्या तम दूर लहे निज आतम रूप पिछानी ।।
जास प्रसाद अनंत तिरे तिरिहैं तिरते जु अभी भव प्राणी ।
या सम अमृत और नहीं धन है धन है धन है जिनवाणी ।।१८।।

स्फुट समस्या पूर्त्तियाँ

मंगलाचरण ।

केवल दरस ज्ञान भानको प्रकाश भयो, संशय तिमिर पुंज दियो है निवारि के ।
चौतीश अतिशैं वर पेंतीस वचन गुण, देव पद राजे दोय दश गुण धारि के ।।
लोकालोक द्रव्य क्षेत्र काल भाव भव आदि, भव्य तारवेको कह्यो भेद विसतारिके
अमीरिख कहे ऐसे देव अरिहंत ध्याय, कहूँ मैं समस्या प्रति उत्तर विचारि के ।।१

किन को न रुचे जिन वेण सुधा ।

शुभ शब्द अनूप गंभीर महा स्वर पंचम वाणि वदे विबुधा ।
नर नारी पशु सुर इंद्र शची मिल आवत वैन पियूष छुधा ।।

सब लोक अलोक के भाव कहे पट्द्रव्य पदारथ भेद सुधा ।
चित मोद अमीरिख होय तवे किनको न रुचे जिनवेन सुधा ? ॥२॥

पुनश्च ।

नहिं जानत जेह निजातम रूप रता पर द्रव्य चले विरुधा ।
घट जोर मिथ्या ज्वर को तिहसे सब दूर भई निज धर्म छुधा ॥
मन लीन परिग्रह आरंभ में प्रभु शीख न धारत भेद दुधा ।
जु अमीरिख जीव अभव्य हुवे तिनको न रुचे जिनवेन सुधा ॥३॥

शिव पामिवेको कह साधन है ?

धन धान तजे गृह छोरि भजे जिनराज के नाम लग्यो मन है ।
शुद्ध सम्यक् ज्ञान विराग रुचे न करे परमाद इको छिन है ॥
निशवासर दुक्कर धारत कष्ट अनित्य लखे मनुपा तन है ।
जिन आन अमीरिख शोस धरे शिव पामिवेको यह साधन है ॥४॥

प्यारो भयो कब नैनको पानी ?

शासन नायक वीर जिनेश त्रयोदश बोल अभिग्रह ठानी ।
द्वादश बोल मिले चंदना गृह आते लखि प्रभुको हरखानी ॥
नैनमें नीर निहारयो न वीर अमीरिख ताम फिरे जिनज्ञानी ।
देख विमूरति आर लियो जिन प्यारो भयो तव नैनको पानी ॥५॥

किह कारन दिव्य प्रकाश भया ?

जनमें जब श्री जिनराज तबै सबही जिय चेतन चैन लिया।
तिह औसर देव सुरेश मिली जिन ले गिरि जाय कल्यान किया ॥
सुर आवत जात असंख्यन ले वर यान प्रकाश आकाश छया।
गुरुदेव अमी मुझ सत्य कह्यो इह कारन दिव्य प्रकाश भया ॥६॥

तुमरी छबि जात न मोपे कही।

मणि मंडित हेम सिंहासनपै जिनराज विराजत ज्ञान लही।
बिब चामर वींजत देवपति त्रय छत्र सुशोभित आज मही ॥
शुभ वृक्ष अशोक ध्वजा लहिके नभमें वर दुंदुभी बाज रही।
तब देव सुरेश कहे प्रभुजी तुमरी छवि जात न मोपे कही ॥७॥

पुनश्च।

गई ग्रीषम ताप मिथ्यात तणी रितु शीतल सम्यक् आय रही।
तिह औसर ज्ञान घटा उमड़ी जिनवेन वृषा झर लाय पही ॥
सब भूलकी धूल दबी तिम ये हरिताई विरागसु छाई मही।
रट दादूर मोर पीयूष भवी तुमरी छवि जात न मोपे कही ॥८॥

प्रतिरोम हि लोचन क्यों न भये ? ।

तिसला जननी सजनी गण माही विराजत है जिन गोद लिये ।
सुखमा तन भूषणकी अधिकी रिख अमृत त्यों छवि पुंज छये ॥
लखि शोभित आनन रूप तबे सजनी गण यों अभिलाष किये ।
तुमरो छवि देखन को हमरे प्रति रोम हि लोचन क्यों न भये ? ॥९॥

पुनश्च ।

जनमें जिनदेव सुरेश मिली लेइ उत्सव काज सुमेर गये ।
तिह औसर चीर दधि जल लाय न्हवायत है जिन गोद लिये ॥
नखतें शिखलौं सब भूषण साज पियूष शची चख अंक किये ।
सुखमा निरखी कहे देव सबे प्रतिरोम हि लोचन क्यों न भये ? ॥१०॥

जल पात विना क्यों वधी लकरी ।

मुनि विष्णुकुमार बली छलिवे हित बावन रूप अनूप धरी ।
रहिवे हित श्रीपद भूमि मगी फिर लाख सुयोजन देह करी ॥
इम केत अमीरिख ता समये पद द्वे भरि लीध धरा सगरी ।
मुनिराज के लेष्टिका हाथ हती जल पात विना सो वधी लकरी ॥११॥

विधवा सिर कीध सुहाग कों टीको ।

वैधवता लही पाप उदे तउ नेक न चित्त धरे सुमती को ।
छोरि के लाज अकाज करे विषया वश होय तजी शुभ धीको ॥
अंबर भूपण साज सजी तन वेंधन प्राण चलो पर पीको ।
धिक् है धिक् है यों पियूष कहे विधवा सिर कीध सुहागको टीको ॥१२॥

पुनश्च ।

कुल कान कटा करिके कुलटा अधरामृत बूँद चटा पर पीको ।
ठारि अटा तन धारि छटा करि वंक कटाच्छ कटा जनहीको ॥
लाय वटा निज नेम घटा उलटा करि काज हटा सुमती को ।
हे धिक वेश पियूप गुणी विधवा सिर कीध सुहाग को टीको ॥१३॥

विधवा सिर सोहे सुहाग को टीको ।

ज्ञान-विराग जग्यो विधवा चित्त संपति सुख लख्यो जग फीको ।
चारित भाव पियूप गुनी गुरुणी पद धारण कीन मतीको ॥
संजम देवन उत्सव ठानत वेश सुहाग सज्यो शुभ नीको ।
ताहि समे लखि लेहु गुनी विधवा सिर सोहे सुहागको टीको ॥१४॥

जगमें सब ही जन स्वारथ के।

जब चाह हुए चित्त में कछु भी मुख मंजुल शब्द कहे कथ के।
नहीं औगुन जानि परे तिनके अति आदर देत कभू न थके॥
सरिये जब कारज रिख पियूष सो होत अरी परमारथ के।
तिन कारन संत कहे सुगना जगमें सबही जन स्वारथ के॥२१॥

धारत है तिनकी बलिहारी।

नाशक भर्म मिथ्यातम मूर जगे हिय सम्यक् भाव उजारी।
दायक द्रव्य पदारथ भेद भयानक कर्म रिपु क्षयकारी॥
जीव अनंत तिरे चित धार गये शिव मंदिर व्हे अविकारी।
केत अमीरिख धन्य जिनागम धारत हैं तिनकी बलिहारी॥२२॥

मिट जाय चउ गत आगत फेरी।

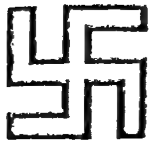
कामही काम कहा कहे मूरख काम है काल अनादिको वैरी।
भौ वन में भटकाय भ्रमाय दिये अति कष्ट व्यथा अधिकेरी॥
छोड़हू संग सुजान अमीरिख धारहि ये मुझ सीख भलेरी।
आतम ज्ञान विचार गुनी मिट जाय चउगत आगत फेरी॥२३॥

प्रमाण करी विपता हि टरी ।

हमरे चित्त श्री जिनधर्म बसे न गमे अनमत मिथ्यात अरी ।
परमेष्ठि सदा उर ध्यान धरे रुज संकट मेटन काम जरी ।।
उजरी चित लेश धरो हियमें यह सार सुधारस सीख भरी ।
गुरुदेव पियूष दिया यह ज्ञान प्रमाण करी विपता हि टरी ।।२४।।

तारक देव कहावत सोई ।

काम अज्ञान भयादिक दूषण जामें न पावत मूलही कोई ।
केवल दर्शन ज्ञान करी जिन द्रव्य स्वरूप रह्या सब जोई ।।
इन्द्र नरेन्द्र नमे सुरवृन्द जपे भवि सुख लहे अघ खोई ।
देव पियूष घने जगमें पर तारक देव कहावत सोई ।।२५।।



समाप्त

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

श्री जैनधर्म प्रसारक संस्था, सदर बाजार—नागपुर द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की सूची

नाम पुस्तक	मूल्य
श्री पञ्च परमेष्ठी वन्दना (हिन्दी)	)।
आत्मोन्नति चा सरल उपाय, (मराठी)	)|||
अन्यधर्मापेक्षा जैन धर्मांतील विशेषता ,,	)||
वैराग्य शतक, ,,	)|||
जैनदर्शन व जैनधर्म, ,,	)||
माझी भावना, ,,	)||
जैनधर्मा विषयीं अजैन विद्वानांचे अभिप्राय भाग १ ला, ,,	–)।
उपदेश रत्न कोष, ,,	=)
मराठी जैन पद्यावली, ,,	–)।
हिन्दी जैन पद्यावली (हिन्दी)	–)।

नाम पुस्तक	मूल्य
जैन धर्माचें अहिंसा तत्त्व (मराठी)	–)
अहिंसा, ,,	)|||
रत्नाकर पंचवीसी आणि उपदेश रत्नकोष, ,,	–)
पद्यात्मक वैराग्य शतक ,,	–)
मार्गानुसारीचे ३५ गुण, ,,	)|||
जैनधर्मा विषयी अजैन विद्वानांचे अभिप्राय, भाग २ रा, ,,	–)।
श्री महावीर सन्देश, ,,	)।
गजल गुलच्मन बहार, ,,	–)
श्री तिलोक ऋषिजी महाराज विरचित पन्न चित्रालंकार काव्य, (हिन्दी)	=)
ज्ञान कुञ्जर, ,,	=)
शीलरथ, ,,	–)

नाम पुस्तक	मूल्य
गुरु गुण महिमा, (मराठी)	–)।
श्राविका धर्म दर्पण, ,,	–)।
आलोयणा (आलोचना) (हिंदी)	–)||
श्री सामायिक सूत्र सार्थ, ,,	–)
श्री रत्न ऋषिजी महाराज का जीवन चरित्र, ,,	≡)||
अध्यात्म दशहरा, ,,	|≡)
तपस्वी पूज्य श्रीदेवजी ऋषिजी म.का जीवन चरित्र अर्द्धमूल्य ,,	≡)
श्री तिलोक ऋषिजी महाराज का जीवन चरित्र ,,	|–)
जीवन चरित्र सहित श्रीसत्यबोध,	२।)
श्री श्रेणिकचरित्र ,,	१)

पुस्तकें मिलने का पताः—

श्री रत्न जैन पुस्तकालय,

मु. पो. पाथर्डी (अहमदनगर)



मुद्रकः—

श्री जैनोदय प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम.